



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1191]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 4, 2014/ज्येष्ठ 14, 1936

No. 1191]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 4, 2014/JYAISTHA 14, 1936

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 4 जून, 2014

का.आ. 1437(अ). – विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 4(4) के अनुसार, दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, माननीय न्यायमूर्ति श्री राजीव शकधर, की अध्यक्षता में गठित अधिकरण, जिसको विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 4(1) के अंतर्गत यह न्यायनिर्णय करने संबंधी मामला भेजा गया था कि मणिपुर के मैतेई उग्रवादी संगठनों अर्थात् पीपल्स लिबरेशन आर्मी (पी एल ए), रिबोल्यूशनरी पीपल्स फ्रंट (आर पी एफ), यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट (यू एन एल एफ) और इसकी सशस्त्र विंग, मणिपुर पीपल्स आर्मी (एम पी ए), पीपल्स रिबोल्यूशनरी पार्टी ऑफ कांगलीपाक (पी आर ई पी ए के) और इसकी सशस्त्र विंग रेड आर्मी, कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (के सी पी) और इसकी सशस्त्र विंग, जिसे रेड आर्मी भी कहा जाता है, कांगली याओल कान्बा लुप (के वाई के एल), मणिपुर पीपल्स लिबरेशन फ्रंट (एम पी एल एफ) और कॉर्डिनेशन कमेटी [कॉरकॉम (घाटी आधारित छः भूमिगत संगठनों का समूह)] को उनके सभी गुटों, विंगों तथा अग्रणी संगठनों सहित विधिविरुद्ध संगम घोषित किए जाने के पर्याप्त कारण हैं या नहीं, के आदेश को आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है :

विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिकरण के समक्ष

के संदर्भ में :

दिनांक 13 नवम्बर, 2013 की अधिसूचना सं. 3440 (अ) के तहत मणिपुर के निम्नलिखित मैतेई उग्रवादी संगठनों, अर्थात्,

1. पीपल्स लिबरेशन आर्मी, जिसे सामान्यतः पी एल ए के नाम से जाना जाता है;
2. रिबोल्यूशनरी पीपल्स फ्रंट (आर पी एफ)-पी एल ए का राजनैतिक विंग;
3. यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट (यू एन एल एफ);
4. दि पीपल्स रिबोल्यूशनरी पार्टी ऑफ कांगलीपाक (पी आर ई पी ए के) और इसकी सशस्त्र विंग जिसे 'रेड आर्मी' कहा जाता है;
5. कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (के सी पी) और इसकी सशस्त्र विंग जिसे 'रेड आर्मी' भी कहा जाता है;
6. कांगली याओल कान्बा लुप (के वाई के एल);
7. कॉर्डिनेशन कमेटी (कॉरकॉम) – घाटी आधारित छः भूमिगत संगठनों का समूह; और
8. मणिपुर पीपल्स लिबरेशन फ्रंट (एम पी एल एफ)

को विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 का 37) की धारा 3 की उप-धारा (1) के अंतर्गत "विधिविरुद्ध संगम" घोषित किए जाने

और

दिनांक 6 दिसम्बर, 2013 की अधिसूचना सं. का.आ. 3592 (अ) के तहत गठित विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिकरण के मामले में।

कोरम :

माननीय श्री न्यायमूर्ति राजीव शकधर

उपस्थित :

श्री राजीव मेहरा, भारत के अपर सॉलिसिटर जनरल और साथ ही श्री सुमीत पुष्करण एवं श्री नीरज चौधरी, सी जी एस सी, श्री रवज्योत सिंह, श्री कार्तिकेय महाजन, श्री गौरव शर्मा, सुश्री श्रुति अग्रवाल, सुश्री सारा सुंदरम और श्री सुमित चन्द्र, भारत संघ के लिए वकील।

श्री सपम विस्वजीत मैतेई और सुश्री एन. कल्याणी देवी, मणिपुर राज्य के लिए वकील।

मैतेई उग्रवादी संगठनों के लिए कोई नहीं।

आदेश

12.05.2014

प्रारंभिक तथ्य

1. दिनांक 13.11.2013 की राजपत्र अधिसूचना सं. का.आ. 3440(अ) द्वारा, केन्द्रीय सरकार ने मैतेई उग्रवादी संगठनों और इसके विभिन्न घटकों अर्थात् पीपल्स लिबरेशन आर्मी, जिसे सामान्यतया पी एल ए, इसकी राजनैतिक विंग के रूप में जाना जाता है, रिबोल्यूशनरी पीपल्स फ्रंट (आर पी एफ), यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट (यू एन एल एफ), पीपल्स रिबोल्यूशनरी पार्टी ऑफ कांगलीपाक (पी आर ई पी ए के) और इसकी सशस्त्र विंग, "रेड आर्मी", कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (के सी पी) तथा इसकी सशस्त्र विंग, जिसे "रेड आर्मी" भी कहा जाता है, कांगली याओल कान्वा लुप (के वाई के एल), कॉरकॉम (घाटी आधारित छः भूमिगत संगठनों का समूह) तथा मणिपुर पीपल्स लिबरेशन फ्रंट (एम पी एल एफ) और उसके सभी गुटों, विंगों और अग्रणी संगठनों (जिन्हें यहां इसके बाद 'उग्रवादी संगठनों' के रूप में निर्दिष्ट किया गया है), को विधिविरुद्ध संगम घोषित किया।
- 1.1 केन्द्रीय सरकार ने विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (संक्षेप में, '1967 अधिनियम') की धारा 3(1) के उपबंधों के अंतर्गत उनको प्रदत्त शक्ति के अनुरूप दिनांक 13.11.2013 को अधिसूचना जारी की।
- 1.2 धारा 3 की उप-धारा (3) के परंतुक के अनुसार, केन्द्रीय सरकार ने दिनांक 13.11.2013 की अधिसूचना के तहत निदेश दिया कि उक्त अधिसूचना 1967 अधिनियम की धारा 4 के अंतर्गत किए जाने वाले किसी आदेश के अध्यक्षीन सरकारी राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रभावी होगी।
2. दिनांक 13.11.2013 की अधिसूचना में, केन्द्रीय सरकार ने कारण एकत्र किए हैं जिनके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों के क्रियाकलाप भारत की संप्रभुता एवं अखंडता के लिए हानिकारक हैं और इसलिए उनको विधिविरुद्ध संगम घोषित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय सरकार (उसी अधिसूचना में) ने भी राय व्यक्त की है कि यदि उग्रवादी संगठनों के क्रियाकलापों पर तुरंत काबू नहीं पाया गया और इनको नियंत्रित नहीं किया गया तो उक्त उग्रवादी संगठनों को ऐसे क्रियाकलाप करने का अवसर मिल जाएगा जो भारत के हित के प्रतिकूल होंगे।
- 2.1 इस प्रकार दिनांक 13.11.2013 की अधिसूचना में, उक्त उग्रवादी संगठनों के न केवल लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का संदर्भ है बल्कि उनके द्वारा किए गए विधिविरुद्ध एवं हिंसक क्रियाकलापों का भी उल्लेख है। उपर्युक्त अधिसूचना में उल्लेख किए गए लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्नवत हैं :
 - (i) उन्होंने भारत से मणिपुर राज्य को अलग करके एक स्वतंत्र मणिपुर के गठन के अपने लक्ष्य की खुली घोषणा की है;
 - (ii) वे उपर्युक्त उद्देश्यों को हासिल करने के लिए सशस्त्र साधनों का उपयोग करते रहे हैं;
 - (iii) वे मणिपुर में सुरक्षा बलों, पुलिस, सरकारी कर्मचारियों और कानून का अनुपालन करने वाले नागरिकों पर हमले करते रहे हैं;
 - (iv) वे अपने संगठन के लिए निधियां एकत्र करने के लिए सिविलियन लोगों को डराने-धमकाने, उनसे जबरन धन वसूली करने और लूटने के कार्य में लिप्त रहे हैं;
 - (v) वे जनता की राय को प्रभावित करने तथा अपने अलगाववादी प्रयोजन को हासिल करने के उद्देश्य से शस्त्र एवं प्रशिक्षण के रूप में सहायता प्राप्त करने हेतु विदेशी स्रोतों से संपर्क स्थापित करने के प्रयास करते रहे हैं; तथा
 - (vi) वे आश्रय, प्रशिक्षण तथा हथियारों एवं गोलाबारूदों के गुप्त रूप से प्रापण के उद्देश्य से पड़ोसी देशों में शिविर लगा रहे हैं।
- 2.2 इसी प्रकार, दिनांक 13.11.2013 की अधिसूचना में उल्लिखित विधिविरुद्ध एवं हिंसक क्रियाकलाप निम्नवत् हैं :
 - (i) वर्ष 2011 में 202, वर्ष 2012 में 401 तथा 31 अगस्त, 2013 तक 99 हिंसक घटनाओं में संलिप्तता;

- (ii) वर्ष 2011 में 14 व्यक्तियों (2 सुरक्षा बल कार्मिकों सहित), वर्ष 2012 में 16 व्यक्तियों (7 सुरक्षा बल कार्मिकों सहित), 31 अगस्त, 2013 तक 7 व्यक्तियों (4 सुरक्षा बल कार्मिकों सहित) की हत्या।
3. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, दिनांक 06.12.2013 की दूसरी राजपत्र अधिसूचना सं. का. आ. 3592 (अ) द्वारा केन्द्रीय सरकार ने इस बारे में न्यायनिर्णय करने के उद्देश्य से कि क्या उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों को विधिविरुद्ध संगम घोषित करने के लिए पर्याप्त कारण मौजूद हैं या नहीं, 1967 अधिनियम की धारा 5(1) के अंतर्गत अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए, विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिकरण (संक्षेप में 'अधिकरण') गठित किया।
4. इसके परिणामस्वरूप, सम्यक विचार के बाद, इस अधिकरण ने, दिनांक 19.12.2013 को आरंभिक सुनवाई की, जिसमें केन्द्रीय सरकार द्वारा रिकॉर्ड में रखी गई सामग्री पर विचार करने के बाद, उक्त उग्रवादी संगठनों को 1967 अधिनियम की धारा 4(2) के अंतर्गत 30 दिनों की अवधि के भीतर इस बारे में कारण बताने के लिए नोटिस जारी किया गया कि उनको विधिविरुद्ध संगम क्यों नहीं घोषित किया जाना चाहिए। 1967 अधिनियम की धारा 3(4) के अंतर्गत यथा अपेक्षित जारी किए गए नोटिस का सम्यक प्रचार-प्रसार किया गया था।
- 4.1 दिनांक 13.11.2013 की राजपत्र अधिसूचना को दो राष्ट्रीय समाचार-पत्रों (अखिल भारतीय अंकों) में भी प्रकाशित किया गया था, जिनमें से एक अंग्रेजी में था और दूसरा हिंदी में। उक्त अधिसूचना को उन राज्यों में व्यापक परिचालन वाले दो स्थानीय समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित किया गया था, जिनमें उक्त उग्रवादी संगठन सक्रिय थे। प्रचार सामग्री को चिपका कर और ड्रम बजाकर तथा लाउडस्पीकों द्वारा घोषणा करने के तरीके को भी अपनाया गया। घोषणा उन स्थानों पर की गई जहां ऐसा माना जाता है कि उग्रवादी संगठन सामान्यतया सक्रिय हैं।
- 4.2 दिनांक 13.11.2013 की राजपत्र अधिसूचना सहित अधिकरण द्वारा जारी नोटिस को राज्य के उन सभी जिला मुख्यालयों में उपायुक्त/जिला मजिस्ट्रेट/तहसीलदार के नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित किया गया जहां उग्रवादी संगठनों का सामान्यतया सक्रिय होना माना जाता है। आकाशवाणी और राज्य के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भी सहायता ली गई। प्राइम टाइम पर रेडियो/इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से उद्घोषणाएं की गईं।
- 4.3 नोटिस और दिनांक 13.11.2013 की राजपत्र अधिसूचना को एक बार फिर राज्यों में प्रमुख स्थानों पर चिपकाया गया जहां उग्रवादी संगठनों के सक्रिय होने का विश्वास था।
- 4.4 उपर्युक्त के अलावा, उसी दिन, मणिपुर राज्य को भी उसके मुख्य सचिव के माध्यम से नोटिस जारी किए गए।
- 4.5 अधिकरण से सम्बद्ध रजिस्ट्रार को उग्रवादी संगठनों को जारी नोटिस की तामीली का विनिर्दिष्ट तरीके से अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु निदेश दिया गया। रजिस्ट्रार को सुनवाई की अगली तारीख अर्थात् 27.01.2014 से पहले उस संबंध में एक स्वतंत्र रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निदेश दिया गया।
5. तदनुसार, भारत संघ और मणिपुर राज्य दोनों ने तामीली के शपथ-पत्र प्रस्तुत किए जिनमें यह पुष्टि की गई कि अधिकरण द्वारा यथा निदेशित तामीली कर दी गई थी। रजिस्ट्रार ने, दिनांक 27.01.2014 की अपनी रिपोर्ट के तहत अधिकरण द्वारा जारी नोटिस को तामील किए जाने की भी पुष्टि की।
6. इस अधिकरण ने इस बात से संतुष्ट होने के बाद कि विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) नियमावली, 1968 (संक्षेप में नियमावली) के नियम 6 तथा दिनांक 19.12.2013 के आदेश में निहित निदेशों के अनुसार उग्रवादी संगठनों तथा उनके प्रधान पदाधिकारियों को नोटिस तामील किया गया था और साथ ही इस तथ्य को देखते हुए कि उग्रवादी संगठनों द्वारा तथा उनकी ओर से कोई उपस्थित नहीं हुआ था, दिनांक 17.02.2014 के आदेश के तहत यह निर्णय दिया कि जांच एक-पक्षीय रूप से आगे बढ़ाई जा सकती है।
- 6.1 तथापि, दिनांक 13.11.2013 की अधिसूचना में उल्लिखित संबंधित विषयों, आरोपों और/या आधारों के समर्थन में अग्रणी साक्ष्य देने के लिए केन्द्रीय एवं राज्य दोनों सरकारों को अवसर प्रदान करने और केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा रिकॉर्ड में रखी सामग्री का खंडन करने के लिए उग्रवादी संगठनों को एक और अवसर प्रदान करने के लिए, उसी आदेश अर्थात् दिनांक 17.02.2014 के आदेश द्वारा केन्द्र और राज्य सरकारों के लिए उपस्थित होने वाले वकीलों की सम्यक सहमति से अगली कार्यवाहियां शिलांग में 05 और 06 मार्च, 2014 को की जानी निर्धारित की गईं।
7. तदनुसार, मणिपुर राज्य ने सात (7) गवाहों को तलब किया, जिन्होंने साक्ष्य के सोलह(16) शपथ-पत्र प्रस्तुत किए, जबकि केन्द्र सरकार ने एक (1) गवाह प्रस्तुत किया, जिसने दिनांक 07.02.2014 को एक शपथ-पत्र प्रस्तुत किया और उसके बाद दिनांक 31.03.2014 को एक अतिरिक्त शपथ-पत्र प्रस्तुत किया गया। गवाहों और उनके द्वारा प्रस्तुत शपथ-पत्रों का व्यौरा नीचे दिया गया है:-

मणिपुर राज्य के लिए

क्रम सं.	गवाह का नाम	शपथ-पत्र और उनकी तारीखों का व्यौरा
1.	श्री आर.के. खोमदोन सिंह, एसडीपीओ, पोरोम्पट, इम्फाल (पी डब्ल्यू-1)	(i) प्रदर्श पी डब्ल्यू-1ए/ए दिनांक 26.02.2014 (ii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-1बी/ए दिनांक 26.02.2014

		(iii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-1सी/ए दिनांक 26.02.2014 (iv) प्रदर्श पी डब्ल्यू-1डी/ए दिनांक 26.02.2014
2.	श्री ए. घनश्याम शर्मा, एस डी पी ओ, थौबल जिला (पी डब्ल्यू-3) एवं एस डी पी ओ, इम्फाल (पी डब्ल्यू-6)	(i) प्रदर्श पी डब्ल्यू-3/ए दिनांक 26.02.2014 (ii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-6ए/ए दिनांक 17.03.2014 (iii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-6ए/बी दिनांक 29.03.2014 (iv) प्रदर्श पी डब्ल्यू-6बी/ए दिनांक 17.03.2014
3.	श्री टी. लालबोई हाओकीप, एस डी पी ओ, काकचिंग (पी डब्ल्यू-4)	(i) प्रदर्श पी डब्ल्यू-4ए/ए दिनांक 26.02.2014 (ii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-4बी/ए दिनांक 26.02.2014 (iii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-4सी/ए दिनांक 26.02.2014
4.	श्री टीएच. विक्रमजीत सिंह, एस डी पी ओ, इम्फाल, इम्फाल पश्चिम जिला (पी डब्ल्यू-2)	(i) प्रदर्श पी डब्ल्यू-2ए/ए दिनांक 26.02.2014 (ii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-2बी/ए दिनांक 26.02.2014 (iii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-2सी/ए दिनांक 26.02.2014
5.	श्री के. मेघचन्द्र सिंह, एस डी पी ओ, यैरीपोक, थौबल जिला (पी डब्ल्यू-5)	(i) प्रदर्श पी डब्ल्यू-5/ए दिनांक 26.02.2014
6.	श्री थिंगम रामगोपाल सिंह, एस डी पी ओ, पोरोम्पट, इम्फाल पूर्वी जिला (पी डब्ल्यू-7)	(i) प्रदर्श पी डब्ल्यू-7/ए दिनांक 14.03.2014
7.	श्री रेहानुद्दीन चौधरी, उप सचिव (गृह) मणिपुर सरकार (पी डब्ल्यू-8)	(i) प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/ए दिनांक 04.02.2014

केन्द्रीय सरकार हेतु

क्र.सं.	गवाह का नाम	शपथ-पत्र और उनकी तारीखों का ब्यौरा
1.	श्री जी. श्रीधरन, उप सचिव (गृह), गृह मंत्रालय, भारत सरकार (पी डब्ल्यू-9)	(i) प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/ए दिनांक 17.02.2014 (ii) प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/बी दिनांक 31.03.2014

8. कथन को जारी रखते हुए, शिलांग में दिनांक 05.03.2014 को हुई सुनवाई में, मणिपुर राज्य के दो गवाहों को बयान देने के लिए प्रस्तुत किया गया। इनमें शामिल थे :- श्री आर.के. खोमदोन सिंह (पी डब्ल्यू-1) और श्री विक्रमजीत सिंह (पी डब्ल्यू-2)। इसी प्रकार दिनांक 06.03.2014 को तीन गवाहों नामतः श्री ए. घनश्याम शर्मा (पी डब्ल्यू-3), श्री टी. लालबोई हाओकिप (पी डब्ल्यू-4) तथा श्री के. मेघचन्द्र सिंह (पी डब्ल्यू-5) के बयान लिए गए।
9. दिनांक 06.03.2014 को, कार्यवाहियों को दिल्ली में किये जाने हेतु 12.03.2014 तक आस्थगित कर दिया गया। उक्त तारीख को, मणिपुर राज्य के वकील ने अधिकरण को सूचित किया कि उसे एक और गवाह नामतः श्री रेहानुद्दीन चौधरी ((पी डब्ल्यू-8) के बयान लेने की जरूरत है जिससे पूछताछ इम्फाल से बाहर, हालांकि उसके आसपास की जानी होगी क्योंकि स्थानीय प्रेस द्वारा प्रत्याशित प्रचार-प्रसार के कारण उसकी शारीरिक सुरक्षा के लिए खतरे की आशंका थी। तदनुसार, केन्द्र और राज्य सरकारों के वकीलों ने सुझाव दिया कि शेष गवाहों का साक्ष्य गंगटोक, सिक्किम में 04 एवं 05 अप्रैल को लिया जा सकता है।
10. इस स्थिति में, यह नोट करना महत्वपूर्ण होगा कि इस बीच की अवधि में अर्थात् 01.04.2014 को तीन शपथ-पत्रों, जिनमें से दो श्री ए. घनश्याम शर्मा (पी डब्ल्यू-6, जिससे पी डब्ल्यू-3 के रूप में भी पूछताछ की गई) और श्री थिंगम रामगोपाल सिंह (पी डब्ल्यू-7), द्वारा दायर किए गए, के रूप में मणिपुर राज्य द्वारा अतिरिक्त साक्ष्य प्रस्तुत किया गया। इन शपथ-पत्रों को ऊपर पैरा 7 में दर्शाए गए अनुसार प्रदर्श पी डब्ल्यू-6 ए/ए, प्रदर्श पी डब्ल्यू-6 बी/ए और प्रदर्श पी डब्ल्यू-7/ए के रूप में चिह्नित किया गया है। इसके अतिरिक्त, उसी दिन, भारत संघ की ओर से श्री जी. श्रीधरन (पी डब्ल्यू-9) द्वारा भी एक अतिरिक्त शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/बी) दायर किया गया।
11. जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है, 04.04.2014 को गंगटोक में, मणिपुर राज्य की ओर से निम्नलिखित गवाहों ने अपने साक्ष्य संबंधी शपथ-पत्र प्रस्तुत किए: श्री ए. घनश्याम शर्मा (पी डब्ल्यू-3/ पी डब्ल्यू-6) ने साक्ष्य संबंधी दो शपथ-पत्र प्रस्तुत किए जिन्हें पी डब्ल्यू-6/ए तथा पी डब्ल्यू-6बी/ए के रूप में चिह्नित किया गया है: श्री थिंगम रामगोपाल सिंह, (पी डब्ल्यू-7) ने साक्ष्य संबंधी अपना शपथ-पत्र प्रस्तुत किया जिसे पी डब्ल्यू-7/ए के रूप में अंकित किया गया है तथा श्री रेहानुद्दीन चौधरी (पी डब्ल्यू-8) ने भी अपना साक्ष्य संबंधी शपथ-पत्र प्रस्तुत किया जिसे प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/ए के रूप में अंकित किया गया है।

12. चूंकि अगली तारीख अर्थात् 05.04.2014 को, मणिपुर राज्य के अधिवक्ता ने यह बताया कि उनके द्वारा अन्य किसी गवाह से पूछताछ नहीं की जानी है, इसलिए मणिपुर राज्य की ओर से साक्ष्य को बंद कर दिया गया। जहां तक भारत संघ का संबंध था, इसका गवाह 05.04.2014 को अधिकरण के समक्ष उपस्थित नहीं हो सका; इसके परिणामस्वरूप, इस मामले को उसका साक्ष्य दर्ज करने के लिए 07.04.2014 तक आस्थगित कर दिया गया। चूंकि भारत संघ का गवाह 07.04.2014 को भी उपस्थित नहीं हो सका, इसलिए कार्यवाहियों को 16.04.2014 तक दिल्ली में किए जाने के लिए आस्थगित कर दिया गया। उक्त तारीख को, अर्थात् 16.04.2014 को, भारत संघ ने गवाह के रूप में श्री जी. श्रीधरन (पी डब्ल्यू-9) से पूछताछ की। तदनुसार, साक्ष्य संबंधी शपथ-पत्रों के रूप में उनके द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य को प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/ए तथा प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/बी के रूप में अंकित किया गया।
13. केवल यह नोट किया जा सकता है कि साक्ष्य संबंधी शपथ-पत्रों के रूप में अपने साक्ष्य प्रस्तुत करने वाले सभी गवाहों से शपथ दिलाकर पूछताछ की गई। गवाहों ने प्रदर्शों और चिह्नित दस्तावेजों सहित साक्ष्य के रूप में अपने-अपने शपथ-पत्रों को प्रस्तुत करते समय उनमें दर्शाए गए स्थानों पर अपने हस्ताक्षरों को स्वीकार किया। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि भारत संघ तथा मणिपुर राज्य दोनों के द्वारा इस अधिकरण के समक्ष प्रस्तुत किए गए उक्त गवाहों से जिरह करने के लिए उग्रवादी संगठनों द्वारा किसी भी रूप में कोई अभ्यावेदन नहीं दिया गया, इसलिए इस मामले में साक्ष्य को 16.04.2014 को बंद कर दिया गया। इस मामले में जिरह के लिए 17.04.2014 की तारीख निर्धारित की गई।
14. दिनांक 17.04.2014 को हुई सुनवाई में, भारत संघ की ओर से श्री सुमीत पुष्करन और श्री नीरज चौधरी, केन्द्रीय सरकार के सरकारी अधिवक्ताओं के साथ मिलकर श्री राजीव मेहरा, एडिशनल सॉलिस्टिटर जनरल ने तर्क दिए। मणिपुर राज्य की ओर से श्री सपम विश्वजीत मैतेई द्वारा तर्क रखे गए। भारत संघ और राज्य सरकार दोनों के विद्वान वकीलों ने दिनांक 13.11.2013 की अधिसूचना, उक्त उग्रवादी संगठनों को विधिविरुद्ध संगम घोषित करने के संबंध में लिए गए निर्णय का समर्थन करने हेतु प्रस्तुत साक्ष्य और सामग्री की विषय-वस्तु को आधार बनाया।
15. केन्द्र और राज्य सरकारों के विद्वान वकीलों को सुनने तथा रिकॉर्ड में प्रस्तुत साक्ष्य और सामग्री का अवलोकन करने के बाद मेरा यह मत है कि मेरे द्वारा आगे यह कार्रवाई करने से पूर्व मणिपुर राज्य और केन्द्र सरकार दोनों के द्वारा पूछताछ किए गए गवाहों के साक्ष्यों के रूप में मेरे समक्ष प्रस्तुत साक्ष्य का संक्षेप में उल्लेख करना आवश्यक होगा।

साक्ष्य

16. पी डब्ल्यू-1 ने अपने प्रथम (1) शपथ-पत्र (पी डब्ल्यू-1ए/ए) के तहत शपथपूर्वक यह उल्लेख किया कि 13 नवंबर, 2012 को प्रातः लगभग 5.00 बजे, 18 रेजीमेंट से एक सूचना प्राप्त हुई (जिसकी सी डी ओ/इम्फाल ईस्ट इंटेलीजेंस द्वारा पुष्टि की गई) कि आम जनता से जबरन धन वसूली जैसी प्रतिकूल गतिविधियों को अंजाम देने के उद्देश्य से वांगखेई पूजा लम्पाक क्षेत्र में तथा उसके आस-पास कुछ असामाजिक तत्व मौजूद हैं। तदनुसार, एक तलाशी अभियान चलाया गया और चाइरेन मायाई लीकाई के लीमापोकपाम लुपाजाओ मैतेई (47), पुत्र (एल) एल. कुला को प्रातः 6.30 बजे घटना स्थल से गिरफ्तार किया गया। उसने यह भी अभिसाक्ष्य दिया कि अभियुक्त से पूछताछ करने पर यह पता चला कि वह आर पी एफ/पी एल ए संगठन का सक्रिय सदस्य है; जिसमें वह आर पी एफ/पी एल ए का एस/एस परियोजना अधिकारी, नोंगपोकन्गांवा, की सहायता से सितम्बर, 2012 में शामिल हुआ था। पूछताछ से यह पता चला कि उसके पास मांग पत्र थे जो उसके द्वारा किराए पर लिए गए कमरे से मिले। स्पष्टतया, दस (10) मांग पत्र, जिनके ऊपर "ऑफिस ऑफ द सेक्रेटरी फाइनेंस, रिबोल्यूशनरी पीपल्स फ्रंट" लिखा था, किराए पर लिए गए उसके कमरे से उसी दिन प्रातः 8.30 बजे बरामद हुए तथा ज़ब्त किए गए। तदनुसार प्रदर्श पी डब्ल्यू-1ए/3 के रूप में ज़बती ज़ापन तैयार किया गया।
- 16.1 इस प्रकार, ए एस आई एन. राजू सिंह, कमांडो इम्फाल ईस्ट की दिनांक 13 नवंबर, 2012 की शिकायत/रिपोर्ट (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1ए/1) के आधार पर एस आई के. चन्द्रशेखर सिंह द्वारा उसी दिन 1967 अधिनियम की धारा 17/20 के तहत एफ आई आर संख्या 484 (11) 2012 पी आर टी- पी एस (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1ए/2) दर्ज की गई।
- 16.2 पी डब्ल्यू-1 ने अपने दूसरे शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1बी/ए) के तहत यह बताया कि 01 मार्च, 2012 को पूर्वाह्न लगभग 4.00 बजे विश्वनीय सूचना प्राप्त हुई कि कुछ कट्टर सशस्त्र भूमिगत तत्व, जिनके बारे में यह संदेह था कि वे घाटी आधारित भूमिगत सदस्य हैं, लामलांग, खुराई, चैरिंगथोंग क्षेत्रों के आस-पास इकट्ठे हो गए हैं, जिनका उद्देश्य जबरन धन वसूली करना तथा सुरक्षा बलों पर हमला करने और कांग्रेस कार्यकर्ताओं और मणिपुर की 10वीं विधानसभा के चुनाव, 2012 के प्रत्याशियों के निवास स्थानों पर आई ई डी लगाने के लिए सरकारी/निजी वाहनों का अपहरण करना था। तदनुसार, पॉपुलर हाई स्कूल के निकट खुराई में घेराबंदी की गई तथा तलाशी अभियान शुरू किया गया। इस अभियान में संदिग्ध रूप से घूम रहे दो अज्ञात युवकों को जांच के लिए रोक लिया गया जिस पर उन्होंने इपुम मापाल की दिशा में भागने का प्रयास किया। जबकि उनमें से एक को प्रातः लगभग 7.30 बजे पकड़ लिया गया, वहीं दूसरा भाग निकला।
- 16.3 घटनास्थल की जांच से, यह पता चला कि अभियुक्त कोई खोंगमान जोन-। का थोकचोम बुंग उर्फ मालेमंगांवा, पुत्र टीएच. ओपेन्द्रो था, जिसकी उम्र 21 वर्ष थी। अभियुक्त के पास से एक 9 एम एम की पिस्तौल तथा दो जिंदा कारतूस से भरी एक मैगज़ीन भी मिली। ये दोनों उसकी पेंट की दाई ओर की जेब से बरामद हुई। तदनुसार, हथियार और मैगज़ीन को ज़ब्त कर लिया गया। यह उल्लेख किया गया है कि तदनुसार एक ज़बती ज़ापन (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1बी/3) तैयार किया गया। अभियुक्त से पूछताछ करने पर यह पता चला कि वह यू एन एल एफ संगठन का सक्रिय सदस्य था जिसके वह किसी एस/एस एल/कॉरपोरल टाक्पा, जो एक मुठभेड़ में मारा गया, की सहायता से नवंबर, 2007 में शामिल हुआ था। जांच के दौरान इस बात का पता चला कि अभियुक्त, जिसने यू एन एल एफ के 34वें बैच के सर्विस नं. 2230 के अंतर्गत मिंधा, म्यांमार में बेसिक सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया था, आम जनता सरकारी अधिकारियों, व्यवसायियों से जबरन धन वसूली और शस्त्रों और गोलाबारूद को एक स्थान से दूसरे

- स्थान पर लाने ले जाने में शामिल था। इस प्रकार उप निरीक्षक के.एच. बोबोचा सिंह, पोरोपट पुलिस थाना द्वारा की गई दिनांक 1 मार्च, 2012 की रिपोर्ट/शिकायत (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1बी/1) के आधार पर निरीक्षक आर. के तेजवीर सिंह द्वारा उसी दिन 1967 अधिनियम की धारा 17 और 20 तथा शस्त्र अधिनियम, 1959 (संक्षिप्त में 'शस्त्र अधिनियम') की धारा 25 (आई-सी) के अंतर्गत एफ आई आर संख्या 71 (3) 2012 पी आर टी-पी एस (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1बी/2) दर्ज की गई।
- 16.4 पी डब्ल्यू-1 ने अपने तीसरे शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1सी/1) में यह बयान दिया है कि 30 सितम्बर, 2012 को लगभग सायं 5.30 बजे 28वीं ए आर से यह सूचना प्राप्त होने पर कि कुछ असामाजिक तत्व, जो पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) के महिला काडर/सदस्य थे, हट्टा क्षेत्र में तथा उसके आस-पास मौजूद थे, जिसकी सी डी ओ/आई ई आसूचना से मिली सूचना से पुष्टि हुई, एक तलाशी अभियान चलाया गया। इस तलाशी अभियान में दो संदिग्ध महिलाओं को जांच के लिए ओरिएंटल होटल के समीप निरुद्ध किया गया। इन दो संदिग्ध महिलाओं की शिनाख्त (i) निंगथोउजाम (एन) वाहेंगबाम (ओ) प्रमोदिनी देवी (30) और (ii) निंगथोउजाम (एन) लोरेमबाम (ओ) सुंदरी देवी उर्फ थोई लिंगजेलथोइवी उर्फ प्रिया (28) के रूप में की गई। ये दोनों अरोंग खुनाऊ अवांग लीकाई के एन. इबोम्चा सिंह की पुत्रियां थीं। पहली संदिग्ध महिला से निम्नलिखित सामग्री बरामद हुई: (i) चार (4) लैथोड शैल, (ii) एक (1) जिंदा हथगोला, (iii) 500 ग्राम पी ई के विस्फोटक, (iv) तारयुक्त एक (1) इलैक्ट्रॉनिक डेटोनेटर तथा (v) एयरटेल सिम कार्ड सहित एक मोबाइल फोन (लेमन-डी222)। जबकि दूसरी निरुद्ध महिला के पर्स से एक एयरटेल सिम कार्ड सहित एक मोबाइल फोन (नोकिया-एन1200) बरामद किया गया। दोनों संदिग्ध महिलाओं ने स्पष्ट रूप से यह बताया कि वे पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) की सक्रिय सदस्य थीं। दोनों निरुद्ध महिलाओं को घटनास्थल से अपराहन 6.30 बजे गिरफ्तार किया गया।
- 16.5 अभिसाक्षी ने यह भी बताया कि दोनों संदिग्ध महिलाओं से पूछताछ से यह पता चला कि वे दोनों जुलाई, 2012 माह में पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) संगठन में आई थीं और यह कि वे नोंगपोक सेकमई के एक किसी याइमा, पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) के एस/एस सैकेंड लेफ्टिनेंट, जो म्यांमार में था, की कमान में कार्य कर रही थीं। इन दोनों संदिग्ध महिलाओं ने स्पष्ट रूप से इस बात का भी खुलासा किया कि बरामद की गई उक्त सामग्री 09 अक्तूबर, 2012 को उनके स्थापना दिवस समारोह के संबंध में उक्त व्यक्ति याइमा के अनुदेश पर हट्टा क्षेत्र में लाई गई थी। अभिसाक्षी के अनुसार, उक्त संदिग्ध महिलाओं ने यह बताया कि उनके सहयोगी, अर्थात् यैरीपोक मालोम मानिंग लीकाई के खांगेमबाम रघुमणि मैतेई (55), पुत्र के.एच. अंगोउ सिंह, जो सुरक्षा बलों के संचलन के बारे में सूचना मुहैया कराता था, यैरीपोक मालोम में स्थित एक मकान में ठहरा हुआ था। तदनुसार, यह जोर देकर कहा गया है कि एक पुलिस टीम वहां भेजी गई तथा उक्त व्यक्ति को भी अपराहन 8.30 बजे दर्शाए गए स्थान पर गिरफ्तार कर लिया गया। तलाशी लेने पर उसके कब्जे से एक एयरटेल सिम कार्ड युक्त एक मोबाइल फोन (हाइटेक-एच टी आई 9) बरामद किया गया। इस व्यक्ति ने भी यह बताया कि वह पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) के साथ कार्य करता है। अतः यह दृढ़तापूर्वक कहा गया है कि उक्त व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया और बरामद किए गए सामान को गिरफ्तारी ज्ञापन और ज़बती ज्ञापन के साथ आवश्यक कार्रवाई (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1सी/1) के लिए प्रभारी अधिकारी, पोरोम्पट-पुलिस थाना को सौंप दिया गया। विस्फोटक पदार्थ अधिनियम, 1908 (संक्षेप में 'ई. एस. अधिनियम') की धारा 5 के साथ पठित 1967 अधिनियम की धारा 20 के अंतर्गत एफ आई आर संख्या 440 (10) 2012 पी आर टी-पी एस (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1सी/2), दर्ज की गई। अभिसाक्षी ने यह भी जोर देकर कहा कि उसने सी डी ओ/इम्फाल ईस्ट से संबद्ध 2 एम आर के जेम. ए. सुंदर सिंह से पूछताछ की। ज़बत किए गए सामान की पुनः ज़बती की गई और पुनः ज़बती ज्ञापन (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1सी/3) तैयार किया गया। अभियुक्तों को प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट, इम्फाल ईस्ट के समक्ष पेश किया गया जिसके बाद उनको 19.10.2012 तक रिमांड पर पुलिस हिरासत में भेज दिया गया।
- 16.6 यह भी उल्लेख किया गया कि निंगथोउजाम (एन) वाहेंगबाम (ओ) प्रमोदिनी देवी से पूछताछ के दौरान यह पता चला कि वह पी आर ई पी ए के (वी सी) संगठन की ओवर ग्राउंड सदस्य थी और वह संगठन में जून, 2012 में किसी श्री संजोक उर्फ मोरांबा की सहायता से आई थी। उसकी पूछताछ से यह स्पष्ट रूप से पता चला कि पी आर ई पी ए के (वी सी) की गतिविधियों में उसकी संलिप्तता के लिए उसे 25.07.2012 को गिरफ्तार कर लिया गया था और तदनुसार, अभियुक्त के रूप में उसका नाम शस्त्र अधिनियम की धारा 25 (आई-सी) के साथ पठित 1967 अधिनियम की धारा 17 और 20 के अंतर्गत दायर एफ आई आर संख्या 132 (7) 2012 के सी जी-पी एस में शामिल कर लिया गया।
- 16.7 अभिसाक्षी ने यह भी बयान दिया कि निंगथोउजाम (एन) वाहेंगबाम (ओ) प्रमोदिनी देवी को जमानत पर छोड़े जाने के बाद ही वह ऊपर बताए गए अनुसार जुलाई, 2012 में पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) संगठन में शामिल हुई।
- 16.8 इसी प्रकार अभिसाक्षी के अनुसार, दूसरी संदिग्ध महिला सुंदरी देवी पहले यू एन एल एफ संगठन की सक्रिय सदस्य थी जिसमें वह इस संगठन में वांगजिंग चोरापुर के एस. तोमचा, एस/एस सार्जेंट की मदद से शामिल हुई थी। सुंदरी देवी इस संगठन में जून-जुलाई, 2000 में शामिल हुई थी, जहां उसने छः माह तक बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया। सुंदरी देवी ने, स्पष्ट रूप से, सितम्बर, 2000 में आई जी आर दक्षिण मंत्रीपुखरी में आत्मसर्पण कर दिया। जैसाकि ऊपर बताया गया है, पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) में सुंदरी देवी जुलाई, 2012 में शामिल हुई थी।
- 16.9 इसी प्रकार, खांगेमबाम रघुमणि मैतेई ने बताया कि वह पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) का एक सक्रिय सदस्य था और यह कि उक्त संगठन में नोंगपोक सेकमाई आर ई के एस/एस लेफ्टिनेंट याइमा की सहायता से सितम्बर, 2012 में शामिल हुआ था। यह उल्लेख किया जाता है कि खांगेमबाम रघुमणि मैतेई ने यह खुलासा किया कि प्रमोदिनी देवी के कब्जे में पाई गई सामग्री/सामान

को उसने सौंप दिया था। अभिसाक्षी के अनुसार उसने यह भी बताया कि वह सुरक्षा बलों के आवागमन के बारे में एस/एस लेफ्टीनेंट यादमा को सूचना देने के लिए भी जिम्मेदार था।

17. चौथे (4) शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1) डी/ए में, अभिसाक्षी (पी डब्ल्यू-1) ने यह बयान दिया कि आम जनता से जबरन धन वसूली करने जैसी हानिकर गतिविधियों को अंजाम देने के उद्देश्य से दिनांक 28 अगस्त, 2012 को अपराहन लगभग 1.15 बजे बशीखोंग पंथोइवी बाजार क्षेत्र में तथा उसके आस-पास कुछ असामाजिक तत्वों की मौजूदगी की विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई थी। तदनुसार, उक्त क्षेत्र की तलाशी के लिए एक पुलिस पार्टी वहां भेजी गई। तलाशी के दौरान, बशीखोंग पंथोइवी बाजार का लाइफ्राकपाम चाओवा मैतेई उर्फ रवि नाम का एक व्यक्ति, उम्र 23 वर्ष पुत्र एल. सानातोम्बा, 2008 के 28 वें बैच की आर्मी सं. 70011 का के वाई के एल का एक पूर्व एस/एस प्राइवेट तथा पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) का सक्रिय सदस्य (जिसमें वह बशीखोंग पंथोइवी बाजार के मनिहर सिंह, उम्र 50 वर्ष, पुत्र एस थम्बालंगू सिंह के माध्यम से मई, 2012 में शामिल हुआ था) को निरुद्ध किया गया। उसकी तलाशी के दौरान उसके पास एक वोडाफोन सिम कार्ड वाला मोबाइल फोन (सैमसंग-एस एच जी-बी-200) मिला। ये सामान उसकी पतलून की दांयी जेब से मिला।
- 17.1 अभिसाक्षी ने जोर देकर कहा कि पूछताछ के दौरान, रवि ने यह बताया कि पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) में वह सोइवाम मनिहार सिंह की सहायता से अगस्त, 2012 में शामिल हुआ। उपर्युक्त को देखते हुए, रवि को 28.08.2012 को अपराहन 2.30 बजे गिरफ्तार कर लिया गया।
- 17.2 चूंकि अभियुक्त रवि ने यह खुलासा किया था कि उसके एक सहयोगी को उससे सिंग्जामेई सुपर मार्केट क्षेत्र में मिलना था, इसलिए उक्त सुपर मार्केट में पुलिस पार्टी भेजी गई। उक्त स्थान पर पहुंचने पर, अभियुक्त ने इरोम मेइजराव अवांग लीकाई के अपने सहयोगी किसी श्री युमनाम प्रेमकुमार सिंह, उम्र 28 वर्ष पुत्र वाई. शामू सिंह की ओर इशारा किया, जिसकी शिनाख्त किए जाने के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया और उसकी तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान किसी एस/एस मेज. एरी द्वारा विधिवत रूप से हस्ताक्षरित पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) के जबरन धन वसूली से संबंधित चार (4) नोट जो उसकी अंदर की बंडी के अंदर छिपा कर रखे गए थे तथा एयरटेल के सिम कार्ड वाला एक मोबाइल फोन (नोकिया-1202), जो उसकी पतलून की दांयी जेब में था, बरामद तथा जब्त किए गए। वाई. प्रेमकुमार सिंह से पूछताछ करने पर यह भी पता चला कि वह पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) का सक्रिय सदस्य था तथा वह इस संगठन में अगस्त, 2012 में कोंगमेन मंगजिल के किसी खाम्बा की सहायता से शामिल हुआ था। तदनुसार वाई. प्रेमकुमार सिंह को अपराहन 3.00 बजे गिरफ्तार कर लिया गया और परिणामस्वरूप ऊपर उल्लिखित सामान जब्त किया गया। उक्त गिरफ्तार व्यक्ति अर्थात्, अभियुक्त रवि और वाई. प्रेम कुमार सिंह को इरिलबंग पुलिस थाने के प्रभारी अधिकारी को सौंप दिया गया, जिसने 1967 अधिनियम की धारा 17 और 20 के अंतर्गत एफ आई आर सं. 117 (8) 2012 आई बी जी-पी एस (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1 डी/2) दर्ज की। इस प्रयोजन के लिए, हवलदार एम. सुरेश सिंह ने एक औपचारिक शिकायत (प्रदर्श पी डब्ल्यू-1 डी/1) तैयार की जो प्रभारी अधिकारी को संबोधित की गई थी।
18. पी डब्ल्यू-2 ने अपने पहले (1) शपथ-पत्र में यह बयान दिया कि 16 फरवरी, 2012 को अपराहन 10.00 बजे सी डी ओ/आई डब्ल्यू के उप निरीक्षक एल. हेमचंद्र सिंह ने ओ सी-इम्फाल पुलिस थाने में एक लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की कि उसी दिन अपराहन में लगभग 2.45 बजे प्राप्त हुई इस सूचना के आधार पर, कि हानिकर गतिविधियों को अंजाम देने के लिए के वाई के एल के कुछ सक्रिय सदस्य चिंगमीरोंग खोंगनांग अनीकारक में और उसके आस-पास मौजूद थे, उस क्षेत्र की तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान दो संदिग्धों को निरुद्ध किया गया जिनकी शिनाख्त (i) चाजिंग मायरेन्खोंग लीकाई के थौनाओजाम जितेन सिंह, उम्र 32 वर्ष, पुत्र श्री नीलमणि सिंह और (ii) के वाई के एल के किसी एस/एस फाइनेंस ऑफिसर लिप्ता उर्फ हरी के अधीन कार्यरत के वाई के एल के एक सक्रिय सदस्य चाजिंग मायरेन्खोंग के खैडेम नाओचा सिंह, उम्र 29 वर्ष पुत्र केएच. गोपाल सिंह के रूप में की गई।
- 18.1 यह बताया गया कि अभियुक्त जितेन ने, लिप्ता के निदेश के अनुसार करम सतरा सिंह, उम्र 36 वर्ष, पुत्र केएच. गोपाल सिंह के साथ मणिपुर राज्य की 10वीं विधान सभा के होने वाले चुनाव में हानिकर गतिविधियों को अंजाम देने के लिए जनवरी, 2012 के तीसरे सप्ताह में खुराई थांगजाम लीकाई से बिस्फोटकों सहित दो (2) 9 एम एम की पिस्टल जुटाई। तदनुसार, जितेन और खैडेम नाओचा सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। जितेन के कब्जे से दो सिम कार्डों सहित एक मोबाइल फोन नोकिया सी2-03 बरामद किया गया। जितेन से पूछताछ करने पर लिलोंग चाजिंग मायरेन्खोंग के किसी खैडेम राजेन सिंह, उम्र 59 वर्ष, पुत्र (एल) केएच. अनंघल की संलिप्तता का पता चला। उक्त व्यक्ति को प्रमाणिकता के साथ उसके निवास स्थान से गिरफ्तार कर लिया गया। तलाशी के दौरान निम्नलिखित वस्तुएं बरामद हुईं: (i) एक मैगजीन एवं 9 एम एम गोलाबारूद के आठ कारतूसों सहित माऊजर बी/सं. 90018828 मार्का वाली, 9 एम एम की एक (1) पिस्तौल; (ii) एक (1) मैगजीन सहित 9 एम एम की एक पिस्तौल जिस पर नोरिन्को बी/नं. 203202 लिखा था; तथा (iii) ए के गोलाबारूद के चौदह (14) जिन्दा कारतूस जिन्हें खैडेम राजेन सिंह द्वारा बनाया जा रहा था, बरामद करके जब्त किया गया। इम्फाल पुलिस थाने के थाना प्रभारी ने उपर्युक्त तीन व्यक्तियों के खिलाफ 1967 अधिनियम की धारा 16, 18 तथा 20 एवं शस्त्र अधिनियम की धारा 25 के तहत एफ आई आर सं. 112 (02) 12 आई पी एस (प्रदर्श पी डब्ल्यू-2 ए/2) दर्ज की।
- 18.2 यह भी बयान दिया गया कि पूर्व जांच अधिकारी ने मामले की पुनः जांच की तथा इसके पश्चात पहले जब्त की गई वस्तुओं को पुनः जब्त किया तथा एक पुनः ज़बती ज्ञापन (प्रदर्श पी डब्ल्यू-2 ए/1) तैयार किया।

- 18.3 यह भी बयान दिया गया कि उक्त तीन व्यक्तियों से पूछताछ पर पता चला कि वे प्रतिबंधित संगठन के वाई के एल के जमीनी (ओवर ग्राउंड) सदस्य थे जो ऊपर उल्लिखित कदम सतरा सिंह की कमांड में कार्य कर रहे थे और के वाई के एल कॉरकॉम (कॉर्डिनेशन कमेटी/घाटी आधारित भूमिगत समूहों का एक गुट है) का एक संघटक सदस्य है। उनसे पूछताछ के दौरान यह भी पता चला कि उन्हें मणिपुर राज्य में आयोजित 10वें राज्य विधान सभा चुनावों की प्रक्रिया को संगत समय पर नष्ट एवं बाधित करने का कार्य सौंपा गया था। इस लक्ष्य को कांग्रेस उम्मीदवारों एवं इसके कार्यकर्ताओं को निशाना बनाकर हासिल किया जाना था। पुनः यह बयान दिया गया कि जांच से पता चला था कि करम सतरा सिंह कांग्रेस उम्मीदवारों नामतः वैकॉम श्यामा देवी तथा उनके पार्टी कार्यकर्ताओं के निवास स्थानों पर हथगोले फेंकने में शामिल था। पुनः यह बयान दिया गया कि आतंकवाद को अंजाम देने के लिए करम सतरा सिंह पूर्वोक्त व्यक्तियों अर्थात् जितेन, केएच. राजेन सिंह तथा केएच. नाओचा सिंह के साथ षडयंत्र रचने में संलिप्त था।
- 18.4 प्रदर्श पी डब्ल्यू-2 ने अपने द्वितीय (2) शपथ-पत्र में यह बयान दिया कि उप निरीक्षक एन. जाटेश्वर सिंह, सी डी ओ/आई डब्ल्यू द्वारा दिनांक 03 फरवरी, 2012 को एक लिखित रिपोर्ट (प्रदर्श-पी डब्ल्यू-2बी/1) प्रस्तुत की गई जिसमें यह कहा गया कि (i) ओकराम अरविंद उर्फ हीराचंद्र उर्फ याइफाबा, उम्र 31 वर्ष, पुत्र लिलोंग चाजिंग के ओ सामुंगोऊ (ii) निंगोम्बाम अमरचंद, उम्र 31 वर्ष, पुत्र मोइरांग काम्पु माखा लीकाई के एन. सानाचाओबा को कोंजेंग लीथाई कीथेल माचा में इम्फाल वेस्ट कमांडो एवं 18वें सिक्ख संयुक्त घेराबंदी एवं तलाशी अभियान के दौरान गिरफ्तार किया गया। तलाशी के दौरान निम्नलिखित वस्तुएं बरामद हुईं: (i) डेटोनेटरों सहित दो (2) चाइनीज हथगोले, (ii) एक वोडाफोन एवं एक एयरसेल सिम कार्ड सहित एक लेमन मोबाइल हैंडसेट, (iii) एक बी एस एन एल सिम कार्ड वाला एक नोकिया मोबाइल हैंडसेट; और (iv) पंजीकरण सं. एम एन डी 431 वाला एक एल एम एल वेस्पा (गहरे नीले रंग का) स्कूटर। तदनुसार, 1967 अधिनियम की धारा 17 एवं 20 तथा ई एस अधिनियम की धारा 5 के तहत एक एफ आई आर सं. 65 (2)/2012 (प्रदर्श पी डब्ल्यू-2बी/2) दर्ज की गई। ऊपर उल्लिखित दो अभियुक्तों ने, पूछताछ के दौरान, बताया कि वे के सी पी (एम सी) ताबुंगबा समूह के सक्रिय सदस्य थे। ओकराम अरविंद ने बताया कि वह उक्त संगठन के प्रचार सचिव के रूप में कार्य कर रहा था; जबकि निंगोम्बाम अमरचंद ने खुलासा किया कि वह किसी एस/एस कमांडर सुशील उर्फ काका के अधीन काम कर रहा था।
- 18.5 अभिसाक्षी (पी डब्ल्यू-2) ने बयान दिया कि जांच के दौरान, उसने संबंधित पुलिस अधिकारी तथा अभियुक्त से पुनः पूछताछ करने एवं सिंगामेई पुलिस थाने के अंतर्गत दो गवाहों नामतः ए. किशोरजीत सिंह, सी/नं. 0901147 तथा लैशराम ओकेन्द्रों सिंह सी/नं. 0901216 की उपस्थिति में शिकायतकर्ता अर्थात् उप-निरीक्षक एन. जाटेश्वर सिंह द्वारा ज़ब्त वस्तुओं को पुनः ज़ब्त किया। उसने प्रश्नगत घटनास्थल का भी दौरा किया तथा घटनास्थल का एक कच्चा खाका तैयार किया गया। जिसके साथ उचित अनुक्रमणिका भी थी। तदनुसार पुनः ज़बती जापन भी तैयार किया गया, जिसे प्रदर्श पी डब्ल्यू-2 बी/3 के रूप में अंकित किया गया है।
- 18.6 अभियुक्त ओकराम अरविंद से पूछताछ के दौरान, यह पता चला कि वह के पी सी ताबुंगबा प्रेस नोट रिलीज विभिन्न स्थानीय समाचार पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को भेजने के लिए इंटरनेट का प्रयोग करता था। यह भी पता चला है कि उक्त अभियुक्त आतंकवादी संगठन में अपने वरिष्ठों के साथ संपर्क करने के लिए भी इंटरनेट का प्रयोग करता था। जिस तरीके से ओकराम अरविंद आदि के ईमेल ए-काउंट की जानकारी मेल की जाती थी, उसका अभिसाक्षी द्वारा उल्लेख किया गया है। एक विशिष्ट बयान यह दिया गया है कि उक्त अभियुक्त द्वारा भेजे गए ई-मेल का ब्यौरा दो स्वतंत्र गवाहों की मौजूदगी में बरामद किया जो कार्यकारी मजिस्ट्रेट के पद पर आसीन थे। विभिन्न समाचार पत्रों प्रसारण चैनलों तथा आतंकवादी संगठन अर्थात् के सी पी ताबुंगबा में अपने वरिष्ठों को अभियुक्त ओकराम अरविंद द्वारा भेजे गए ई-मेलों का उल्लेख अभिसाक्षी द्वारा किया गया है। ओकराम अरविंद द्वारा अपने आतंकवादी संगठन अर्थात् के सी पी ताबुंगबा की प्रेस रिलीज भेजने के लिए साइबर कैफे का प्रयोग करते हुए अपनाई जाने वाली कार्य प्रणाली का भी उल्लेख अभिसाक्षी द्वारा शपथ पत्र-में किया गया है। उन व्यक्तियों के नामों का उल्लेख शपथ-पत्र में किया गया है जिनके या तो स्वयं के साइबर कैफे थे अथवा जो उनमें काम करते थे। दिनांक 22.3.2012 को अभियुक्त ओकराम अरविंद की शिनाख्त परेड कराई गई जब अपने आतंकवादी संगठन की प्रेस रिलीज भेजने के लिए उक्त अभियुक्त द्वारा प्रयोग किए गए साइबर कैफे के मालिकों तथा उनमें कार्य करने वाले सहायकों द्वारा उसकी पहचान की गई। इस तथ्य कि गवाहों ने शिनाख्त परेड में अभियुक्त ओकराम अरविंद की शिनाख्त कर ली थी का भी अभिसाक्षी द्वारा उल्लेख किया गया है। अभियुक्तों की शिनाख्त करने वाले तीन अभियुक्तों का ब्यौरा नीचे दिया गया है।
- (1) श्री माइबाम अम्बा (28), पुत्र माइबाम अमुथोई सिंह, क्वाकीथेल अखम लीकाई, पश्चिमी इम्फाल; ग्लोबल लिंक, पाओना बाजार में सहायक के रूप में कार्यरत।
- (2) श्री खुमनथेम राँकी (29), पुत्र (एल.) केएच. लीखम, उरीपोक खोइसनाम, लीकाई, पश्चिमी इम्फाल जिला, सिटी साइबर, पाओना बाजार के मालिक।
- (3) श्री हिडंगमायुम देवाकिशोर शर्मा (39), पुत्र (एल.) एच. नूतनचन्द्र शर्मा, ब्रह्मपुर नाहाबम भामन लीकाई, पूर्वी इम्फाल जिला; सिंगामेई साइबर कैफे का मालिक।
- 18.7 यह जोर देकर कहा गया है कि ज़ब्त किए गए ई-मेलों, विशेष तौर पर, दिनांक 20.11.2010 के ई-मेल से स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि के सी पी संगठन तथा विशेषकर अभियुक्तों को भारत सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। दिनांक 20.11.2010 का ई-मेल, जो संपादकों तथा स्थानीय समाचार प्रसारण एजेंसियों के समाचार संपादकों को संबोधित है,

उत्तेजना पूर्ण ढंग से मणिपुर राज्य के लोगों को हिंसक साधनों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए उकसाता है। प्रेस में प्रयुक्त सही अभिव्यक्ति, जैसा कि शपथ-पत्र में उल्लेख किया गया है, यह है "स्वतंत्रता बंदूक की नोक से हासिल होती है" है।

- 18.8 अपने तीसरे (3) शपथ-पत्र में, पी डब्ल्यू-2 ने यह जोर देकर कहा है कि दिनांक 16 अक्टूबर, 2012 को इस विश्वसनीय सूचना के आधार पर कि लांगजिंग के सामान्य क्षेत्र में प्रतिबंधित गुट के काडरों की आवाजाही थी; 18 सित्त के दल द्वारा एक तलाशी अभियान चलाया गया। इस अभियान के दौरान यह हुआ है कि निलो ऑयल पम्प, लांगजिंग के नजदीक सुबह 11.40 बजे एक संदिग्ध व्यक्ति को निरुद्ध किया गया। निरुद्ध व्यक्ति की स्वयंभू सेकेंड लेफ्टीनेंट चानम धनंजय, उम्र 33 वर्ष उर्फ अली, पुत्र चानम इंगोचा, निवासी थाम्बलखोंग कोंग्वा लैशराम लीकाई, पूर्वी इम्फाल के रूप में की गई। निरुद्ध व्यक्ति की निजी तलाशी लिए जाने पर, निम्नलिखित सामग्री बरामद की गई: (i) मैगजीन के साथ 9 एम एम पिस्तौल, (ii) 9 एम एम के चार (4) जिंदा कारतूस, (iii) 3 सिम कार्डों के साथ एक लेमन मोबाइल और (iv) एक पर्स जिसमें 1400/- ₹., ड्राइविंग लाइसेंस तथा वोटर आई डी कार्ड थे।
- 18.9 आगे यह भी कहा गया है कि, पूछताछ के दौरान, उक्त अभियुक्त ने यह उजागर किया कि उसको वर्ष 1999 में यांगचिंग, पूर्वी नागालैंड में प्रशिक्षण दिया गया, और यह कि वह 17वें बैच का हिस्सा था जिसमें 128 व्यक्ति थे तथा उसको भूमिगत संगठन द्वारा बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण दिया गया था। अभिसाक्षी के अनुसार, उक्त अभियुक्त को एक संख्या: आर्मी नम्बर 1095 दिया गया था। स्पष्ट रूप से, उक्त अभियुक्त एक स्वयंभू तोम्बा, जी एस ओ-1, यू एन एल एफ के पाटलोलू कैम्प के संस्थान के अधीन यू एन एल एफ की आसूचना विंग में कार्यरत था। उसका कार्य स्पष्टतया सुरक्षा बलों की आवाजाही तथा इम्फाल क्षेत्र में उनकी अवस्थिति के बारे में सूचना एकत्र करना तथा भेजना था। आई ई डी लगाने में भूमिगत संगठन की सहायता करना इस प्रकार की गतिविधियों के प्रयोजनों में से एक था। अभियुक्त ने यह भी खुलासा किया कि उसने दिनांक 05.09.2002 को कीशामपट जंक्शन पर आई ई डी की अवस्थिति निश्चित करने में भूमिका निभाई थी, जिसके कारण हुए विस्फोट में दो सेना के कार्मिक जखमी हो गए थे। अभिसाक्षी के अनुसार, उक्त अभियुक्त ने यह भी उजागर किया कि वह अपने संगठन यू एन एल एफ के लिए व्यक्तियों को भर्ती करने में शामिल था। तदनुसार, उक्त अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया और शस्त्र अधिनियम की धारा 25 (1-ग) के साथ पठित 1967 अधिनियम की धारा 16 एवं 20 के तहत पटसोई पुलिस स्टेशन में एफ आई आर सं. 86(10) 2012 (प्रदर्श. पी डब्ल्यू-2सी/1) दर्ज की गई।
- 18.10 इसी प्रकार के अन्य मामले में, अभिसाक्षी के जांच अधिकारी होने के नाते, उन्होंने शिकायतकर्ता और अभियुक्त की पुनः जांच की और तत्पश्चात ज़ब्त की गई वस्तुओं को दोबारा कब्जे में लिया गया। तदनुसार, एक पुनः जब्ती ज़ापन (प्रदर्श. पी. डब्ल्यू-2सी/2) तैयार किया गया।
19. अभियुक्त को स्पष्ट रूप से दो पूर्ववर्ती अवसरों पर गिरफ्तार किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप उसके खिलाफ निम्नलिखित दो प्राथमिकियां दर्ज की गईं: 1967 अधिनियम की धारा 10 और 13 के तहत प्राथमिकी सं. 64 (3) 2002 एम आर जी पी एस तथा प्राथमिकी सं. 297 (11) 03 आई पी एस। दूसरे मामले में, उक्त अभियुक्त को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम, 1980 के तहत निरुद्ध करके एक केन्द्रीय कारागार में रखा गया था। तथापि, अभियुक्त को फरवरी, 2005 में उसकी अवधि समाप्त होने के पश्चात रिहा कर दिया गया। जुलाई, 2005 के अंतिम सप्ताह में वह दोबारा यू एन एल एफ में शामिल हो गया। पांच महीनों के लिए अभियुक्त खुले रूप से नाम्फालोंग, म्यांमार में रहा। अभियुक्त यू एन एल एफ में कॉरपोरल रैंक से ऊपर उठकर नवंबर, 2009 में सार्जेंट मेजर बन गया। यह कहा गया है कि मई, 2012 में अभियुक्त ने हानिकर गतिविधियों को अंजाम देने के लिए आईजोल से इम्फाल में प्रवेश किया था जिनमें से एक घटना में, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, के परिणामस्वरूप कीशामपट जंक्शन पर रखे गए आई ई डी का दिनांक 5.09.2012 को विस्फोट हुआ था।
20. अपने प्रथम (1) शपथ-पत्र में पी डब्ल्यू-3 ने यह अभिसाक्ष्य दिया है कि दिनांक 20.09.2012 को, एच. मनियार सिंह, हवलदार सं. 0307786 कमांड जी-64, सी डी ओ यूनिट, थौबल की रिपोर्ट/शिकायत (प्रदर्श. पी डब्ल्यू-3/1) के आधार पर, निरीक्षक वाई.जाँय कुमार सिंह के द्वारा 1967 अधिनियम की धारा 18 (ख)/20 के तहत प्राथमिकी सं. 163(09) 012 के सी जी पी एस दर्ज की गई। उसने यह भी अभिसाक्ष्य दिया है कि इस विशिष्ट सूचना के आधार पर कि कुछ कतिपय प्रतिबंधित भूमिगत गुटों के लिए बाल सैनिक के रूप में भर्ती करने के लिए कुछ बच्चों को पाल्लेल से होकर मोरेह ले जाया जा रहा है; तदनुसार, सुबह 9 बजे के आसपास पुलिस स्टेशन जांच चौकी के नजदीक पाल्लेल बाजार में घेराबंदी तथा तलाशी अभियान चलाया गया। तलाशी अभियान के दौरान, तीन संदिग्धों को निरुद्ध किया गया; एक पुरुष तथा दो महिलाएं। संदिग्धों के साथ एक लड़का था; जिसकी उम्र सोलह (16) वर्ष थी। पुरुष की पहचान फैरेन्बाम जीतेन सिंह, उम्र 40 वर्ष, पुत्र फै. मनिचोऊ सिंह, वांगू नाओदाखोंग के रूप में की गई; जबकि दो महिलाओं की पहचान फैरेन्बाम (ओ) तबाबी देवी उर्फ निंगबोई माते, उम्र 38 वर्ष, वांगू नाओदाखोंग तथा लामशी गुईते, उम्र 30 वर्ष, पुत्री (एल) गामजांग गुईते, चूडाचांदपुर तुईबोंग लाईजोन वेंग के रूप में पहचान की गई। अभियुक्त फैरेन्बाम जीतेन सिंह ने यह संकेत दिया कि फैरेन्बाम (ओ) तबाबी देवी उसकी पत्नी थी, जबकि लामशी गुईते उसकी पत्नी की चचेरी बहन थी। अभिसाक्षी के अनुसार, उक्त लड़के ने मोईरांग इथिंग के मोईरांगथेम अबुंग सिंह, पुत्र (एल) एम.सामजई सिंह तथा एम (ओ) बीना देवी के रूप में अपनी पहचान बताई। बच्चे को बगैर उसकी जानकारी के स्पष्ट रूप से उस प्रतिबंधित भूमिगत गुट कॉरकॉम को सौंपने के उद्देश्य से मोरेह ले जाया जा रहा था, जो पी एल ए, यू एन एल एफ, के वाई के एल, के सी पी, पी आर ई पी ए के, पी आर ई पी ए के पी आर ओ तथा यू पी पी के का घटक है। इस कारोबार को मोरेह के श्री बोबो के माध्यम से पूरा किया जाना था, जो कॉरकॉम का सदस्य तथा कार्यकर्ता था। गवाही से यह उजागर हुआ है कि मोरेह का बोबो बाल सैनिकों के प्रापण में कॉरकॉम की सहायता करता था। अभियुक्त फैरेन्बाम जीतेन सिंह तथा उसके दो सहयोगियों द्वारा डी टी ओ चूडाचांदपुर से उक्त बच्चे के नाम पर जारी करवाया गया दिनांक 19.09.2012 का जाली ड्राइविंग लाइसेंस

ज़ब्त किया गया। तदनुसार, तीन अभियुक्त निरुद्ध किए गए तथा ऊपर उल्लिखित प्राथमिकी दर्ज की गई। पूर्व जांच अधिकारी द्वारा जांच के दौरान, पुलिस अधिकारियों तथा अभियुक्तों की सम्यक जांच के पश्चात, ड्राइविंग लाइसेंस तथा ज़बती ज़ापन को पुनः ज़ब्त किया गया। एक पुनः ज़बती ज़ापन (प्रदर्श पी डब्ल्यू-3/3) तैयार किया गया। नाबलिंग को श्री ए. बिजॉय सिंह, सदस्य, बाल कल्याण समिति, थौबल को सौंप दिया गया जिसने सम्यक औपचारिकताओं को पूरा करने के उपरांत उसके परिजनों को उक्त बच्चे की अभिरक्षा सौंप दी। यह भी प्रमाणित किया गया है कि डी टी ओ चूड़ाचांदपुर की जांच की गई तथा दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (संक्षेप में, 'संहिता') की धारा 161 के तहत उसका बयान दर्ज किया गया। उसकी जांच से यह उजागर हुआ कि ऊपर उल्लिखित नाबलिंग के नाम पर एक जाली ड्राइविंग लाइसेंस सं. 15156/सी एच बनाया गया था। यह भी प्रकाश में आया है कि चिकित्सा प्रमाण-पत्र एवं रिहायशी और जन्म प्रमाण-पत्र के साथ-साथ लाइसेंस भी जाली था। तदनुसार, अभिसाक्षी ने जोर देकर कहा कि जांचें पूरी की जा चुकी हैं, अपराध न केवल 1967 अधिनियम की धारा 38 के साथ पठित धारा 18-ख के तहत हुआ, अपितु भारतीय दंड संहिता, 1860 (संक्षेप में, 'भा.द.सं.') की धारा 420, 468 और 511 के तहत भी हुआ था।

21. यह नोट करना उपयुक्त है कि श्री ए.घनश्याम शर्मा, एस डी पी ओ, थौबल जिला, का उल्लेख पी डब्ल्यू-3 के रूप में किए जाने के अतिरिक्त, पी डब्ल्यू-6 के रूप में भी किया गया है। पी डब्ल्यू-6 के रूप में उन्होंने तीन शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-6ए/ए दिनांक 17.03.2014, प्रदर्श पी डब्ल्यू-6ए/बी दिनांक 29.03.2014 और पी डब्ल्यू-6 बी/ए दिनांक 17.03.2014) प्रस्तुत किए हैं। ये तीन शपथ-पत्र दिनांक 01.04.2014 के आदेश के तहत न्यायालय द्वारा रिकॉर्ड में लिए गए थे।
22. इस प्रकार पी डब्ल्यू-6 ने अभिसाक्ष्य दिया कि दिनांक 13.09.2013 को, लगभग 7.25 बजे अपराहन में नागमपाल फोउगेइशांग्वाम लीकई (जो कि सिम्पलैक्स प्रोजेक्ट लिमिटेड, कोलकाता के मजदूरों के लिए शरणस्थली के रूप में प्रयोग होता है) के नजदीक नागा नुल्लाह के कवर स्लेब पर स्थित कच्चा बैरक के अन्दर शक्तिशाली बम विस्फोट हुआ, जिसमें कई मजदूर बुरी तरह घायल हो गए। चूंकि, यह संदेह था कि यह कृत्य बड़ी संख्या लोगों को डराने के लिए घाटी आधारित उग्रवादी संगठन द्वारा किया गया था, अज्ञात अभियुक्तों के विरुद्ध सिटी पुलिस थाने द्वारा स्वतः भारतीय दंड संहिता की धारा 121, 121-ए, 326, 307 और 34, ई एस अधिनियम की धारा 3 तथा 1967 अधिनियम की धारा 16 एवं 20 के तहत एफ आई आर सं. 261(09) 2013 (प्रदर्श पी डब्ल्यू 6 ए/2) दर्ज की गई थी। उन्होंने आगे अभिसाक्ष्य दिया कि जांच के दौरान, विधि-विज्ञान प्रयोगशाला (एफ एस एल), पांगेई के विशेषज्ञों की सहायता से निम्नलिखित वस्तुएं मौके से प्राप्त हुईं तथा ज़ब्त की गईं, और ज़बती ज़ापन प्रदर्श पी डब्ल्यू-6ए/3 तैयार किया गया:-

- (i) एक लीवर जिस पर के 31 एफ यू जैड ई ई सी-84 के 810-025 एक्स-आर अंकित था, को पैक करके एस 1 के रूप में किया।
- (ii) धातु के डिब्बे के टुकड़ों को पैक किया और एस 2 के रूप में अंकित किया।
- (iii) गट्टे के चारों तरफ से एकत्रित धातु के टुकड़ों को पैक किया और इन सबको एस 3 के रूप में अंकित किया।
- (iv) डिब्बे के धात्विक अंशों को पैक किया और एस 4 के रूप में अंकित किया।
- (v) गट्टे से मलबा पैक करके एस 5 के रूप में अंकित किया।
- (vi) पूर्वी दिशा में स्थित कमरे के बगल से एकत्रित धात्विक अंशों को पैक किया और सबको एक साथ एस 6 एवं एस 7 के रूप में अंकित किया।
- (vii) 20.4 मीटर की दूरी पर गट्टे की दक्षिणी दिशा से एकत्रित नियंत्रण मिट्टी के नमूने को पैक करके 'सी' के रूप में अंकित किया।

अपराध स्थल से उपर्युक्त ज़ब्त वस्तुओं को जांच के लिए सी एफ एल, चंडीगढ़ भेजा गया।

- 22.1 पी डब्ल्यू-6 द्वारा आगे यह अभिसाक्ष्य दिया गया कि विस्फोट में सब मिलाकर बीस (20) व्यक्ति घायल हुए जिनमें से, कुल नौ (9) मजदूरों की चोटों के कारण जानें चली गईं- आठ (8) की आर आई एम एस अस्पताल में तथा एक (1) की शीज़ा अस्पताल में। सभी मृत व्यक्तियों का पोस्टमार्टम करने के बाद, उनके शवों को उनके मूल राज्य अर्थात् असम में भेज दिया गया।
- 22.2 पी डब्ल्यू-6 ने पुनः जोर देकर कहा कि जांच के दौरान, स्रोत रिपोर्टों से यह पता चला कि अपराध किसी जयंता के निर्देशों के अधीन आर पी ए/पी एल ए के कांडरों द्वारा किया गया था। दिनांक 24.02.2014 को दी टेलीग्राफ, अंग्रेजी दैनिक समाचार-पत्र में 'मीट हेट क्राइम स्पेशलिस्ट' शीर्षक के अंतर्गत यह प्रकाशित हुआ था कि उक्त अपराध के बाई के एल से संबंधित किसी डब्ल्यू. जयंता सिंह उर्फ लाकपा उर्फ दिलीप द्वारा किया गया था। स्थानीय दैनिक समाचार-पत्र के मणिपुरी संस्करण में भी 25.02.2014 को यही विवरण प्रकाशित हुआ था। यह निश्चयपूर्वक बताया जाता है कि जांच से यह खुलासा हुआ है कि अपराध कॉर्रकॉम कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया था।
- 22.3 पी डब्ल्यू-6 ने दिनांक 29.03.2014 के साक्ष्य से संबंधित अतिरिक्त शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-6ए/बी) के द्वारा भी, 04.04.2014 को कुछ तथ्यों को रिकॉर्ड में प्रस्तुत किया गया है, जिनका उल्लेख अनजाने में उनके दिनांक 17.03.2014 के पूर्व शपथ-पत्र में नहीं किया गया था। उन्होंने खुलासा किया कि जांच के दौरान, पोरोम्पट पुलिस स्टेशन से दिनांक 13.01.2014 के ज़ापन सं. 1/4/पी आर टी-पी एस/2014 के तहत एक संदेश प्राप्त हुआ था कि अभियुक्त नामतः सानासाम रबी सिंह उर्फ सूरज, उम्र 28 वर्ष, पुत्र एस. लोकेन सिंह, पिशुम ओइनम लीकई, डाकघर एवं पुलिस थाना सिंग्जामेई, इम्फाल पश्चिम जिला, मणिपुर (जो पी आर ई पी ए के (पी आर ओ) का एक सक्रिय सदस्य है, एफ आई आर सं. 10(01) 2013 पी आर टी पुलिस थाना के संबंध में गिरफ्तार हुआ और उसके बाद पोरोम्पट पुलिस थाने में हिरासत में रखा गया), वर्तमान मामले में शामिल था।

अभियुक्त को वर्तमान मामले के संबंध में 15.01.2014 को औपचारिक रूप से गिरफ्तार किया गया। इसके अतिरिक्त, अभियुक्त को पुनः भा.द.सं. की धारा 307/427, ई पी सी के तहत एक अन्य मामले में इम्फाल पुलिस थाने की एफ आई आर सं. 176(03)2012 के तहत औपचारिक रूप से गिरफ्तार किया गया।

23. पी डब्ल्यू-6 द्वारा दिए गए अंतिम शपथ-पत्र में, उन्होंने अभिसाक्ष्य दिया कि दिनांक 29.10.2013 को सुबह 6.00 बजे के लगभग, भैरोंदान मैक्सवेल हिन्दी प्राइमरी एवं हाई स्कूल, थांगल बाजार, इम्फाल की दक्षिणी दिशा में एक शक्तिशाली बम, जिसके आई ई डी होने का संदेह था, विस्फोट में पांच (5) व्यक्ति घायल हो गए थे और स्कूल तथा कक्षा के कमरे की दक्षिणी दीवार भी क्षतिग्रस्त हो गई थी। यह संदेह था कि यह घाटी आधारित उग्रवादी संगठनों द्वारा रखा गया था और निशाना बनाया गया था। इस प्रकार, अज्ञात अभियुक्तों के विरुद्ध भा.द.सं. की धारा 307/326/427, ई एस अधिनियम की धारा 3 और 1967 अधिनियम की धारा 16(1) एवं 20 के तहत एफ आई आर सं. 285 (10) 2013 (प्रदर्श पी डब्ल्यू-6 बी/2) सिटी पुलिस थाने द्वारा स्वतः दर्ज की गई थी। तैयार की गई रिपोर्ट/शिकायत की प्रमाणित प्रति प्रदर्श पी डब्ल्यू-6 बी/1 के रूप में अंकित है। जांच के दौरान, यह भी पता चला कि पंजीकरण सं. एम एन 01 एक्स 7223 की वाली चिह्नित एक नीली मारुति वैन तथा पंजीकरण सं. एम एन 06 एल 5318 का वाला एक सफेद टाटा मैजिक वाहन भी विस्फोट में क्षतिग्रस्त हुआ था। एफ एस एल पांगोई के विशेषज्ञों की सहायता से, मौके से निम्नलिखित वस्तुएं एकत्रित और ज़ब्त की गईं और एक ज़बती ज़ापन (प्रदर्श पी डब्ल्यू-6बी/3) तैयार किया गया:-

- (i) गट्टे से मिट्टी का नमूना।
- (ii) गट्टे से धातु का टुकड़ा।
- (iii) विस्फोट स्थल से धातु की बॉल तथा टुकड़े।
- (iv) गट्टे से प्लास्टिक की तार के टुकड़े।
- (v) पूर्वोत्तर दिशा से नियंत्रित मिट्टी के नमूने।
- (vi) दीवार के टुकड़े।
- (vii) गट्टे के नजदीक से खून के धब्बों से एकत्रित किए गए खून के नमूने।
- (viii) कंट्रोल कॉटन सेम्पल।

उपर्युक्त ज़ब्त की गई वस्तुएं/नमूने विशेषज्ञों की राय के लिए पहले ही सी एफ एस एल, चंडीगढ़ भेज दिए गए हैं।

- 23.1 पी डब्ल्यू-6 ने आगे अभिसाक्ष्य दिया कि मामले की जांच से अब तक यह खुलासा हुआ है कि अपराध कॉर्रकॉम के कार्यकर्ताओं द्वारा आम लोगों मुख्यतः गैर-मणिपुरी और क्षेत्र में तैनात सुरक्षा कार्मिकों को डराने के उद्देश्य से किया गया था।
24. पी डब्ल्यू-4 ने अपने प्रथम (1) शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-4ए/ए) में अभिसाक्ष्य दिया कि दिनांक 06.10.2012 को 11.45 बजे अपराहन में, तीसरी आई आर बी के एल थांगमिनलेन खोंगसाई, हवलदार सं. 012007245 ने सूचित किया कि लगभग 10.00 बजे शाम को, वैथाऊ सामान्य क्षेत्र में भूमिगत काडरों की उपस्थिति के बारे में सूचना के आधार पर, 28वीं असम राइफल्स एवं सी डी ओ/टी बी एल के संयुक्त दल ने एक अभियान चलाया, क्षेत्र की घेराबंदी की और संदिग्ध हालात में घूमते हुए एक व्यक्ति को पकड़ा, जांच करने पर जिसकी पहचान मो.बासेई तोम्बा उर्फ कीना, उम्र 19 वर्ष पुत्र मो. तायाई, निवासी लिलोंग उशोइपोक्पी थोंगमाखा, जी पी कॉर्रकॉम (यू पी पी के) के रूप में हुई। उक्त अभियुक्त ने खुलासा किया कि उसे दिनांक 9.10.2012 को पी आर ई पी ए के आगामी गठन दिवस के दृष्टिगत सुरक्षा बलों पर हमला करने के लिए भेजा गया था। अभिसाक्षी ने जोर देते हुए आगे बताया कि तलाशी के दौरान निम्नलिखित वस्तुएं बरामद की गईं: (i) एक (1) 9 एम एम की पिस्तौल (ii) एक (1) मैगजीन (iii) चार (4) 9 एम एम के जिंदा कारतूस (iv) लगभग 750 ग्राम विस्फोटक छर्रे के साथ, (v) एक (1) इलेक्ट्रिकल डेटोनेटर (vi) एक (1) मोबाइल हैंडसेट। अभिसाक्षी ने आगे जोर देकर कहा कि उन्होंने मामले का जांच अधिकारी होने के नाते शिकायतकर्ता एल.थांगमिनलेन खोंगसाई, हवलदार की दोबारा जांच की; गवाहों की उपस्थिति में ज़ब्त की गई मर्दों की दोबारा ज़बती की गई और अलग से उनके बयान लिए गए। इस बात को भी निश्चयपूर्वक कहा गया है कि उनके द्वारा घटनास्थल की जांच की गई थी और उचित तालिका सहित एक कच्चा खाका तैयार किया गया था। तदनुसार, उन्होंने एक पुनः ज़बती ज़ापन तैयार किया, जिसको प्रदर्श पी डब्ल्यू-4ए/3 के रूप में अंकित किया गया है।
- 24.1 उन्होंने आगे कहा कि पूछताछ करने पर अभियुक्त ने खुलासा किया कि वह मो. इथोई, उम्र 40 वर्ष, संगोमशांग की सहायता से अक्टूबर, 2011 में प्रतिबंधित गुट यू पी पी के में शामिल हुआ था; उसने टाका, म्यांमार में 20 दिन का बेसिक सैन्य प्रशिक्षण लिया था; उसे आर्मी सं. 192 आर्बटि की गई थी; और ऊपर उल्लिखित गुट के लिए निधियां एकत्र करने हेतु जबरन धन वसूली के अतिरिक्त सुरक्षा बलों पर हमला करने के निर्देश के साथ थौबल में स्थानांतरित कर दिया गया था। अभिसाक्षी ने कहा कि अभियुक्त ने यह भी खुलासा किया कि दिनांक 06.10.2012 की शाम लगभग 6.30 बजे, जब वह वैथाऊ क्षेत्र में विस्फोटकों का प्रयोग करके सुरक्षा बलों पर आक्रमण की योजना बना रहा था, तभी उसे गिरफ्तार कर लिया गया। इस प्रकार, उपर्युक्त शिकायत/रिपोर्ट (प्रदर्श पी डब्ल्यू-4ए/1) के आधार पर दिनांक 06.10.2012 को निरीक्षक मो. चाओबा द्वारा स्वतः उसी दिन 1967 अधिनियम की धारा 17/20, शस्त्र अधिनियम की धारा 25 (1-सी) तथा ई एस अधिनियम की धारा 5 के तहत एफ आई आर सं. 103 (10) 2012 एल आई एल-पी एस (प्रदर्श पी डब्ल्यू 4-ए/2) दर्ज की गई।
25. अपने दूसरे शपथ-पत्र में, पी डब्ल्यू-4 ने यह कहा है कि दिनांक 22.11.2012 की एक विशिष्ट सूचना, कि के वाई के एल का एक कार्यकर्ता अपने घर में मौजूद है, पर कार्रवाई करते हुए ओ सी-सी डी ओ-टी बी एल की कमान के तहत, सी डी ओ/टी बी एल तथा 15 वीं असम राइफल्स की एक सम्मिलित टीम ने एक व्यक्ति के घर पर छापा मारा, जिसकी बाद में निंगथाऊजाम

निगोबी सिंह, उम्र-45 वर्ष पुत्र (एल) एन. छोजोन सिंह जो बांगजिंग होडाम्बा मानिंग लीकाई के रहने वाले हैं, के रूप में पहचान हुई। यह उल्लेख किया जाता है कि उक्त अभियुक्त ने यह खुलासा किया कि वह के वाई के एल का एक सक्रिय काडर है और के वाई के एल के स्वयंभू उप वित्त सचिव इंग्वा की कमान के अधीन कार्य करता है। तदनुसार, उसे 2.55 बजे अपराहन में गिरफ्तार कर लिया गया था।

- 25.1 इसके अतिरिक्त यह भी सुस्पष्ट किया जाता है कि उसके खुलासे पर निम्नलिखित वस्तुएं बरामद की गईं: (i) मैगजीन में लोड किए हुए 9 एम एम बारूद के तीन (3) जिंदा कारतूस सहित एक 9 एम एम की पिस्तौल, (ii) एक (1) चीनी हथगोला (iii) उप वित्त सचिव द्वारा हस्ताक्षरित एवं थौबल जिले के विभिन्न व्यक्तियों को संबोधित के वाई के एल के बारह (12) मांग पत्र जो उनकी बैठक के कक्ष में रखे सोफे के एक हत्थे के अन्दर छिपाकर रखे हुए पाए गए (iv) सैमसंग का एक मोबाइल हैंडसेट तथा सिमकार्ड सं. 9615074418 जिन्हें ज्वत किया गया। उक्त अभियुक्त ने आगे यह खुलासा किया कि वह बांगजिंग होडाम्बा मानिंग लीकाई के रहने वाले (एल) आर. के. सनाहल सिंह, जो स्वयं भी के वाई के एल के एक कार्यकर्ता हैं, के पुत्र आर. के. मोबिसाना सिंह उर्फ लोकेन, उम्र 35 वर्ष के साथ मिलकर बांगजिंग के आस-पास तथा थौबल जिले के अन्य स्थानों पर स्थित दुकानों और कारोबारी स्थापनाओं से के वाई के एल के लिए धन की उगाही करने में संलिप्त रहा है। उक्त अभियुक्त ने आगे यह भी खुलासा किया कि हाल में भी 1967 अधिनियम की धारा 17/20 के तहत प्राथमिकी सं. 103 (7) 2010 के संदर्भ में उसके घर से उसकी गिरफ्तारी की गई थी, लेकिन वह जमानत पर छूट गया था। उक्त अभियुक्त ने यह भी खुलासा किया कि दिनांक 21.11.2012 को अपराहन लगभग 4.00 बजे उक्त व्यक्ति अर्थात् मोबिसाना ने उसे एक मोबाइल फोन और कार्बन पेपर में लिपटा हुआ एक चीनी हथगोला दिया और बताया कि कुछ व्यक्ति हथगोले की सुपुर्दगी के लिए उससे संपर्क करेंगे। हालांकि, दिनांक 22.11.2012 को लगभग 9.45 बजे प्रातः उसे उक्त सामग्रियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया।
- 25.2 पी डब्ल्यू-4 ने आगे जोर देकर कहा कि दिनांक 29.11.2012 को ऊपर संदर्भित मामले में दो व्यक्तियों, नामतः (i) खंगाबोक लामलॉंग के रहने वाले ई. मांगीजाव सिंह के पुत्र इलांगबाम श्यामकन्हार्ई, उर्फ कन्हार्ई सिंह, उम्र 38 वर्ष तथा (ii) बांगू मामांग सवाई लीकाई के रहने वाले वाई.अपावी सिंह, के पुत्र येन्द्रम्बाम राजेन कुमार उर्फ राजेन, उम्र 39 वर्ष को औपचारिक रूप से गिरफ्तार किया गया था। पूछताछ के दौरान, प्रथम व्यक्ति ने खुलासा किया कि अक्टूबर, 2012 में, बांगू के रहने वाले श्री हरी की मदद से उसने के वाई के एल के जमीनी कार्यकर्ता के रूप में कार्य करना आरंभ किया और उसके निदेशानुसार दिनांक 22.11.2012 को उसने काकचिंग लामखाई के लिए प्रस्थान किया लेकिन 2.00 बजे अपराहन के लगभग उसे गिरफ्तार कर लिया गया।
- 25.3 पूछताछ के दौरान, दूसरे व्यक्ति राजेन ने खुलासा किया कि उसने बांगू के रहने वाले स्वयंभू उदोई उर्फ हरी के अधीन धन उगाहने के लिए मांग पत्रों (डिमांड लैटर्स) की सुपुर्दगी तथा हथियार एवं गोलाबारूद लाने-ले जाने के कार्य से शुरुआत करके अक्टूबर/नवम्बर, 2012 से के वाई के एल के लिए कार्य करना आरंभ किया। दिनांक 22.11.2012 को, उक्त श्री उदोई उर्फ हरी के निदेशानुसार उसकी ओर से कुछ धन और वस्तुओं के संग्रहण हेतु लगभग 11.00 बजे पूर्वाहन में वह काकचिंग को जाने वाली मैजिक वैन में बैठा लेकिन काकचिंग लामखाई पहुंचते ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया।
- 25.4 पी डब्ल्यू-4 ने यह भी उल्लेख किया कि सभी अभियुक्तों ने उनके विरुद्ध लगाए गए आरोपों को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि वे परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से के वाई के एल की अवैध वस्तुओं/मदों को लाने-ले जाने में संलिप्त हैं और यहां तक कि उन्होंने के वाई के एल काडरों की अवैध गतिविधियों के लिए धन की उगाही की।
- 25.5 पी डब्ल्यू-4 ने आगे कहा कि उसी दिन तीसरी इंडियन रिजर्व बटालियन के हवलदार एस. सुरेश सिंह, सं. 13200412 जो अब सी डी ओ-टी वी एल से संबद्ध हैं, के द्वारा प्रस्तुत की गई दिनांक 22.11.2012 की रिपोर्ट/शिकायत के आधार पर 1967 अधिनियम की धारा 17/20, शस्त्र अधिनियम की धारा 25 (आई-सी) तथा ई एस अधिनियम की धारा 5 के तहत उप निरीक्षक मो. कमरुद्दीन द्वारा उसी दिन प्राथमिकी सं. 398 (11) 2012 टी वी एल-पी एस (प्रदर्श-पी डब्ल्यू-4 बी/1) पंजीकृत की गई थी।
26. पी डब्ल्यू-4 ने अपने अंतिम शपथ-पत्र में यह उल्लेख किया है कि दिनांक 08.10.2012 को, इस संबंध में यह विशिष्ट सूचना मिलने पर कि महिला काडरों सहित पी एल ए/आर पी एफ के कुछ काडर द्वेषपूर्ण गतिविधियों जैसे-आई ई डी विस्फोट करने, मौका देखकर सुरक्षा बलों पर गोलियां चलाने तथा गोलियां आदि चलाकर आम जनता को भयभीत करके घर से बाहर न निकलने देने के लिए थौबल बाजार क्षेत्र में तथा इसके आस-पास घूम रहे हैं, घेराबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया था। इस अभियान के दौरान यह पाया गया कि थौबल बाजार की ओर एक पुरुष और एक महिला संदेहास्पद ढंग से इधर-उधर घूम रहे हैं। टीम द्वारा सत्यापन के लिए उन्हें रोका गया, इस टीम में महिला पुलिस अधिकारी भी शामिल थी। तलाशी लेने पर, उक्त पुरुष द्वारा साथ लिए जा रहे हरे रंग के पोलीथीन बैग में निम्नलिखित वस्तुएं बरामद की गई थीं: (i) अखबार में लिपटा हुआ एक (1) आई ई डी तथा लगभग 5 किलो वजन का एक पारदर्शी सेलो टेप, (ii) एक (1) सीलबंद एल्कालाइन बैटरी पैक जिस पर सन्यो (6 एल पी 22/9वी) अंकित था, (iii) एक (1) बूस्टर जो अच्छी तरह से काले टेप से सीलबंद किया हुआ था, (iv) एक (1) दूधिया रंग का सफेद रिमोट कंट्रोल जिस पर आर एस अंकित था तथा स्टील का एंटीना लगा था और (v) दो (2) इलेक्ट्रॉनिक डेटोनेटर जिन्हें एक काली रंग की धातु के पाइप के अन्दर घुसाया गया था। रोके गए व्यक्ति की पहचान हीरोक भाग-III थोंकचोम लीकाई के रहने वाले ठा. शेंजय सिंह के पुत्र थोंकचोम साम्बी उर्फ खाम्बा उर्फ जैक, उम्र 29 वर्ष के रूप में की

- गई थी। महिला पुलिस अधिकारी द्वारा उक्त महिला के नारंगी रंग के हैंडबैग की तलाशी लेने पर, उसमें निम्नलिखित वस्तुएं बरामद की गईं: (i) एक (1) हथगोला, (ii) बैटरी सहित एक नोकिया मोबाइल हैंडसेट जिसका नं. 7230 था तथा एक एयरटेल का सिम कार्ड जिसका नं. 8413982134 था, और (iii) एक मतदाता पत्र। उक्त रोकी गई महिला की पहचान लाइलॉग चाजिंग चिंगखांग लीकाई के रहने वाले (एल) एम. धामू सिंह की पत्नी मायेंगबाम (एन) निन्गथौजाम (ओ) मेमाचा देवी उर्फ ओमिता उर्फ थोइवी, उम्र 33 वर्ष के रूप में की गई। दोनों अभियुक्तों को घटनास्थल पर 1.20 बजे अपराह्न में गिरफ्तार किया गया था और ऊपर उल्लिखित बरामद वस्तुओं को ज़ब्त कर लिया गया था।
- 26.1 पी डब्ल्यू-4 ने आगे यह भी उल्लेख किया कि, सत्यापन करने पर उन्होंने यह खुलासा किया कि उक्त दोनों ही सिंगजामेई क्षेत्री लीकाई के रहने वाले मयंगलामबाम नानाव, जो कि पी एल ए/आर पी एफ का एक आई ई डी विशेषज्ञ है, की कमान के तहत कार्य कर रहे थे। मेमाचा देवी ने यह खुलासा किया कि: उक्त मायांगलामबाम नानाव द्वारा लिलांग बाजार में दिनांक 07.10.2012 को उसे यह आई ई डी हस्तगत किया गया था। थोकचोम साम्बी ने खुलासा किया कि: वह पी एल ए/आर पी एफ का एक सक्रिय दुर्दांत सदस्य है; उसने 2009 के 99 वें बैच की आर्मी सं. 1832 के तहत टन्नाल (बर्मा) में बेसिक प्रशिक्षण प्राप्त किया था; 116 सीमा सुरक्षा बल बटालियन के गश्ती दल के विरुद्ध हीरोक पार्ट-III। तोमल माखोंग में दिनांक 14.09.2012 को 4.20 अपराह्न में जो आई ई डी विस्फोट/हमला हुआ था, उसे मेमाचा देवी के साथ मिलकर उसने अंजाम दिया था। दोनों ही अभियुक्तों ने उन पर लगाए गए आरोपों को स्वीकार कर लिया था।
- 26.2 उक्त अभिसाक्षी ने आगे यह भी उल्लेख किया कि अभियुक्त थोकचोम साम्बी से पूछताछ के दौरान यह खुलासा हुआ कि उसने वैरीपोक मालोम मामांग लीकाई के रहने वाले किसी के. सोमो सिंह उर्फ इबोचाऊ, जो कि पी एल ए का तत्कालीन स्वयंभू कारपोरल था, की मदद से नवम्बर, 1999 में पी एल ए में शामिल हुआ; देल्हा, म्यांमार में 16 महिला काडरों सहित 116 नए सदस्यों के साथ 45 दिनों तक बेसिक सैन्य प्रशिक्षण लिया तथा उसे आर्मी नं. 1919 आबंटित हुआ था। उसने यह भी खुलासा किया कि पूर्व में उसे दिनांक 10.02.2002 को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन अप्रैल, 2002 में जमानत पर छोड़ दिया गया। इसके बाद वह हीरोक पार्ट-III के थोम्बा सिंह उर्फ याइमा उर्फ चाओबा के माध्यम से उक्त मायांगलामबाम नानाव और मेमाचा देवी के बारे में जानकारी हासिल की, जिसने इन दोनों को 25.09.2012 को आयोजित होने वाले पी एल ए के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर थौबल क्षेत्र में अवसर पाकर आई ई डी विस्फोट करने तथा सुरक्षा बलों पर हमला करने के लिए, निदेशित किया था। इस प्रयोजन के लिए, उन्हें आई ई डी में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्रियों और डेटोनेटर दिए गए और मेमाचा देवी को इसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए निदेशित किया गया; और चूंकि 08.10.2012 को लगभग 7.30 बजे प्रातः उक्त मायांगलामबाम नानाव ने मोबाइल के जरिए उन्हें थौबल बाजार से विस्फोटक लेने के निदेश दिए थे, अतः वह उक्त स्थान के लिए चल पड़ा, जहां उसे गिरफ्तार कर लिया गया।
- 26.3 पी डब्ल्यू-4 ने यह भी जोर देकर कहा कि अभियुक्त मेमाचा देवी से की गई पूछताछ के दौरान, उसने यह उजागर किया कि वह उक्त मायांगलामबाम नानाव के माध्यम से अगस्त, 2002 में पी एल ए में भर्ती हुई थी; उक्त संगठन में शामिल होने के बाद वह थोम्बा सिंह के संपर्क में आई, जिसने उसे अपने साथियों के साथ दिनांक 25.09.2012 को पी एल ए के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आई ई डी विस्फोट करने तथा सुरक्षा बलों पर गोली चलाने के अनुदेश दिया था। उसे आई ई डी में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए भी निदेशित किया गया था। उसने स्वीकार किया कि उसने ऊपर उल्लिखित हीरोक पार्ट-III में एक आई ई डी के विस्फोट में हिस्सा लिया था, जिसमें एक सीमा सुरक्षा बल का जवान घायल हो गया था। उसने आगे खुलासा किया कि दिनांक 08.10.2012 को उसने उक्त मायांगलामबाम नानाव से उसके कब्जे में रखी गई सामग्री संग्रहीत की थी और निदेशानुसार उसे थोकचोम साम्बी को सौंपने के लिए वह थौबल बाजार आयी थी, लेकिन उसे गिरफ्तार कर लिया गया था।
- 26.4 5वीं एम आर के हवलदार नं. 05076579 एम. धनजीत सिंह, जो इस समय सी डी ओ-टी बी एल से संबद्ध हैं, के द्वारा प्रस्तुत दिनांक 08.10.2012 की रिपोर्ट/शिकायत (प्रदर्श-पी डब्ल्यू-4सी/1) प्राप्त होने पर, उसी दिन उप निरीक्षक मो. कमरुद्दीन द्वारा 1967 अधिनियम की धारा 20 तथा ई एस अधिनियम की धारा 5 के तहत प्राथमिकी सं. 364 (10) 2012 टी बी एल-पी एस (प्रदर्श-पी डब्ल्यू 4-सी/2) दर्ज की गई। अभिसाक्षी ने यह भी उजागर किया कि जांच अधिकारी के रूप में, उन्होंने दो अभियुक्तों सहित शिकायतकर्ता एम.धनजीत सिंह की जांच की और उन्होंने अभिसाक्षियों की उपस्थिति में पूर्वोक्त ज़ब्त वस्तुओं की पुनः ज़बती की। यह भी स्पष्ट किया गया कि पुनः ज़बती जापन को प्रदर्श-पी डब्ल्यू-4 सी/3 के रूप में तैयार किया गया।
27. पी डब्ल्यू-5 ने अपने शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू 5/ए) में जोर देकर कहा कि दिनांक 15.05.2012 को, ऊंचाई वाले चिंगथा/लामलाई के सामान्य क्षेत्र में के सी पी (के.के. नगैम्बा) की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर एक तलाशी अभियान चलाया गया था और इसके परिणामस्वरूप, एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया था। उसकी तलाशी लेने पर निम्नांकित सामान की बरामदगी हुई: (i) एक (1) 9 एम एम पिस्तौल, (ii) एक (1) मैगजीन और (iii) तीन (3) जिन्दा कारतूस। सत्यापन के बाद उसकी पहचान के.एच. पुंशी मैतेई, रैंक-एरिया फाइनेंस सेक्रेटरी, पुत्र (एल) निनथौरेन, निवासी-चिंगथा/लामलाई, डाकघर व थाना-वैरिपोक, जिला-इम्फाल पूर्वी के रूप में की गई है।
- 27.1 अभियुक्ति ने खुलासा किया है कि वह वर्ष 2008 में के सी पी में शामिल हुआ और रंजीत थापा (जो उसका छोटा भाई है और के सी पी का एक महत्वपूर्ण सदस्य है और नेपाल में रह रहा है) के अधीन जबरन धन वसूली की गतिविधियों को अंजाम देने के लिए काम करता था। अभिसाक्षी ने दृढ़तापूर्वक कहा कि अभियुक्त ने खुलासा किया था कि उपर्युक्त ज़ब्त किया गया सामान फरवरी, 2012 में के सी पी के किसी अज्ञात सदस्य द्वारा उसे सौंपा गया था, जिसे उसके भाई श्री रंजीत मैतेई उर्फ रंजीत थापा

- द्वारा भेजा गया था। तदनुसार, तब से यह अभियुक्त थौबाल जिले में और आस-पास के क्षेत्र में आम जनता, सरकारी कर्मचारियों, सरकारी कार्यालयों, व्यवसायियों आदि से जबरन धन वसूली कर रहा है। इस तरह जबरन वसूली से प्राप्त धनराशि मणिपुर राज्य को स्वतंत्र बनाने के उद्देश्य से विधि-सम्मत तरीके से स्थापित सरकार के खिलाफ युद्ध करने के लिए के सी पी के सदस्यों के प्रयोग के लिए हथियार और गोलाबारूद के प्रापण हेतु उपयोग की जाने वाली निधि के रूप में उसके छोटे भाई रंजीत थापा को भेजी जाती थी। अभिसाक्षी ने जोर देकर कहा कि अभियुक्त ने इंगित किया कि वह 15.05.2012 को 3.45 बजे अपराहन में टॉप चिंगथा/लामलाई में अपनी गिरफ्तारी से पहले तक इसी प्रकार की गतिविधियों को अंजाम देता रहा था।
- 27.2 पी डब्ल्यू-5 द्वारा आगे यह अभिसाक्ष्य दिया गया कि आगे जांच के दौरान, अभियुक्त के कथन के आधार पर दिनांक 20.05.2012 को, एयरटेल सिम कार्ड सं. 9862844424 के साथ एक मोबाइल हैंडसेट ज़ब्त किया गया था जिस पर KZG U 505 अंकित था। पी डब्ल्यू-5 ने यह भी अभिसाक्ष्य दिया है कि अभियुक्त ने उसके खिलाफ लगाए गए आरोपों को पूरी तरह से स्वीकार किया था।
- 27.3 सूबेदार जसवीर सिंह जे. सी. सं. 153468, 15 असम राइफल मार्फत 99 ए पी ओ की दिनांक 15.05.2012 की रिपोर्ट (प्रदर्श पी डब्ल्यू-5/1 के आधार पर 1967 अधिनियम की धारा 17/20 के अंतर्गत एफ आई आर सं. 76(5)12 बाई पी के-पी एस (प्रदर्श पी डब्ल्यू-5/2) दर्ज की गई और उसी तारीख को निरीक्षक पी.रणवीर सिंह द्वारा शस्त्र अधिनियम की धारा 25 के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई। अभिसाक्षी ने कहा कि उसने, इस मामले में जांच अधिकारी होने के नाते मूल शिकायतकर्ता और अभियुक्तों दोनों की जांच की है। आगे यह भी कहा है कि उसने ज़ब्त की गई मदों और ज़बती सूची को पुनः कब्जे में लिया और उसके उपरांत पुनः ज़बती ज़ापन (प्रदर्श पी डब्ल्यू-5/3) तैयार किया। अभिसाक्षी ने यह भी कहा कि उसने भी घटनास्थल का दौरा किया था तथापि, उस स्टॉप पर अपराध में संलिप्तता संबंधी किसी प्रकार का सामान प्राप्त नहीं हुआ, हालांकि, घटना स्थल का एक कच्चा खाका बनाया गया जिसे उचित सूची में संलग्न किया गया।
28. पी डब्ल्यू-7 ने अपने शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू -7/ए) में अभिसाक्ष्य दिया कि दिनांक 13.09.2013 को 10:35 बजे पूर्वाहन में यह सूचना प्राप्त हुई कि खुराई पॉपुलर हाई स्कूल के नजदीक खुराई लैथराम लीकाई में एक विश्रामालय के नजदीक एक आई ई डी का विस्फोट हुआ है जिसके परिणामस्वरूप एक डीजल ऑटो जिसकी पंजीकरण सं. एम एन 04 4578 था, आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गया, हालांकि, किसी प्रकार के जान-माल की क्षति नहीं हुई। यह आशंका व्यक्त की गई कि घाटी में सक्रिय भूमिगत संगठन ने इस क्षेत्र में सुरक्षा कार्मिकों तथा आम जनता को मारने के उद्देश्य से बम लगाया गया था। एफ एस एल पांगेई के विशेषज्ञों की सहायता से, उस जगह से अपराध में प्रयुक्त कुछ वस्तुओं की बरामदगी हुई और बाद में उन्हें ज़ब्त किया गया।
- 28.1 उक्त रिपोर्ट/शिकायत (प्रदर्श पी डब्ल्यू-7/1) के आधार पर, भारतीय दंड संहिता की धारा 307/427/34 और विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 3 और 1967 अधिनियम की धारा 16(1) (ख)/20 के अंतर्गत निरीक्षक चंद्रकुमार सिंह, पोरोम्पट पुलिस थाना द्वारा स्वतः प्रेरणा से घाटी के संदेहास्पद भूमिगत संगठन के खिलाफ प्राथमिकी सं. 270 (9) 013 (प्रदर्श पी डब्ल्यू -7/2) दर्ज कराई गई।
- 28.2 पुलिस द्वारा घेराबंदी और तलाशी अभियान के दौरान, एक संदिग्ध युवक को निरुद्ध किया गया, जिसके सत्यापन के बाद जिसकी पहचान अंजन थापा उर्फ कैयु, उम्र 25 वर्ष, पुत्र (एल) गोपे थापा, निवासी पांगेई नेपाली बस्ती, पुलिस थाना हींगांग के रूप में की गई। अभियुक्त की तलाशी के दौरान निम्नांकित सामान की बरामदगी हुई:
- (1) सैमसंग मोबाइल मॉडल सं. जी टी - ई 1282 टी, उसके साथ एक (1) वोडाफोन सिम कार्ड सं. ई एच 183104 यू 80069; और एक (1) आइडिया सिम कार्ड सं. 89918490000028 427221 प्राप्त हुए। ये वस्तुएं ज़ब्त की गईं और तदनुसार ज़बती ज़ापन (प्रदर्श पी डब्ल्यू-7/3) तैयार किया गया।
- 28.3 अभिसाक्षी ने कहा है कि, पूछताछ के दौरान, उक्त अभियुक्त ने खुलासा किया कि वर्ष 2006 में वह यू एन एल एफ में शामिल हुआ था; वह इसका एक सक्रिय सदस्य था; और खुराई पॉपुलर हाई स्कूल के निकट जो बम विस्फोट हुआ था, उसको उसी ने लगाया था।
29. पी डब्ल्यू-8 ने अपने शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/ए) में अभिसाक्ष्य दिया है कि मैतेई उग्रवादी संगठन विशेषतः आर पी एफ/पी एल ए, यू एन एल एफ/पी आर ई पी ए के और के बाई के एल एवं के सी पी द्वारा विध्वंसक गतिविधियों में शामिल होना जारी है, जिससे न केवल राज्य में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति प्रभावित हुई है, बल्कि देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा पैदा हुआ है।
- 29.1 पी डब्ल्यू-8 ने आगे अभिसाक्ष्य दिया है कि जैसा कि उसके शपथ-पत्र के पैरा 3 में उल्लिखित है, मैतेई उग्रवादी संगठनों का मुख्य उद्देश्य मणिपुर को भारत संघ से अलग कर एक स्वतंत्र संप्रभु राष्ट्र का निर्माण करना है। भारत के प्रभुत्व से मणिपुर राज्य को स्वतंत्र करना उक्त उग्रवादी संगठनों का प्रमुख उद्देश्य है। संगठनों की प्रचालनात्मक गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण देते हुए, जैसा कि उनके शपथ-पत्र के पैरा 4 में उल्लिखित है, पी डब्ल्यू-8 ने उल्लेख किया है कि ये उग्रवादी संगठन स्वयं को मणिपुर राज्य या भारत संघ का हिस्सा नहीं समझते हैं। उनके सदस्य, प्रत्येक विचारणीय अवसर पर, स्वतंत्र मणिपुर राज्य स्थापित करने के अपने उद्देश्य को हासिल करने के लिए हिंसा, आतंक, धमकी और इसी तरह के अन्य कृत्यों का सहारा लेकर आम जन-जीवन और राज्य के क्रियाकलापों को अस्त-व्यस्त करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, उन लोगों ने हथियार, शस्त्र और गोलाबारूद प्राप्त किए हैं। यह भी अभिसाक्ष्य दिया गया है कि ये उग्रवादी संगठन बड़े पैमाने पर आम लोगों

से जबरन धन वसूल करने के लिए धमकी देते हैं और असहयोग की स्थिति में मांगों का प्रतिरोध करने वालों को समाप्त करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार, वे आतंक फैलाते हैं और अपनी गैर-कानूनी गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए जबरन धन वसूली करते हैं। आगे यह भी कहा गया है कि प्रधानमंत्री या किसी शीर्ष गणमान्य व्यक्ति के दौरे के दौरान समारोह का बहिष्कार करने के लिए लोगों का आह्वान करते हैं और कार्यक्रम में भाग लेने वालों को गंभीर परिणामों की धमकी देते हैं। अभिसाक्षी ने जोर देकर यह भी कहा है कि उक्त उग्रवादी संगठनों को विदेशों से, खासकर पड़ोसी देशों से सहायता मिलती है।

- 29.2 पी डब्ल्यू-8 ने आगे यह कहा कि 13.11.2011 से 08.07.2013 तक की अवधि के दौरान मैतेई उग्रवादी संगठनों के विरुद्ध कुल 846 प्राथमिकियां दर्ज की गई हैं जिनका विवरण निम्नांकित है:-

क्र.सं.	संगठन का नाम	दर्ज प्राथमिकियों की संख्या
1.	रिवोल्यूशनरी पीपल्स फ्रंट (आर पी एफ)/पीपल्स लिबरेशन आर्मी (पी एल ए)	146
2.	यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट (यू एन एल एफ)	104
3.	पीपल्स रिवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ कांगलीपाक (पीआरईपीएके)	226
4.	कांगली याओल कान्वा लुप (के वाई के एल)	117
5.	कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (के सी पी)	253
	कुल	846

- 29.3 आर पी एफ/पी एल ए, यू एन एल एफ, पी आर ई पी ए के, के वाई के एल और के सी पी के विरुद्ध मणिपुर राज्य में विभिन्न पुलिस थानों में दर्ज उपर्युक्त प्राथमिकियों तथा ज़ब्त ज़ापनों की सत्यापित प्रतियों को अनुलग्नक क-1 के रूप में प्रस्तुत किया गया है और उसके साथ पी डब्ल्यू-8 का शपथ-पत्र भी संलग्न है इन सभी दस्तावेजों को सामूहिक रूप से क्रमशः प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/खंड-I-ए/1, प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/खण्ड-I-बी/1, प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/खंड-I-सी/1, प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/खंड-I-डी/1 और प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/खंड-I-ई/1 के रूप में प्रदर्शित किया गया है।
- 29.4 पी डब्ल्यू-8 के शपथ-पत्र के साथ दर्ज अनुलग्नक ए-2 में मांग पत्रों, जबरन धन वसूली पत्रों, जबरन धन वसूली नोटों, प्राथमिकियों और उक्त उग्रवादी संगठनों के बीच किए गए पत्राचार की प्रतियां निहित हैं, जिन्हें जांच के दौरान तथा इन उग्रवादी संगठनों के कुछ सदस्यों को गिरफ्तार करते समय ज़ब्त किया गया था। उक्त दस्तावेजों को सामूहिक रूप से प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/खंड-II/1 के रूप में प्रदर्शित किया गया है।
- 29.5 पी डब्ल्यू-8 के शपथ-पत्र के साथ समाचार-पत्रों की रिपोर्टें/क्लिपिंग्स, जो 13.11.2011 से 08.07.2013 की अवधि की हैं, और उग्रवादी संगठनों की गतिविधियों से संबंधित हैं, अनुलग्नक ए-3 के रूप में संलग्न हैं। चूंकि, वास्तव में समाचार-पत्र की क्लिपिंग्स/रिपोर्टों की फोटो प्रतियां संलग्न की गई हैं और भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (संक्षेप में साक्ष्य अधिनियम) के उपबंधों के अनुसार, इन सबको प्रदर्शित नहीं किया गया है, अपितु पी डब्ल्यू-8/खंड-III/1 के रूप में सामूहिक रूप से अंकित किया गया है।
- 29.6 पी डब्ल्यू-8 के शपथ-पत्र के साथ, अनुलग्नक ए-4 प्रस्तुत किया गया है जिसमें कॉरकॉम के लक्ष्यों और उद्देश्यों से संबंधित संक्षिप्त नोट है, इसे विधिविरुद्ध संगम घोषित किए जाने से संबंधित औचित्य का विवरण, 13.11.2011 से 08.07.2013 की अवधि के दौरान दर्ज 43 मामलों की सूची, प्राथमिकियों से संबंधित संक्षिप्त विवरण, इसके द्वारा जारी दस्तावेजों और इसकी प्रेस विज्ञप्तियों से संबंधित समाचार-पत्रों की कतरने निहित हैं। इन्हें सामूहिक रूप से प्रदर्श पी डब्ल्यू-8/खंड IV/1, संक्षिप्त नोट और प्रेस विज्ञप्तियों को छोड़कर, के रूप में प्रदर्शित किया गया है।
- 29.7 पी डब्ल्यू-8 ने इस आशय का भी अभिसाक्ष्य दिया है कि इस अधिकरण के लिए रिकॉर्ड के रूप में प्रदर्शित दस्तावेजों के अध्ययन से मैतेई उग्रवादी संगठनों और इनके सदस्यों की विधिविरुद्ध और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का खुलासा होता है।
30. पी डब्ल्यू-9 ने दो शपथ-पत्र प्रस्तुत किए हैं। पहला शपथ-पत्र प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/ए के तौर पर प्रस्तुत किया गया है जबकि दूसरा शपथ-पत्र, जो एक अतिरिक्त शपथ-पत्र है, प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/बी के तौर पर प्रस्तुत किया गया है। इन शपथ-पत्रों में पी डब्ल्यू-9 ने यह जोर देकर कहा है कि मणिपुर के घाटी क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियां मुख्यतः उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों द्वारा ही की जाती हैं; और मणिपुर की विद्यमान सुरक्षा स्थिति को देखते हुए इम्फाल नगर पालिका क्षेत्र के अलावा सम्पूर्ण मणिपुर राज्य को सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम, 1958 के तहत समय-समय पर 'अशांत क्षेत्र' घोषित किया गया है और यह 30.11.2014 तक वैध है।
- 30.1 पी डब्ल्यू-9 ने आगे यह अभिसाक्ष्य दिया है कि उक्त उग्रवादी संगठनों का मुख्य घोषित लक्ष्य मणिपुर राज्य को भारत से अलग करके प्रभुसत्तासम्पन्न मणिपुर राज्य की स्थापना करना है और इसके लिए वे विधिविरुद्ध क्रियाकलापों में संलिप्त रहे हैं। उक्त उग्रवादी संगठन न केवल गैर-मणिपुर निवासियों के विरुद्ध एक सशक्त अभियान चलाने और उन्हें बार-बार मणिपुर राज्य को छोड़ने के निदेश देने में सक्रिय रूप से संलिप्त रहे हैं, बल्कि हथियारों की खरीद और अपने कांडों के प्रशिक्षण के लिए सहायता सुनिश्चित करने के विचार से भी नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (इसाक मुइवाह), नेशनल काउंसिल ऑफ नागालैंड (खापलांग) तथा अन्य उग्रवादी संगठनों के साथ सक्रिय संपर्क भी बनाए हुए हैं ताकि वे अपने अलगाववादी उद्देश्यों को पूरा कर

सकें। उन्होंने बांग्लादेश एवं म्यांमार में शिविर, प्रशिक्षण केन्द्र तथा आयुध भण्डार बनाए हुए हैं, और हाल ही में नेपाल में भी अपना ठिकाना (ठिकाने) बनाया है।

- 30.2 पी डब्ल्यू-9 ने साथ ही यह दावा भी किया है कि मणिपुर राज्य में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति अत्यंत नाज़ुक है और यह चिंता का कारण बनी हुई है। उक्त उग्रवादी संगठनों द्वारा प्रचारित और अंजाम दी गई हिंसा की घटनाओं और उनकी गतिविधियों, अन्य उग्रवादी संगठनों एवं विदेशी सैन्य अधिकारियों के साथ उनके संबंध एवं निकट संपर्क का विवरण अभिसाक्षी द्वारा अपने दिनांक 17.02.2014 के शपथ-पत्र में पैरा 10 से 17 तक दिया गया है। उक्त शपथ-पत्र के साथ प्रस्तुत, उक्त उग्रवादी संगठनों के लक्ष्यों/उद्देश्यों तथा हिंसक गतिविधियों का संक्षिप्त व्यौरा मार्क. पी डब्ल्यू-9/1 पर चिह्नित किया गया है। 02-01-2013 से जुलाई, 2013 की अवधि के दौरान मैतेई भूमिगत गुटों द्वारा अंजाम दी गई हिंसा की बड़ी घटनाओं, 13.11.2011 से 08.07.2013 की अवधि के दौरान कॉरकॉम तथा इसके संघटकों के खिलाफ दर्ज मामलों की सूची तथा आर पी एफ, पी एल ए, यू एन एल एफ, पी आर ई पी ए के तथा के सी पी नामक पांच मैतेई उग्रवादी संगठनों के खिलाफ 31.11.2011 से 08.07.2013 की अवधि तक दर्ज मामलों की संख्या का विवरण क्रमशः पी डब्ल्यू-9/2, पी डब्ल्यू-9/3 तथा पी डब्ल्यू-9/4 के रूप में चिह्नित अनुलग्नकों के रूप में उक्त शपथ-पत्र के साथ प्रस्तुत किए गए हैं।
- 30.3 पी डब्ल्यू-9 ने उक्त शपथ-पत्र के पैरा 20 में उग्रवादी संगठनों तथा उनके गुटों को 'विधिविरुद्ध संगम' घोषित करने के लिए आधार एवं कारण बताए हैं जो लगभग उन्हीं के समान हैं जैसाकि दिनांक 13.11.2013 की राजपत्र अधिसूचना में उल्लिखित हैं। उक्त राजपत्र अधिसूचना हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में शपथ-पत्र के साथ प्रस्तुत की गई है और अधिकरण के रिकार्ड में भाग-11 के पृष्ठ 58 से 63 पर संलग्न है। राजपत्र अधिसूचना प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/6 के तौर पर प्रदर्शित है।
- 30.4 पी डब्ल्यू-9 ने अपने अतिरिक्त शपथ-पत्र (प्रदर्श पी डब्ल्यू-9/बी) में यह तथ्य उजागर किया है कि उक्त उग्रवादी संगठनों की विधिविरुद्ध क्रियाकलापों के संबंध में मणिपुर राज्य सरकार से प्राप्त सूचनाओं के अलावा, केन्द्र सरकार को भी उक्त अवधि के दौरान उक्त उग्रवादी संगठनों एवं उनके विभिन्न गुटों की सतत विधिविरुद्ध गतिविधियों के संबंध में आसूचना एजेंसियों तथा केन्द्रीय बलों द्वारा सूचना प्राप्त हुई थी।
- 30.5 पी डब्ल्यू-9 ने स्पष्टतः यह बताया है कि वह अतिरिक्त सामग्री, जिसे एक सीलबंद आवरण में अधिकरण के समक्ष रखा गया था और जांच के पश्चात श्री एस. सी. रावत, अनुभाग अधिकारी, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, जो उक्त तारीख अर्थात् 22.04.2014 को न्यायालय में उपस्थित थे को लौटा दी गई थी, को रिकार्ड में नहीं लाया जा सकता, क्योंकि इसमें निहित रिपोर्टें और जानकारीयां अत्यंत विशिष्ट एवं गोपनीय थीं, जिन्हें अधिकरण के अलावा किसी भी अन्य तीसरे पक्षकार को उपलब्ध नहीं कराया जा सकता था। पी डब्ल्यू-9 ने यह जोर देकर कहा कि केन्द्र सरकार का यह मत है कि इस प्रकार की आसूचना रिपोर्टें एवं सूचनाओं को किसी भी प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन अथवा तीसरे पक्षकार की जानकारी में लाना जनहित में नहीं होगा। इसके अलावा पी डब्ल्यू-9 ने यह जोर देकर कहा है कि चूंकि उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों द्वारा चलाई जा रही विधिविरुद्ध गतिविधियां गुप्त प्रकृति की हैं, इसलिए उनकी गतिविधियों के संबंध में केन्द्र सरकार के जानकारी एवं सूचनाओं के स्रोत की गोपनीयता अपेक्षित है। अभिसाक्षी ने निश्चिन्तपूर्वक कहा है कि वर्तमान मामले में जानकारी एवं सूचनाओं को प्रकट न करना जनहित में होगा। इस प्रकार पी डब्ल्यू-9 ने यह उल्लेख किया कि अधिकरण दिनांक 13.11.2013 की उपर्युक्त अधिसूचना की पुष्टि करे।

विश्लेषण

31. रिकार्ड के अध्ययन तथा मणिपुर राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार के वकीलों को सुनने के बाद, स्वतः सिद्ध हो जाता है कि दिनांक 13.11.2013 की अधिसूचना को मानने अथवा न मानने के लिए किसी भी प्रकार से निष्कर्ष पर पहुंचने हेतु केन्द्र सरकार के पास उपलब्ध कारणों की पर्याप्तता सुनिश्चित करनी होगी, जो कि उनके पास है, यह कि विनिर्दिष्ट संगठन विधिविरुद्ध संगम थे।
- 31.1 प्रासंगिक रूप से, दिनांक 13.2011 की अधिसूचना इसके सरकारी राजपत्र में प्रकाशित होने की तारीख से ही प्रवृत्त मानी गई है। इसलिए, उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों पर तब तक प्रतिबंध जारी रहेगा जब तक कारणों की पर्याप्तता के संदर्भ में अधिकरण किसी भिन्न निष्कर्ष पर न पहुंचे। इसलिए, 1967 अधिनियम में यथा-उपबंधित 'विधिविरुद्ध संगम' तथा 'विधिविरुद्ध क्रियाकलाप' की परिभाषा को संक्षेप में बताया जाना प्रासंगिक होगा। विधिविरुद्ध संगम की परिभाषा 2(त) के तहत दी गई है। धारा 2(त) खंड (झ) में उल्लेख किया गया है कि विधिविरुद्ध संगठन एक ऐसा संगठन है जिसका उद्देश्य कोई विधिविरुद्ध क्रियाकलाप अथवा जो किसी विधिविरुद्ध गतिविधि को अंजाम देने के लिए व्यक्तियों को प्रोत्साहित करता है अथवा सहायता करता है अथवा जिसमें ऐसे व्यक्तियों का संगम हो जा इस प्रकार की विधिविरुद्ध गतिविधियों को अंजाम देते हों। धारा 2(त) का खंड (ii) उन सभी संगठनों को अपने भीतर समाहित करता है, जिनके उद्देश्य कोई ऐसी गतिविधि चलाना हो, जो भा.द.सं. की धारा 153(क) तथा धारा 153(ख) के तहत दंडनीय हो अथवा जो इस प्रकार की गतिविधि को अंजाम देने के लिए व्यक्तियों को प्रोत्साहन अथवा सहायता प्रदान करते हों और वे संगठन भी जिसके सदस्य इस प्रकार की गतिविधियों को अंजाम देते हों¹

1. 153-क. धर्म, मूलवंश, जन्मस्थान, निवास स्थान, भाषा, इत्यादि के आधारों पर विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता का संप्रवर्तन और सौहार्द बने रहने पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले कार्य करना:-

(1) जो कोई -

(क) बोले गये या लिखे गये शब्दों द्वारा या संकेतों द्वारा या दृश्यरूपों द्वारा या अन्यथा विभिन्न धार्मिक, मूलवंशीय या भाषाई या प्रादेशित समूहों, जातियों या समुदायों के बीच असौहार्द अथवा शत्रुता, घृणा या वैमनस्य की भावनाएं, धर्म, मूलवंश, जन्मस्थान, निवास स्थान, भाषा, जाति या समुदाय के आधारों पर या अन्य किसी भी आधार पर संप्रवर्तित करेगा या संप्रवर्तित करने का प्रयत्न करेगा, अथवा

- 31.2 भारतीय दंड संहिता की धारा 153 क व्यापक रूप से उन आपराधिक कार्यों को देखता है जो बोले गए या लिखे गए या संकेतों द्वारा या दृश्यरूपणों द्वारा या अन्यथा धर्म, जाति, जन्मस्थान, निवास, भाषा आदि के आधार पर विभिन्न समूहों के मध्य वैमनस्य को बढ़ावा देता हो। यह उन कार्यों को भी देखता है जो विभिन्न धार्मिक, मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूहों या जातियों या समुदायों के मध्य सौहार्द बने रहने तथा लोक-प्रशान्ति में विघ्न डालते हों या विघ्न डालने की संभावना हो। वे संगठन जो इस आशय से या यह संभावना जानते हुए कोई अभ्यास, आन्दोलन, कवायद या क्रियाकलाप संचालित करते हो कि उस क्रियाकलाप में भाग लेने वाला व्यक्ति किसी धार्मिक, मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के विरुद्ध आपराधिक बल या हिंसा का प्रयोग करेगा या प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा या यह संभावना जानते हुए संचालित करेगा कि और इस प्रकार के क्रियाकलाप से चाहे किसी भी कारण से, भय या संत्रास या असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो, उपर्युक्त मदों में शामिल है।
- 31.3 इसी प्रकार, भा.द.सं. की धारा 153 ख अन्य बातों के साथ-साथ किसी व्यक्ति के उन आपराधिक कार्यों को भी देखती है जिनमें बोले गए या लिखे गए या संकेतों द्वारा या दृश्यरूपणों द्वारा या अन्यथा कोई ऐसा लांछन लगाते हों या प्रकाशित करते हों कि किसी वर्ग के व्यक्ति इस कारण से कि वे किसी धार्मिक, मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के सदस्य हैं, विधि द्वारा स्थापित भारत के संविधान के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा नहीं रख सकते या भारत की संप्रभुता और अखंडता की मर्यादा नहीं बनाए रख सकते।
- 31.4 1967 अधिनियम की धारा 2(ण) में 'विधिविरुद्ध क्रियाकलाप' की परिभाषा किसी व्यक्ति अथवा संगम के संबंध में, किसी ऐसे व्यक्ति अथवा संगम द्वारा बोलकर अथवा लिखकर अथवा सांकेतिक अथवा दृश्यरूपणों द्वारा अथवा अन्यथा किए गए ऐसे किसी कार्य द्वारा की गई ऐसी कार्रवाई है जो किसी भी आधार पर संघ से भारत के किसी भू-भाग के सत्तान्तरण अथवा उसे अलग करने के उद्देश्य अथवा ऐसे कृत्य के समर्थन में किया गया हो। इसके दायरे में कोई ऐसा कृत्य भी है जो भारत की संप्रभुता तथा अखंडता को नकारता हो, उस पर प्रश्न उठाता हो, उसे भंग करता हो अथवा भंग करने का इरादा रखता हो अथवा कोई ऐसा कृत्य जो भारत के विरुद्ध असंतोष फैलाता हो अथवा ऐसा इरादा रखता हो।
32. 1967 अधिनियम तथा भारतीय दंड संहिता दोनों के उपर्युक्त प्रावधानों के दायरे ध्यान में रखते हुए, इस अधिकरण के समक्ष रखी गई सामग्री का अवलोकन करना होगा। निःसंदेह साक्ष्यों के महत्व का आकलन करते समय, इस अधिकरण को इसके समक्ष रखी सामग्री को विशुद्ध रूप से साक्ष्य नियमावली के मापदण्डों पर नहीं जांचा जाना है, जो साक्ष्य अधिनियम के अंतर्गत उपबंधित हैं। अधिकरण के समक्ष रखी गई सामग्री को विशुद्ध रूप से विधिक साक्ष्य तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है। अतः अधिकरण को उसके समक्ष रखी सामग्री की विश्वसनीयता का उक्त सिद्धांतों के आलोक में आकलन करना आवश्यक है। यदि राज्य द्वारा किसी संगठन को प्रतिबंधित किए जाने संबंधी कार्रवाई पर प्रश्न उठाया जाता है तो प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का आश्रय लिया जाना आवश्यक है, जो मामले की परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए, जिसमें जनहित को नुकसान पहुंचाए बिना प्रभावित संगमों तथा इसके सदस्यों के हितों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। [देखें जमात-ए-इस्लामी हिन्द बनाम भारत संघ (1995)1 एस सी सी 428]

(ख) कोई ऐसा कार्य करेगा, जो विभिन्न धार्मिक, मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूहों या जातियों या समुदायों के बीच सौहार्द बने रहने पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला है और जो लोक-प्रशान्ति में विघ्न डालता है या जिससे उसमें विघ्न पड़ना सम्भाव्य हो, [अथवा]

(ग) कोई ऐसा अभ्यास, आंदोलन, कवायद या अन्य वैसा ही क्रियाकलाप इस आशय से संचालित करेगा कि ऐसे क्रियाकलाप में भाग लेने वाले व्यक्ति किसी धार्मिक, मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के विरुद्ध आपराधिक बल या हिंसा का प्रयोग करेगा या प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किए जाएंगे या यह सम्भाव्य जानते हुए संचालित करेगा कि ऐसे क्रियाकलाप में भाग लेने वाले व्यक्ति किसी धार्मिक, मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के विरुद्ध आपराधिक बल या हिंसा का प्रयोग करेंगे या प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किए जाएंगे अथवा क्रियाकलाप में इस आशय से भाग लेगा कि किसी धार्मिक, मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति समुदाय के विरुद्ध आपराधिक बल या हिंसा का प्रयोग करेंगे। प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए या सम्भाव्य जानते हुए भाग लेगा कि ऐसे क्रियाकलाप में भाग लेने वाले व्यक्ति किसी धार्मिक मूलवंशीय भाषायी या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के विरुद्ध आपराधिक बल या हिंसा का प्रयोग करेंगे या प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किए जाएंगे और ऐसे क्रियाकलाप से ऐसी धार्मिक मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति समुदाय के सदस्यों के बीच, चाहे किसी भी कारण से, भय या संत्रास या असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है या उत्पन्न होनी सम्भाव्य है, वह कारावास से, जिसकी अवधि तीन वर्ष तक की हो सकेगी, या जुमनि से दोनों से, दण्डित किया जाएगा।

पूजा के स्थान आदि में किया गया अपराध, आदि (2) जो कोई उप-धारा (1) में विनिर्दिष्ट अपराध किसी पूजा के स्थान में या किसी जमाव में, जो धार्मिक पूजा व धार्मिक कर्म करने में लगा हुआ हो, करेगा, वह कारावास से जो पांच वर्ष तक का हो सकेगा, दण्डित किया जाएगा और जुमनि से भी, दण्डनीय होगा।

153-ख. राष्ट्रीय अखंडता पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले लांछन, प्रख्यान (1) जो कोई बोले गए या लिखे गए शब्दों द्वारा या संकेतों द्वारा या दृश्यरूपणों द्वारा या अन्यथा,-

(क) ऐसा कोई लांछन लगाएगा या प्रकाशित करेगा कि किसी वर्ग के व्यक्ति इस कारण से कि वे किसी धार्मिक मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के सदस्य हैं, विधि द्वारा संस्थापित भारत के संविधान के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा नहीं रख सकते या भारत की प्रभुता और अखंडता की मर्यादा नहीं बनाए रख सकते, अथवा

(ख) यह प्रख्यान करेगा, परामर्श देगा, सलाह देगा, प्रचार करेगा या प्रकाशित करेगा कि किसी वर्ग के व्यक्तियों को इस कारण कि वे किसी धार्मिक मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के सदस्य हैं, भारत के नागरिक के रूप में उनके अधिकार न दिए जाएं, या उन्हें उससे वंचित किया जाए, अथवा

(ग) किसी वर्ग के व्यक्तियों की बाधयता के संबंध में इस कारण कि वे किसी धार्मिक, मूलवंशीय, भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के सदस्य हैं, कोई प्रख्यान करेगा, परामर्श देगा, अभिवाक्य करेगा या अपील करेगा अथवा प्रकाशित करेगा, और ऐसे प्रख्यान, परामर्श अभिवचन करेगा या अपील से ऐसे सदस्यों तथा अन्य व्यक्तियों के बीच असांजस्य, अथवा शत्रुता या घृणा या वैमनस्य की भावनाएं उत्पन्न होती हैं या उत्पन्न होना सम्भाव्य है, वह कारावास से, जो तीन वर्ष तक का हो सकेगा, या जुमनि से, अथवा दोनों से, दंडित किया जाएगा।

(2) जो कोई उप-धारा (1) में विनिर्दिष्ट कोई अपराध किसी उपासना स्थल में या धार्मिक उपासना अथवा धार्मिक कर्म करने में लगे हुए किसी जमाव में करेगा वह कारावास से, जो पांच वर्ष तक का हो सकेगा, दंडित किया जाएगा और जुमनि से भी, दण्डनीय होगा।

33. अधिकरण के समक्ष रखी गई सामग्री, मणिपुर राज्य सरकार तथा केन्द्रीय सरकार दोनों के द्वारा प्रस्तुत गवाहों के साक्ष्यों के रूप में है। अधिकरण के सामने रखे गए नौ (9) गवाहों के साक्ष्य विस्तृत रूप से पूर्ववर्ती पैराओं में दिए गए हैं। पी डब्ल्यू-1 से पी डब्ल्यू-9 तक के साक्ष्यों के मात्र अवलोकन से यह उजागर होता है कि उग्रवादी संगठनों के सदस्य विधिविरुद्ध क्रियाकलापों में संलिप्त हैं, जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ आम जनता के लोगों तथा सरकारी कर्मचारियों से जबरन धन वसूलने, इस संबंध में मांग पत्र जारी करने, शस्त्र तथा गोलाबारूद रखने, आई ई डी लगाने एवं हथगोले फेंकने तथा विस्फोट करने में सदस्यों की संलिप्तता तथा उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों में बाल सैनिकों की भर्ती करने में इन सदस्यों की संलिप्तता शामिल हैं। (साक्ष्य पी डब्ल्यू-1 और पी डब्ल्यू-3 देखें) उग्रवादी संगठनों के सदस्यों, जिनमें महिलाएं भी शामिल हैं, के पास जिंदा हथगोलों, पी डी के विस्फोटकों, आदि जैसे घातक शस्त्र एवं गोलाबारूद पाए गए हैं- (पी डब्ल्यू-1 का साक्ष्य देखें)।
34. लोगों के बीच असंतोष फैलाने के प्रयास तथा लोगों को हिंसा के लिए उकसाना, पी डब्ल्यू-2 के साक्ष्य में, स्पष्ट रूप से उजागर हुआ है। एफ आई आर संख्या 65(2)/2012 (प्रदर्श पी डब्ल्यू-2बी/2) में अभियुक्त ओकराम अरविंद उर्फ हीराचनदा उर्फ यजपाबा का बयान यह उजागर करता है कि वह के वी सी-ताबुंगबा का प्रचार सचिव था, जिस भूमिका में वह भारत के विरुद्ध लोगों को युद्ध करने हेतु उकसाने में सक्रियता से सम्मिलित था। उक्त अभियुक्त ने समय-समय पर इंटरनेट के माध्यम से प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, दोनों को पत्र भेजे थे, जिसका उद्देश्य नागरिकों तथा राजनेताओं को डराना था। अभियुक्त पी डब्ल्यू-2 के अनुसार, दिनांक 20.11.2010 के एक ऐसे ई-मेल में, इस सिद्धांत का प्रचार किया गया था कि 'स्वतंत्रता बंदूक की नोक से हासिल की जाती है'।
- 34.1 अन्य गवाहों के साक्ष्य अर्थात् पी डब्ल्यू-1 तथा 5 से 7 ने भी इस बात को सिद्ध किया है कि उक्त उग्रवादी संगठन विधिविरुद्ध क्रियाकलापों में संलिप्त हैं। गवाहों द्वारा बताई गई प्रत्येक ऐसी घटना केवल इसी पहलू की पुष्टि करती है। (पुनरावृत्ति से बचने के लिए जिसका यहां पुनः विवरण नहीं दिया जा रहा है।)
- 34.2 पी डब्ल्यू-8 ने अपने शपथ-पत्र में इस तथ्य पर ध्यान दिलाया है कि उक्त उग्रवादी संगठनों के सदस्य नियमित रूप से सुरक्षा बलों पर घात लगाकर हमला करने, बम से हमले करने में संलिप्त हैं जिसका इरादा सुरक्षा बलों एवं सरकार एवं आमजनता के जीवन एवं संपत्ति को नुकसान पहुंचाना, अवैध कर लगाकर जबरन धूल-वसूली करना है जो कि सरकारी एवं निजी क्षेत्र के उद्यमों में कर्मचारियों से अथवा व्यक्तियों एवं व्यापारिक संगठनों के विकास एवं वाणिज्यिक गतिविधियों से इकट्ठा किया जाता है।
- 34.3 पी डब्ल्यू-8 ने इस तथ्य की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है कि उग्रवादी संगठनों के कुछ घटकों के मुख्यालय भारत से बाहर अवस्थित हैं। एक ऐसा उदाहरण यू एन एल एफ का है जिसका मुख्यालय, म्यांमार के जंगलों में तानान में अवस्थित है। पी डब्ल्यू-8 के अनुसार, यू एन एल एफ के अन्य भूमिगत संगठनों के साथ संपर्क हैं जो कि पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न भागों में सक्रिय हैं। निर्मित गठजोड़, एन एस सी एन (के), असम के यू एल एफ ए तथा त्रिपुरा के टी पी डी एफ जैसे संगठनों के साथ है। पी डब्ल्यू-8 ने अपने साक्ष्य में इस बात पर भी बल दिया है कि विभिन्न विधिविरुद्ध संगठन जैसे के सी पी, के वाई के एल, पी आर ई पी ए के, पी आर ई पी ए के (पी आर ओ), आर पी एफ, पी एल ए तथा यू एन एल एफ ने एक संगठन बनाया है जिसका नाम कॉरकॉम है। पी डब्ल्यू-8 द्वारा इस बात पर जोर दिया गया है कि कॉरकॉम ने राज्य में प्रचलित घाटी आधारित मैतेई उग्रवादी संगठनों का एकीकरण करने का प्रयास किया है जिससे कि पहाड़ों में स्थित संगठनों एवं अन्य समान इरादों वाले संगठनों को सुरक्षा कवच तथा संभार सहायता उपलब्ध कराई जा सके।
35. पी डब्ल्यू-9 ने उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों के उद्देश्यों तथा विधिविरुद्ध क्रियाकलापों का एक संक्षिप्त विवरण अपने साक्ष्य में दिया है। पी डब्ल्यू-9 के साक्ष्य के अनुसार, मात्र वर्ष 2013 में, 225 विधिविरुद्ध घटनाएं हुईं जिनमें से 154 मैतेई भूमिगत संगठनों द्वारा की गई हैं। इन घटनाओं में 24 नागरिक तथा सुरक्षा बलों के 5 कार्मिक मारे गए।
- 35.1 पी डब्ल्यू-9 ने 02.01.2013 और 25.07.2013 की अवधि के बीच उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों द्वारा किए गए विधिविरुद्ध क्रियाकलापों का तारीख-वार ब्यौरा भी प्रदान किया है। ब्यौरे संघटक-वार भी दिए गए हैं। पी डब्ल्यू-9 ने कॉरकॉम द्वारा किए गए अपराध का भी ब्यौरा प्रदान किया है। कॉरकॉम और उसके संघटकों के विरुद्ध दर्ज मामले का विशिष्ट संदर्भ दिया गया है। पी डब्ल्यू-9 के साक्ष्य के अनुसार, उपर्युक्त उग्रवादी संगठनों के विरुद्ध कुल 846 मामले दर्ज किए गए हैं।
36. उपर्युक्त के अलावा, केन्द्रीय सरकार ने सीलबंद कवर में आसूचना रिपोर्ट एवं इन्पुट भी प्रस्तुत किए हैं, जिनकी जांच अधिकरण द्वारा दिनांक 22.04.2014 को की गई थी। केन्द्रीय सरकार ने उग्रवादी संगठनों अथवा इसके सदस्यों या किसी अन्य तृतीय पक्षकार को इस तथ्य के प्रकट किए जाने के विरुद्ध विशेषाधिकार का दावा किया है। अधिकरण के समक्ष प्रस्तुत सामग्री की जांच के बाद, इसे वापस लौटा दिया गया। 1967 अधिनियम की धारा 3 की उप-धारा (2) के परन्तुक के अनुसार, केन्द्र सरकार का यह अधिकार है कि वह ऐसे किसी तथ्य को प्रकट नहीं करे जिसे जनहित के विरुद्ध मानती हो। ऐसा ही उपबंध 1968 नियमावली के नियम 3 के उप नियम(2) के खंड (क) तथा नियम-5 के परन्तुक में शामिल किया गया है।
- 36.1 सच यह है कि अधिकरण ने मामले के इस पहलू पर दिनांक 22.04.2014 को विचार किया और जांच के उपरांत, मुद्दे से संबंधित दस्तावेजों को केन्द्रीय सरकार के अभिरक्षक को वापस कर दिया, क्योंकि उनका निष्कर्ष था कि पी डब्ल्यू-9 के माध्यम से केन्द्रीय सरकार द्वारा दावा किए गए विशेषाधिकार और इस प्रकार से जन हित पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को ध्यान में रखते हुए इन दस्तावेजों को इसके रिकॉर्ड का हिस्सा नहीं होना चाहिए।
- 36.2 तथापि, आसूचना रिपोर्टों की जांच से केवल यह तथ्य प्रभावित हुआ कि उग्रवादी संगठन अपने सदस्यों, जिनमें उनके राजनैतिक एवं सशस्त्र विंग शामिल थे, के माध्यम से भारत संघ से मणिपुर को अलग करने की नीति का समर्थन करते रहे, ऐसे

क्रियाकलापों में लिप्त रहे जो भारत की संप्रभुता अखंडता के प्रतिकूल हैं, अपने उद्देश्य की पूर्ति करने तथा पड़ोसी देशों अर्थात् म्यांमार एवं बांग्लादेश में प्रशिक्षण शिविरों, शरण-स्थलों तथा सुरक्षित आश्रयों को बनाए रखने के लिए हिंसा और आतंक का उपयोग करते रहे।

37. यह तथ्य कि केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा प्रस्तुत गवाहों के साक्ष्यों का खंडन नहीं किया गया है, मेरी इस राय को बल प्रदान करता है कि दिनांक 13.11.2013 की अधिसूचना में केन्द्रीय सरकार द्वारा की गई घोषणा की पुष्टि करने के लिए पर्याप्त कारण है और उनमें निर्दिष्ट उग्रवादी संगठनों को विधिविरुद्ध संगम माना जाना चाहिए; कार्यवाहियों के दौरान अधिकरण के समक्ष प्रस्तुत गवाहों के साक्ष्य पर अविश्वास करने का कोई कारण सामने नहीं आया है।

निष्कर्ष

38. मेरे समक्ष प्रस्तुत सामग्री की समग्रता को ध्यान में लेते हुए मेरी राय है कि दिनांक 13.11.2013 की राजपत्र अधिसूचना सं. का. आ. 3440 (अ) में केन्द्रीय सरकार द्वारा की गई घोषणा की पुष्टि की जानी चाहिए। इसे ऐसा ही माना जाता है।
39. तदनुसार, इस संदर्भ का उत्तर उपर्युक्त अनुसार दिया जाता है।

(न्यायमूर्ति राजीव शकधर)
विधिविरुद्ध क्रियाकलाप निवारण) अधिकरण

दिनांक: 12 मई, 2014

[सं. 11011/44/2013-एन ई-V]

शंभू सिंह, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS NOTIFICATION

New Delhi, the 4th June, 2014

S.O. 1437 (E).—In terms of Section 4(4) of the Unlawful activities (Prevention) Act, 1967, the order of the Tribunal presided over by Hon'ble Justice Shri Rajiv Shakdher, Judge, Delhi High Court, to whom a reference was made under Section 4(1) of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 for adjudicating whether or not there is sufficient cause for declaring the Meitei Extremist Organisations of Manipur, viz., the People's Liberation Army (PLA), the Revolutionary Peoples' Front (RPF), the United National Liberation Front (UNLF) and its armed wing the Manipur Peoples' Army (MPA), the Peoples' Revolutionary Party of Kangleipak (PREPAK) and its armed wing the Red Army, the Kangleipak Communist Party (KCP) and its armed wing also Red Army, the Kanglei Yaol Kanba Lup (KYKL), the Manipur Peoples' Liberation Front (MPLF) and Coordination Committee Cor Com (conglomerate of six valley based UG outfits)] along with all their factions, wings and front organizations, as unlawful, is published for general information:

BEFORE THE UNLAWFUL ACTIVITIES (PREVENTION) TRIBUNAL

IN RE. :

GAZETTE NOTIFICATION NO. S.O. 3440(E) DATED 13TH

NOVEMBER, 2013, DECLARING THE MEITEI

EXTREMIST ORGANISATIONS OF MANIPUR, NAMELY,

1. The Peoples' Liberation Army generally known as (PLA);
2. The Revolutionary Peoples' Front (RPF) - The Political Wing of PLA;
3. The United National Liberation Front (UNLF);
4. The Peoples' Revolutionary Party of Kangleipak (PREPAK) and its armed wing called the "Red Army";
5. The Kangleipak Communist Party (KCP) and its armed wing also called the "Red Army";
6. The Kanglei Yaol Kanba Lup (KYKL);
7. Co-ordination Committee (Cor Com) - (Conglomerate of six valley based UG outfits); and
8. The Manipur Peoples' Liberation Front (MPLF).

to be "Unlawful Associations" under Sub-section (1) of Section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967)

A N D

GAZETTE NOTIFICATION NO. S.O. 3592(E) DATED 6TH DECEMBER, 2013 CONSTITUTING THE UNLAWFUL ACTIVITIES (PREVENTION) TRIBUNAL.

CORAM :

HON'BLE MR. JUSTICE RAJIV SHAKDHER

PRESENT :

Mr. Rajeeve Mehra, Additional Solicitor General of India with Mr. Sumeet Pushkarna and Mr. Neeraj Chaudhari, CGSCs, Mr. Ravjyot Singh, Mr. Kartikeya Mahajan, Mr. Gaurav Sharma, Ms. Shruti Aggarwal, Ms. Sara Sundaram and Mr. Sumit Chander, Advocates for Union of India.

Page 2 Of 50

Mr. Sapam Biswajit Meitei with Ms. N. Kalyani Devi, Advocates for the State of Manipur.

None for the Meitei Extremist Organizations.

ORDER

12.05.2014

PREFATORY FACTS

1. By a Gazette Notification No. S.O.3440(E) dated 13.11.2013, the Central Government declared the MEITEI Extremist Organizations and its various constituents, such as, the Peoples' Liberation Army, generally known as PLA, its political wing, the Revolutionary Peoples' Front (RPF), the United National Liberation Front (UNLF), the People's Revolutionary Party of Kangleipak (PREPAK) and its armed wing, the "Red Army", the Kangleipak Communist Party (KCP) and its armed wing, also called the "Red Army", the Kanglei Yaol Kanba Lup (KYKL), Cor Com (conglomerate of six valley-based UG outfits) and the Manipur People's Liberation Front (MPFL) along with all their factions, wings and front organizations (hereinafter collectively referred to as, 'Extremist Organizations'), as unlawful associations.
- 1.1 The Notification dated 13.11.2013 was issued by the Central Government in consonance with power conferred upon it under the provisions of Section 3(1) of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (in short, 'the 1967 Act').
- 1.2 In line with proviso to Sub-section (3) of Section 3, the Central Government vide Notification dated 13.11.2013, directed that the said Notification shall have effect from the date of its publication in the Official Gazette subject to any order that may be made under Section 4 of the 1967 Act.
2. In the Notification dated 13.11.2013, the Central Government has culled out reasons, which have led, it to conclude, that the activities of the Extremist Organizations, referred to above, are detrimental to the sovereignty and integrity of India, and hence they ought to be declared as unlawful associations. In addition, the Central Government (in the very same Notification) has also expressed an opinion that if, the activities of the Extremist Organizations are not curbed and controlled immediately, the said Extremist Organizations, would take the opportunity of conducting activities, which would be inimical to the interest of India.
- 2.1 The Notification dated 13.11.2013, thus, not only has a reference to the aims and objectives of the said Extremist Organizations, but also adverts to the unlawful and violent activities committed by them. The aims and objectives to which a reference has been made in the aforementioned Notification are as follows :
 - (i) openly declared their objectives as the formation of an independent Manipur by secession of Manipur State from India;
 - (ii) been employing and engaging in armed means to achieve the aforesaid objective;
 - (iii) been attacking the Security Forces, the Police, Government employees and law-abiding citizens in Manipur;
 - (iv) been indulging in acts of intimidation, extortion and looting of civilian population for collection of funds for their Organization;
 - (v) been making efforts to establish contacts with sources abroad for influencing public opinion and for securing their assistance by way of arms and training for the purpose of achieving their secessionist objective; and
 - (vi) been maintaining camps in neighbouring countries for the purpose of sanctuary, training and clandestine procurement of arms and ammunitions.
- 2.2 Similarly, the unlawful and violent activities adverted to in the Notification of 13.11.2013, are as follows:

- (i) involvement in 202 violent incidents in the year 2011, 401 in 2012 and 99 upto 31st August, 2013;
- (ii) killing of 14 persons (including 2 security force personnel) in the year 2011, 16 persons (including 7 security force personnel) in the year 2012 and 7 persons (including 4 security force personnel) upto 31st August, 2013.
3. Keeping in mind the aforesaid, by a second Gazetted Notification bearing No. S.O. 3592(E) dated 06.12.2013, the Unlawful Activities (Prevention) Tribunal (in short, 'the Tribunal') was constituted by the Central Government, in exercise of its power under Section 5(1) of the 1967 Act, for the purpose of adjudicating as to whether or not there is sufficient cause for declaring the aforementioned Extremist Organizations as unlawful associations.
4. Consequently, upon its due consideration, this Tribunal, held a hearing on 19.12.2013, whereupon on a consideration of the material placed on record by the Central Government, notice under Section 4(2) of the 1967 Act was issued to the said Extremist Organizations to show cause, within a period of 30 days, as to why they ought not to be declared as unlawful associations. The notices issued were given due publicity as required under Section 3(4) of the 1967 Act.
- 4.1 The Gazette Notification of 13.11.2013 was also published in two National Newspapers (all India editions), out of which one was in English while the other was in Hindi. The said Notification was also published, in two local newspapers, having wide circulation in the States in which the said Extremist Organizations, were active. The method of affixation, and proclamation by beating of drums, as well as loudspeakers, was also adopted. Proclamation was made at places where the Extremist Organizations were believed to be ordinarily active.
- 4.2 The notice issued by the Tribunal, alongwith the Gazette dated 13.11.2013, was displayed on the notice board of the Deputy Commissioner/ District Magistrate/ Tehsildar in all district headquarters of the State where the Extremist Organizations, were believed to be ordinarily active. Help of All-India Radio and electronic media of the State edition was also taken. Announcements were made through radio / electronic media at prime time.
- 4.3 The notice and the Gazette Notification of 13.11.2013 were pasted at prominent places, once again, in the States where the Extremist Organizations were believed to be active.
- 4.4. Apart from the above, on the very date, notices were issued also to the State of Manipur through its Chief Secretary.
- 4.5 The Registrar attached to the Tribunal was directed to ensure compliance of service of notice issued to the Extremist Organizations in the manner indicated. The Registrar was directed to file an independent report in that behalf before the next date of hearing, i.e., 27.01.2014.
5. Accordingly, both the Union of India as well as the State of Manipur, filed affidavits of service, affirming that service had been effected as directed by the Tribunal. The Registrar, vide his report dated 27.01.2014, also confirmed service of notice issued by the Tribunal.
6. This Tribunal having satisfied itself that service had been effected on the Extremist Organizations and their principal office bearers, in terms of Rule 6 of the Unlawful Activities (Prevention) Rules, 1968 (in short the Rules), and as per directions contained in the order dated 19.12.2013; coupled with the fact that no appearance was entered by and on behalf of the Extremist Organizations, vide order dated 17.02.2014, ruled that the inquiry could proceed ex-parte.
- 6.1. However, in order to afford an opportunity to both the Central and State Governments to lead evidence in support of their respective averments, allegations and / or grounds set out in the Notification dated 13.11.2013, as also to give another opportunity to the Extremist Organizations to rebut the material placed on record by the Central and the State Governments; by the very same order, i.e., order dated 17.02.2014, further proceedings were fixed on 05th & 06th March, 2014, at Shillong, with due consent of the counsels appearing for the Central and the State Governments.
7. Accordingly, the State of Manipur cited seven (7) witnesses, who amongst themselves filed sixteen (16) affidavits of evidence, while the Central Government produced one (1) witness, who filed an affidavit dated 07.02.2014 followed by an additional affidavit dated 31.03.2014. The details of witnesses, alongwith the affidavits filed by them are set out hereinafter :

FOR THE STATE OF MANIPUR

S.No.	Name of Witness	Details of Affidavit along with dates
1	Mr. R.K. Khomdon Singh, SDPO, Prompat, Imphal (PW-1)	(i) Ex. PW-1A/A dated 26.02.2014 (ii) Ex. PW-1B/A dated 26.02.2014 (iii) Ex. PW-1C/A dated 26.02.2014 (iv) Ex. PW-1D/A dated 26.02.2014

2	Mr. A. Ghanashyam Sharma, SDPO, Thoubal District (PW-3) & SDPO, Imphal (PW-6)	(i) Ex. PW-3/A dated 26.02.2014 (ii) Ex. PW-6A/A dated 17.03.2014 (iii) Ex. PW-6A/B dated 29.03.2014 (iv) Ex. PW-6B/A dated 17.03.2014
3	Mr. T. Lalboi Haokip, SDPO, Kakching (PW-4)	(i) Ex. PW-4A/A dated 26.02.2014 (ii) Ex. PW-4B/A dated 26.02.2014 (iii) Ex. PW-4C/A dated 26.02.2014
4	Mr. Th. Vikramjit Singh, SDPO, Imphal, Imphal West District (PW-2)	(i) Ex. PW-2A/A dated 26.02.2014 (ii) Ex. PW-2B/A dated 26.02.2014 (iii) Ex. PW-2C/A dated 26.02.2014
5	Mr. K. Meghachandra Singh, SDPO, Yairipok, Thoubal District (PW-5)	(i) Ex. PW-5/A dated 26.02.2014
6	Mr. Thingom Ramgopal Singh, SDPO, Porompat, Imphal East District (PW-7)	(i) Ex. PW-7/A dated 14.03.2014
7	Mr. Rehanuddin Choudhury, Deputy Secretary (Home), Govt. of Manipur (PW-8)	(i) Ex. PW-8/A dated 04.02.2014

FOR THE CENTRAL GOVERNMENT

S.No.	Name of Witness	Details of Affidavit along with dates
1	Mr. G. Sridharan, Deputy Secretary (Home), Ministry of Home Affairs, Govt. of India (PW-9)	(i) Ex. PW-9A dated 17.02.2014 (ii) Ex. PW-9B dated 31.03.2014

8. Continuing with the narrative, at the hearing held on 05.03.2014 at Shillong, two witnesses of the State of Manipur were produced for examination. These being: Mr. R.K. Khomdon Singh (PW-1) and Mr. Th. Vikramjit Singh (PW-2). Similarly, on 06.03.2014 three witnesses were examined, namely, Sh. A. Ghanashyam Sharma (PW-3), Mr. T. Lalboi Haokip (PW-4) and Mr. K. Meghachandra Singh (PW-5).
9. On 06.03.2014, the proceedings were adjourned to 12.03.2014, to be held at Delhi. On the said date, the counsel for the State of Manipur conveyed to the Tribunal that he needed to examine one more witness, namely, Sh. Rehanuddin Choudhury (PW-8), whose examination would have to take place outside Imphal, though in close proximity as he apprehended a danger to his physical well-being, due to anticipated publicity by the local press. Accordingly, the counsels for the Central and the State Governments suggested that evidence of the remaining witnesses could be recorded on 04th and 5th April at Gangtok in Sikkim.
10. At this stage, it may be important to note that in the interregnum, i.e., on 01.04.2014, additional evidence by way of three affidavits, out of which two were sworn by Mr. A. Sharma (PW-6, also examined as PW-3) and one by Mr. Thingom Ramgopal Singh (PW-7), was filed by the State of Manipur. These affidavits are marked as Ex. PW-6A/A, Ex. PW-6B/A and Ex. PW-7/A, as shown in paragraph 7 above. In addition, on the very same date, an additional affidavit (Ex. PW-9/B), was also filed by Sh. G. Sridharan, (PW-9) on behalf of the Union of India.
11. As indicated above, on 04.04.2014, at Gangtok, following witnesses, on behalf of State of Manipur tendered their affidavit(s) of evidence: Mr A. Ghanashyam Sharma (PW-3 / PW-6), tendered two affidavits of evidence, marked as PW-6A/A and PW-6B/A; Mr Thingom Ramgopal Singh, (PW-7) tendered his affidavit of evidence marked as PW-7/A; and Mr Rehanuddin Choudhury (PW-8), also tendered his affidavit of evidence marked as Ex.PW-8/A.
12. On the succeeding date, i.e., 05.04.2014, since the counsel for the State of Manipur indicated that no other witness had to be examined by him, the evidence on behalf of State of Manipur was closed. In so far as the Union of India was concerned, its witness could not appear before the Tribunal on 05.04.2014; consequently, the matter was adjourned to 07.04.2014 for recording his evidence. Since the witness for the Union of India was

unable to appear on 07.04.2014 as well, the proceedings were adjourned to 16.04.2014, to be held at Delhi. On the said date, i.e., 16.04.2014, the Union of India examined Mr. G. Sridharan (PW-9) as a witness. Accordingly, the evidence tendered by him in the form of affidavits of evidence was marked as Ex. PW-9/A and Ex. PW-9/B.

13. It may only be noted that all the witnesses who had tendered their evidence by way of affidavit(s) of evidence, were examined on oath. The witnesses, during their deposition, admitted their signatures on their respective affidavits at points indicated therein, while tendering them as evidence along with exhibits and marked documents. In view of the fact that there was no representation made, in any form whatsoever by the Extremist Organizations, to cross-examine the aforementioned witnesses produced before this Tribunal both by the Union of India and the State of Manipur, the evidence in the matter was closed on 16.04.2014. The matter was fixed for arguments on 17.04.2014.
14. At the hearing held on 17.04.2014, on behalf of the Union of India arguments were advanced by Mr. Rajeev Mehra, Additional Solicitor General, assisted by Mr. Sumeet Pushkarna and Mr. Neeraj Choudhari, CGSCs. On behalf of the State of Manipur, submissions were advanced by Mr. Sapam Biswajit Meitei. Learned counsels for both the Union of India and the State Government relied upon the contents of Notification dated 13.11.2013, the evidence and material filed to support the decision taken to declare the aforementioned Extremist Organizations as unlawful associations.
15. Having heard the learned counsels for the Central and the State Governments and perused the evidence and the material placed on record, I am of the view that before I proceed further, it would be necessary to advert briefly to the evidence produced before me, in the form of testimonies of witnesses examined by both the State of Manipur and the Central Government.

EVIDENCE

16. PW-1 stated on oath vide his first (1st) affidavit (Ex. PW-1A/A) that on 13th November, 2012 at about 5.00 a.m., an input was received from 18 Regiment [corroborated with CDO/Imphal East Intelligence], that some anti-social elements were present in and around Wangkhei Puja Lampak area with an intent to commit prejudicial activities like extortion of money from general public. Accordingly, a search operation was conducted and a person identified as Leimapokpam Lupajao Meitei (47), S/o (L) L. Kula of Chairan Mayai Leikai, was arrested from the spot at 6.30 a.m. He further deposed that the interrogation of the accused revealed that he was an active member of RPF/PLA; an organisation which he had joined in September, 2012 with the help of Nongpoknganba, S/s Project Officer of RPF/PLA. The interrogation revealed that he was in possession of demand letters which was stashed in a room rented by him. Evidently, ten (10) demand letters, bearing the legend "OFFICE OF THE SECRETARY FINANCE, REVOLUTIONARY PEOPLE'S FRONT" were recovered and seized from his rented room, at 8.30 a.m. that very morning. Seizure Memo was accordingly drawn up being Ex. PW-1A/3.
- 16.1 Thus, on the basis of the complaint/report dated 13th November, 2012 (Ex. PW-1A/1) made by ASI N. Raju Singh, Commando Imphal East, FIR No. 484(11)2012 PRT-PS (Ex. PW-1A/2) under Section 17/20 of the 1967 Act was registered by SI K. Chandrashekhar Singh, on the same day itself.
- 16.2 PW-1 vide his second (2nd) affidavit (Ex. PW-1B/A) deposed that on 1st March, 2012, at about 4.00 a.m., reliable information was received that some hard-core armed underground (UG) elements, suspected to be members of the valley based UG were gathered around Lamlong, Khurai, Chairanthong areas, with an intent to commit extortion, carjacking of Government/private vehicles to attack the security forces and to plant IEDs at the residence of Congress workers and candidates of the 10th Manipur Legislative Assembly Election, 2012. Accordingly, a cordon and search operation was launched at Khurai, near Popular High School. In the operation, two unknown youths, who were moving about suspiciously, were detained briefly for verification; upon which they attempted to flee in the direction of Ipum Mapal. While one of them was overpowered at about 7.30 a.m., the other fled away.
- 16.3 Spot verification, revealed that the accused was one, Thokchom Bung @ Malemnganba, S/o Th. Opendro of Khongman Zone-I, aged 21 years. The accused was also found to be in possession of one 9 mm pistol loaded with two live rounds in the magazine. Both were recovered from right-side pocket of his pant. The weapon and the magazine were, accordingly, seized. A seizure memo (Ex. PW-1B/3), it is stated, accordingly was drawn up. The interrogation of the accused revealed that he was an active member of UNLF, an organisation which he had joined in November, 2007, with the assistance of one S/S L/Coprl. Takpa, who was killed in an encounter. The fact that the accused obtained basic military training at Mindha, Myanmar under Service No. 2230 of 34th Batch of UNLF, was involved in extortion of money from general public, govt. officials, businessmen, and was involved in the transportation of arms and ammunitions from one place to another, was revealed during interrogation. Thus, on the basis of the report/complaint dated 1st March, 2012 (Ex. PW-1B/1) made by SI Kh Bobocha Singh, Porompat PS, FIR No. 71(3)2012 PRT-PS (Ex. PW-1B/2) under Sections 17 and 20 of the 1967 Act and 25 (I-C) of the Arms Act, 1959 (in short, 'the Arms Act') was registered by Insp. R.K. Tejbir Singh on the same day itself.
- 16.4 PW-1 in his third (3rd) affidavit (Ex. PW-1C/A) has deposed that on 30th September, 2012 at about 5.30 p.m., on receipt of an input from 28th AR which was corroborated with inputs from CDO/IE Intelligence, that certain

anti-social elements, belonging to the women cadres/members of PREPAK (PRO), were present in and around Hatta area, a search operation was launched. In the search operation, two women suspects were detained near Oriental Hotel for verification. The two suspects were identified as (i) Ningthoujam (N) Wahengbam (O) Pramodini Devi (30) and (ii) Ningthoujam (N) Lourembam (O) Sundari Devi @ Thoi Lingielthoibi @ Priya (28), both D/o N. Ibomcha Singh of Arong Khunou Awang Leikai. From the first suspect, the following material was recovered: (i) four (4) nos. of Lathod Shell, (ii) one (1) no. of live hand grenade, (iii) 500 gms. of PEK explosives, (iv) one (1) Electronic Detonator with wire and (v) one mobile phone (Lemon-D222) along with one Airtel SIM card. While from the other detainee, one mobile phone (Nokia-N1200) along with one Airtel SIM card was recovered from her purse. Both suspects, apparently, indicated that they were active members of PREPAK (PRO). The two detainees were arrested at the spot at 6.30 p.m.

- 16.5 The deponent further states that interrogation of the two suspects revealed that they had joined PREPAK (PRO) organization in the month of July, 2012 and that they were working under the command of one Yaima of Nongpok Sekmai, S/S 2nd Lieutenant of PREPAK (PRO), who was in Myanmar. The suspects, evidently, also disclosed that the aforementioned seized material was brought to Hatta area on instructions of the said person Yaima in connection of raising their celebration on 9th October, 2012. As per the deponent, the suspects indicated that their associates, namely, Khangembam Raghumani Meitei (55), S/o Kh. Angou Singh of Yairipok Malom Maning Leikai, who provided information with regard to the movement of security forces, was staying at a house located at Yairipok Malom. It is averred, accordingly, a police team was rushed and the said person was also arrested at the indicated place at 8.30 p.m. Upon a search being conducted, a mobile phone (Hitech-HTi9) along with one Airtel SIM card was recovered from his possession. This person also revealed that he worked for PREPAK (PRO). It is, thus, averred that the said person was arrested and the articles seized, along with copies of arrest memos and seizure memos, were handed over to the Officer In-charge, Porompat-PS for necessary action (Ex. PW-1C/1). A FIR bearing No. 440(10)2012 PRT-PS (Ex. PW-1C/2) was registered under Section 20 of the 1967 Act read with Section 5 of the Explosive Substance Act, 1908 (for short, 'the ES Act'). The deponent further averred that he examined Jem. A. Sunder Singh of 2nd MR attached with CDO/Imphal East. The seized items were re-seized and a re-seizure memo (Ex. PW-1C/3) was drawn up. The accused persons were produced before the Judicial Magistrate Ist Class, Imphal East, whereupon they were remanded to police custody till 19.10.2012.
- 16.6 It is further averred that during the interrogation of Ningthoujam (N) Wahengbam (O) Pramodini Devi, it was revealed that she was an over-ground member of PREPAK (VC); an organization which she joined with the assistance of one Mr. Sanjok @ Moramba in June, 2012. Her interrogation evidently revealed that on 25.07.2012, she was arrested for her involvement with PREPAK (VC) activities and was, accordingly, arrayed as an accused in FIR No. 132(7)2012KCG-PS filed under Section 17 & 20 of the 1967 Act read with Section 25(I-C) of the Arms Act.
- 16.7 The deponent also averred that it was only after Ningthoujam (N) Wahengbam (O) Pramodini Devi was released on bail that she joined PREPAK (PRO) Organization in July, 2012 as indicated above.
- 16.8 Similarly, Sundari Devi, the other suspect, according to the deponent, was earlier an active member of UNLF; an organization which she joined with the help of S. Tomcha of Wangjing Cherapur, S/s Sgt. in the said Organization. Sundari Devi's induction into the said organization took place in June-July, 2000, where she obtained basic military training for six months. Sundari Devi, apparently, surrendered to IGR South Mantripukhri in September, 2000. Sundari Devi's induction, as indicated above, to PREPAK (PRO) was in July, 2012.
- 16.9 Similarly, Khangembam Raghumani Meitei disclosed that he was an active member of PREPAK (PRO) and that he had joined the said organization with the assistance of S/s Lieutenant Yaima of Nongpok Sekmai in September, 2012. It is averred that Khangembam Raghumani Meitei disclosed that he had handed over the material/articles, which were found in the possession of Pramodini Devi. According to the deponent, he also disclosed that he was responsible in providing information regarding movement of security forces to S/s Lieutenant Yaima.
17. In the fourth (4th) affidavit (Ex. PW-1D/A), the deponent (PW-1) has averred that on 28th August, 2012 at about 1.15 p.m., a reliable information about the presence of some anti-social elements in and around Bashikhong Panthoibi Bazar area with an intention to commit prejudicial activities, such as, extortion of money from general public was received. Accordingly, a police party was rushed to conduct a search in the aforementioned area. In the search, a person by the name of Laiphrakpam Chaoba Meitei @ Ravi, aged 23 years, S/o L. Sanatomba Singh of Bashikhong Panthoibi Bazar, a former S/s private of KYKL under Army No. 70011 of 28th Batch of 2008 and an active member of PREPAK (PRO) (which he joined through one Soibam Manihar Singh, aged 50 years, S/o S. Thambalngou Singh of Bashikhong Panthoibi Bazar, during May, 2012), was detained. His search revealed that he was in possession of one mobile phone (Samsung-SHG-B-200) along with one Vodafone SIM card. These articles were recovered from the right pocket of his trousers.

- 17.1 The deponent further averred that during interrogation, Ravi revealed that he had joined PREPAK (PRO) during August, 2012 with the assistance of Soibam Manihar Singh. In view of the above, Ravi was arrested at 2.30 p.m. on 28.08.2012.
- 17.2. Since the accused Ravi had disclosed that his associate was expecting to meet him at Singjamei Super Market area, a police party was rushed to the said super market. On reaching the said place, the accused pointed out his associate, one, Sh. Yumnam Premkumar Singh, aged 28 years, son of Y. Shamu Singh of Irom Meijrao Awang Leikai, who on identification was arrested and subjected to search of his person. In the search, four (4) extortion notes of PREPAK (PRO) duly signed by one S/s Maj. Erei, which were concealed in the inner vest, and a mobile phone (Nokia-1202) along with one Airtel SIM card, which was in the right pocket of the trouser worn by him, were recovered and seized. The interrogation of Y. Premkumar Singh, also revealed that he was an active member of PREPAK (PRO), who was inducted in the said organization with the help of one Khamba of Kongman Mangjil in August, 2012. Y. Premkur Singh was arrested, accordingly, at 3.00 p.m. and consequently, articles referred to above, were seized. The aforementioned arrested persons, i.e., accused Ravi and Y. Prem Kumar Singh were handed over to the Officer In-charge, Irilbung-PS, who registered an FIR No. 117(8)2012 IBG-PS (Ex. PW-1D/2) under Sections 17 and 20 of the 1967 Act. For this purpose, Hawaldar M. Suresh Singh had drawn up a formal complaint (Ex. PW-1D/1), which was addressed to the Officer In-charge.
18. PW-2 in his first (1st) affidavit has deposed as follows: that on 16th February, 2012 at 10.00 p.m. SI L. Hemchand Singh of CDO/IW submitted a written report to OC-Imphal PS that on the same date at about 2.45 p.m. based on information received that some active members of KYKL were present in and around Chingmeirong Khongnang Anikarak, to commit prejudicial activities, a search was conducted. In the search two suspects were detained who were identified as (i) Thounaojam Jiten Singh, aged 32 years, S/o Th. Nilamani Singh of Chajing Mairenkong Leikai and (ii) Khaidem Naocha Singh aged 29 years, S/o Kh. Gopal Singh of Chajing Mairenkong, an active member of KYKL working under one S/s Finance Officer Litpa @ Hari of KYKL.
- 18.1 It is averred that the accused Jiten, along with one Karam Satra Singh, aged 36 years, S/o Kh. Gopal Singh collected two (2) 9 mm pistols along with explosives from Khurai Thangjam Leikai in the third week of January, 2012 from one Khurai Thangjam to commit prejudicial activities in the 10th Assembly Election slated to be held in the State of Manipur, as per the directions of Litpa. Accordingly, Jiten and Khaidem Naocha Singh were arrested. One mobile phone Nokia C2-03 along with two SIM cards were recovered from the possession of Jiten. Interrogation of Jiten revealed the involvement of one Khaidem Rajen Singh, aged 59 years, S/o (L) Kh. Ananghal of Lilong Chajing Mairenkong. The said person was, evidently, arrested from his residence. On a search being conducted, the following articles were recovered: (i) one (1) 9 mm pistol marked as Mauser B/No. 90018828 along with a magazine and eight round of 9 mm ammunition; (ii) one (1) 9 mm pistol marked as Norinco B/No. 203202 along with a magazine; and (iii) fourteen (14) live rounds of AK ammunitions which were, on production by Kh. Rajen Singh, recovered and seized. The Officer In-charge of Imphal PS registered a FIR, being FIR No. 112(02)12 IPS (Ex. PW-2A/2) under Section 16, 18 and 20 of the 1967 Act and Section 25 of the Arms Act, against the aforementioned three persons.
- 18.2 It is further averred that the earlier investigation officer re-examined the case, and thereafter re-seized the seized items and drew up a re-seizure memo (Ex. PW-2A/1).
- 18.3 It is further averred that the interrogation of the aforementioned three persons had revealed that they were over-ground members of the banned outfit KYKL, which worked under the command of Karam Satra Singh, referred to above, and that KYKL was a constituent member of CorCom (Co-ordination Committee/a Conglomeration of valley based UGs groups). In their interrogation, it was further revealed that they were tasked with the job of destroying and impeding the process of 10th State Legislative Elections, being held in the State of Manipur at the relevant point in time. This object was sought to be achieved by targeting Congress candidates and its workers. It is further averred that investigation had revealed that Karam Satra Singh was involved in hurling hand grenades at the residence of the congress candidates, namely, Waikom Shyama Devi, and her party worker. It is further averred that Karam Satra Singh was involved in conspiring with the aforementioned persons, i.e., Jiten, Kh. Rajan Singh and Kh. Naocha Singh to commit acts of terrorism.
- 18.4 PW-2 in his second (2nd) affidavit has deposed that on 3rd February, 2012 a written report (Ex. PW-2B/1) was submitted by SI N. Jateshwar Singh, CDO/IW that two persons by the name (i) Okram Arvind @ Herachandra @ Yaiphaba, aged 31 years, S/o O. Samungou of Lilong Chajing and (ii) Ningombam Amarchand, aged 31 years, S/o N. Sanachaoba of Moirang Kampu Makha Leikai were arrested in a combined cordon and search operation of Imphal West Commando and 18th Sikh at Konjeng Leikai Keithel Macha. On the search being conducted, following articles were recovered: (i) two (2) Chinese hand grenade along with detonators, (ii) one Lemon mobile handset along with one Vodafone and one Airtel SIM cards, (iii) one Nokia mobile handset along with one BSNL SIM card, and (iv) one LML Vespa (dark blue in colour) having registration No. MND 431. Accordingly, an FIR bearing No. 65(2)/2012 (Ex. PW-2B/2) was registered under Section 17 and 20 of the 1967 Act and Section 5 of the ES Act. The two accused referred to above, in their interrogation, disclosed that they were active members of KCP (MC) Tabungba Group. Okram Arvind disclosed that he was working as

Publicity Secretary of the said organization; while Ningombam Amarchand revealed that he was working under one S/s Commander Sushil @ Kaka.

- 18.5 The deponent (PW-2) averred that during the of investigation, he after re-examination of the police officer concerned and the accused re-seized the seized items on production by the complainant, i.e., SI N. Jateshwor Singh in the presence of two witnesses, namely, A. Keshorjit Singh, C/No. 0901147 and Laishram Okendro Singh C/No. 0901216 of the Singjamei Police Station. The site in issue was also visited by him and a rough sketch of the place of occurrence was drawn, which was accompanied by a proper index. Accordingly, a re-seizure memo was drawn up, which is marked as Ex. PW-2B/3.
- 18.6 During interrogation of accused Okram Arvind, it got revealed that, he used to work the internet to send press note releases of KCP-Tabungba to various local newspapers and electronic media. It is further revealed that the said accused also used the internet to communicate with his superiors in the terrorist organization. The manner in which the contents of the email account of Okram Arvind etc. were mailed is also adverted to by the deponent. A specific averment has been made that the contents of the email sent by the said accused were recovered in the presence of two independent witnesses, who were holding the post of Executive Magistrates. The details of the emails sent by the accused Okram Arvind to various newspapers, broadcasting channels, as also his superiors in the terrorist organization, i.e., KCP-Tabungba, are adverted to by the deponent. The modus operandi, followed by Okram Arvind of using cybercafés for sending press releases of his terrorist organization, i.e., KCB-Tabungba, is also referred to in the affidavit by the deponent. The names of persons who either owned the cybercafés or worked in the same are also detailed out in the affidavit. As a matter of fact, a test identification parade of the accused Okram Arvind was conducted on 22.03.2012, when he was identified by the proprietors and the assistant working in the cybercafe(s) used by the said accused for sending press releases of his terrorist organization. The fact that the witnesses had identified the accused Okram Arvind in the TI parade is also adverted to by the deponent. The details of the three witnesses who identified the accused are as follows:
- (1) Shri Maibam Amba (28), S/o Maibam Amuthoi Singh of Kwakeithel Akham Leikai, Imphal West; working as an Assistant in Global Link, Paona Bazar.
- (2) Shri Khumanthem Rocky (29), S/o (L) Kh. Leikham of Uripok Khoisnam Leikai, Imphal West District; Proprietor of City Cyber, Paona Bazar.
- (3) Shri Hidangmayum Devakishore Sharma (39), S/o (L) H. Nutanchandra Sharma of Brahamapur Nahabam Bhamon Leikai, Imphal East District; Proprietor of Singjamei Cyber Café.
- 18.7 It is averred that the emails seized, in particular, email dated 20.11.2010, clearly established that the KCP group and the accused in particular are exhorting persons to wage a war against the Government of India. The email dated 20.11.2010, which is addressed to editors and news editors of local news broadcasting agencies, provocatively incites the people of the State of Manipur to acquire freedom by violent means. The exact expression used in the press, as adverted to in the affidavit is, "*freedom comes from the barrel of the gun*".
- 18.8 In his third (3rd) affidavit, PW-2 has averred that on 16th , October 2012, based on reliable information that there was movement of cadres of banned outfit in the general area of Langjing; a search operation was conducted by a team of 18 Sikh. It is during this operation that a suspect was detained at 11.40 a.m. near Nilo Oil Pump, Langjing. The detainee was identified as S/s 2nd Lt. Chanam Dhananjay, aged 33 years @ Ali, S/o Chanam Ingocha, R/o Thambalkhong Kongba Laishram Leikai, Imphal East. On a personal search of the detainee being conducted, the following articles were recovered: (i) 9 mm pistol with magazine, (ii) four (4) live rounds of 9 mm, (iii) one Lemon mobile with 3 SIM cards, and (iv) one purse containing Rs.1,400/- Driving Licence and Voter ID cards.
- 18.9 It is further averred that, on interrogation, the accused revealed that he was trained in 1999 at Yangching, Eastern Nagaland, and that he was part of the 17th Batch which consisted of 128 persons and had been given Basic Military Training by the underground group. The accused, according to the deponent, was allotted a number being: Army No. 1095. Evidently, the accused was working in Intelligence Wing of UNLF, under one S/s Tomba, GSO-1 Int. of Patlou Camp of UNLF. His job, apparently, was to gather and pass and pass information about the movement of the security forces and their location in the Imphal area. One of the purposes of such activity was to help the underground organization to plant IEDs. The accused revealed that he had a role to play in fixing the location of the IED at Keishampat Junction, on 5.09.2002, the explosion of which resulted in injury to two army personnel. The accused also revealed, according to the deponent, that he was involved in recruiting persons for his organization UNLF. Accordingly, the accused was arrested and FIR No. 86(10)2012 (Ex. PW-2C/1) Patsoi PS under Section 16 & 20 of the 1967 Act read with Section 25 (1-C) of the Arms Act was registered.
- 18.10 As in the other case, the deponent being the Investigating Officer (I.O.), he re-examined the complainant and the accused whereupon the seized items were re-seized. A re-seizure memo (Ex. PW-2C/2) was, accordingly, drawn up.
19. The accused was evidently arrested on two earlier occasions, which resulted in the following two FIRs being registered against him: FIR No. 64(3)2002 MRG PS and FIR No. 297(11)03 IPS, under Section 10 and 13 of the 1967 Act. In the second case, the accused was detained under the National Security Act, 1980 and lodged in a

central jail. The accused was, however, released after completion of his tenure in February, 2005. In the last week of July, 2005, he again joined the UNLF. For five months the accused, apparently, stayed at Namphalong, Myanmar. The accused rose from the rank of a Corporal in UNLF to that of a Sergeant Major in November, 2009. It is averred that in May, 2012 the accused entered Imphal through Aizawl to conduct prejudicial activities, one of which, as indicated above, resulted in the explosion of an IED on 05.09.2012 planted at Keishampat Junction.

20. PW-3 in his first (1st) affidavit (Ex. PW-3/A) has deposed that on 20.09.2012, on the basis of the report/complaint (Ex. PW-3/1) of H. Manihar Singh, Hav. No. 0307786 Comd. G-64, CDO Unit, Thoubal, FIR No. 163(09)012 KCG PS under Section 18(B)/20 of the 1967 Act was registered by Insp. Y. Joy Kumar Singh. He has further deposed that on the basis of specific information that some children are being taken to Moreh via Pallel to be recruited as child soldiers for some certain banned underground outfits; accordingly, cordon and search operation was conducted at Pallel Bazar near Police Station Check Post, at about 9.00 a.m. During the search operations, three suspects were detained; one male and two ladies. The suspects were accompanied by a young male child; aged sixteen (16) years. The male was identified as Phairenbam Jiten Singh, aged 40 years, S/o Ph. Manichou Singh of Wangoo Naodakhong; while the two ladies were identified as Phairenbam (O) Tababi Devi @ Ningboi Mate, aged 38 years of Wangoo Naodakhong and Lamshi Guite, aged 30 years, D/o (L) Ngamjang Guite of Churachandpur Tuibong Lajon Veng. The accused Phairenbam Jiten Singh indicated that Phairenbam (O) Tababi Devi was his wife, while Lamshi Guite was a cousin of his wife. The male child, according to the deponent, identified himself as Moirangthem Abung Singh, S/o (L) M. Samjai Singh and M (O) Bina Devi of Moirang Ithing. The child was evidently being taken, without his knowledge, to Moreh for the purposes of being handed over to the banned underground outfit Cor.Com, which is the constituent of PLA, UNLF, KYKL, KCP, PREPAK, PREPAK PRO & UPPK. The transaction was to be concluded through one Mr. Bobo of Moreh, who was a member and activist of CorCom. The testimony revealed that Bobo of Moreh was assisting CorCom in procuring child soldiers. The forged driving licence dated 19.09.2012, got issued through DTO Churachandpur, by the accused Phairenbam Jiten Singh and his two associates, in the name of the said child, was seized. The three accused were, accordingly, arrested and the aforementioned FIR was registered. During the course of investigation by the previous Investigating Officer, the driving licence and the seizure memo, after due examination of the police officers and the accused, were re-seized. A re-seizure memo (Ex. PW-3/3) was drawn up. The minor was handed over to Sh. A. Bijoy Singh, Member Child Welfare Committee, Thoubal, who after fulfilment of due formalities handed over the child's custody to his guardians. It is further averred that the DTO Churachandpur was examined and his statement was recorded under Section 161 of the Criminal Procedure Code, 1973 (in short, 'the Code'). His examination revealed that a forged driving licence No. 15156/Ch was made out in the name of the aforementioned minor. It also came to light that the medical certificate and the residential and birth certificate accompanying the licence were also forged. Accordingly, the deponent averred that the investigations having been completed, offences not only under Section 18-B read with Section 38 of the 1967 Act were made out, but also those under Sections 420, 468 and 511 of the Indian Penal Code, 1860 (in short, 'IPC') were established against the accused persons.
21. It is pertinent to note that Sh. A. Ghanshayam Sharma, SDPO, Thoubal District, apart from being referred to as PW-3, is also referred to as PW-6. As PW-6 he has filed three affidavits (Ex. PW-6A/A dated 17.03.2014, Ex. PW-6A/B dated 29.03.2014 and PW-6B/A dated 17.03.2014). These three affidavits were taken on record on by the Tribunal vide order dated 01.04.2014.
22. PW-6 has thus deposed that on 13.09.2013, at about 7.25 p.m., in a powerful bomb explosion inside a kutchra barrack located on the cover slab of Naga Nullah near Nagamapal Phougeishangbam Leikai (which is used as sheltering place for the labourers of Simplex Project Limited, Kolkata), several labourers got seriously injured. Since, it was suspected that the said act was committed by valley based terrorist organization to terrorise the public at large, FIR No. 261(09)2013 (Ex. PW-6A/2) under Sections 121, 121-A, 326, 307 and 34 of the IPC, Section 3 of the ES Act and Section 16 and 20 of the 1967 Act, was registered *suo motu* by the City PS, against unknown accused. He has further deposed that, during the course of investigation, with the assistance of the experts of the Forensic Science Laboratory (FSL), Pangei, the following articles were collected from the spot and seized, and a seizure memo being Ex. PW-6A/3 was drawn up:-
 - (i) One lever having markings K31 FUZE EC-84K 810-025X-R packed and marked as S1.
 - ii) Piece of metallic case packed and marked as S2.
 - (iii) Metallic pieces collected from the surrounding of the crater packed and collectively marked as S3.
 - (iv) Metallic fragments of case packed and collectively marked as S4.
 - (v) Debris from the crater packed and marked as S5.
 - (vi) Metallic fragments collected from the adjacent room located at the eastern side packed and collectively marked as S6 and S7.
 - vii) Control soil sample collected from the southern side of the crater at a distance of 20.4 metres packed and marked as 'C'.

The above seized articles from the scene of crime have been sent to CFSL, Chandigarh for examination.

- 22.1 It has further been deposed by PW-6 that altogether twenty (20) persons got injured in the blast, out of which, total nine (9) labourers succumbed to their injuries – eight (8) at RIMS Hospital and one (1) at Shija Hospital. After conducting post-mortem of all the deceased persons, their dead bodies were sent to their native State, i.e., Assam.
- 22.2 It is further averred by PW-6 that, during investigation, it was revealed from source reports that the crime was committed by the cadres of RPF/PLA under the instructions of one Jayanta. On 24.02.2014, in the English daily newspaper The Telegraph, it was published under the headlines '*Meet Hate Crime Specialist*' that the said crime was committed by one W. Jayanta Singh alias Lakpa @ Dilip of KYKL. The Manipuri edition of local daily newspaper Naharolgi Thoudang also published the same version on 25.02.2014. It is averred that the investigation has revealed that the crime was committed by the CorCom activists.
- 22.3 PW-6 has also by way of additional affidavit of evidence dated 29.03.2014 (Ex. PW-6A/B), tendered on 04.04.2014 brought on record certain facts, which inadvertently were not mentioned in his earlier affidavit dated 17.03.2014. He has deposed that, during investigation, a message was received from Porompat PS vide Memo No. 1/4/PRT-PS/2014 dated 13.01.2014 that one accused person, namely, Sanasam Rabi Singh @ Suraj, aged 28 years, S/o S. Loken Singh of Pishum Oinam Leikai, PO & PS Singjamei Imphal West District, Manipur (who is an active member of PREPAK (PRO), arrested in connection with FIR No. 10(01)2013 PRT PS and thereupon held in custody at Porompat PS), was involved in the present case. The said accused was formally arrested on 15.01.2014 in connection with the present case. Furthermore, the accused was again formally arrested in connection with another case being: FIR No. 176(03)2012 of Imphal PS under Section 307/427 IPC, Section 3 of the ES Act and Section 1/20 of the 1967 Act.
23. In the last affidavit sworn by PW-6, he has deposed that on 29.10.2013 at about 6.00 a.m., in a powerful bomb suspected to be an IED explosion at the southern side of Bhairondan Maxwell Hindi Primary & High School, Thangal Bazar, Imphal, five (5) persons were injured and the southern wall of the school and classroom was also damaged. It was suspected that it was planted and targeted by activist of valley based terrorist organization. Thus, FIR No. 285(10)2013 (Ex. PW-6B/2) under Section 307/326/427 IPC, Section 3 of the ES Act and Sections 16(1) & 20 of the 1967 Act was registered *suo motu* by the City PS, against unknown accused persons. The attested copy of the report/complaint, which was drawn up is marked as Ex. PW-6B/1. During investigation, it was revealed that one blue Maruti Van, bearing registration No. MN 01 X 7223 and one white Tata Magic vehicle bearing registration No. MN 06 L 5318 was also damaged in the blast. With the assistance of the experts of the FSL, Pangei, the following articles were collected from the spot and seized, and a seizure memo (Ex. PW-6B/3) was drawn up:-
- i) Soil sample from the crater.
 - (ii) A metallic piece from the crater.
 - (iii) Metallic balls and pieces from the blast site.
 - iv) Pieces of plastic wires from the crater.
 - (v) Control soil sample from NE direction.
 - (vi) Scrapping from the wall.
 - (vii) Blood sample collected from the blood stain nearby the crater.
 - (viii) Control cotton sample.
- The above seized articles/samples have already been sent to CFSL, Chandigarh for expert opinion.
- 23.1 PW-6 has further deposed that investigation of the case so far reveals that the crime was committed by the activists of CorCom with the intention to terrorize general public, more particularly, the non-Manipuris and the security personnel deployed in the area.
24. PW-4 in his first (1st) affidavit (Ex. PW-4A/A) has deposed that on 06.10.2012 at 11.45 p.m., L. Thangminlen Khongsai, Hav. No 012007245 of 3rd IRB reported that at about 10.00 p.m., based on information about presence of UG cadres in general area Waithou, a joint team of 28th AR & CDO/TBL launched an operation, cordoned off the area and a man moving away in a suspicious manner was detained, who, on verification, was identified as Md. Basei Tomba @ Keina, aged 19 years, S/o Md Tayai of Lilong Ushoipokpi Thongmakha, GP CorCom (UPPK). The said accused revealed that he was sent to carry out attacks on security forces in view of the upcoming raising day of PREPAK on 09.10.2012. The deponent further averred that on search being conducted, the following articles were recovered: (i) one (1) 9 mm pistol, (ii) one (1) magazine, (iii) four (4) live rounds of 9 mm, (iv) approx. 750 gms. of explosives with pellets, (v) one (1) electrical detonator and (vi) one (1) mobile handset. The deponent further averred that he being the Investigating Officer of the case, he re-examined the complainant L. Thangminlen Khongsai, Hav.; re-seized the seized items in the presence of witnesses and recoded their statements separately. It is also averred that the place of occurrence was inspected by him and a rough sketch with a proper index was drawn. Accordingly, he drew up a re-seizure memo, which is marked as Ex. PW-4A/3.
- 24.1 It is further averred, that on interrogation, the accused disclosed that he joined the banned outfit UPPK in October, 2011 with the assistance of one Md. Ithoi, aged 40 years, of Sangomshang; he received basic military training at Taka, Myanmar for 20 days; was allotted a number being Army No. 192; and was transferred to

Thoubal with a directive to attack security forces, apart from extorting money for raising funds for aforementioned outfit. The deponent averred that the accused also disclosed that on 06.10.2012 at about 6.30 p.m., while he was planning to attack security forces by using explosives at Waithou area, he was arrested. Thus, on the basis of the aforesaid complaint/report (Ex. PW-4A/1) dated 06.10.2012, FIR No. 103(10)2012 LIL-PS (Ex. PW4-A/2) under Section 17/20 of the 1967 Act, Section 25(1-C) of the Arms Act and Section 5 of the ES Act, was registered by Insp. Md. Chaoba on the same day itself.

25. In his second (2nd) affidavit, PW-4 has deposed that on 22.11.2012, acting on the specific information that an activist of KYKL was present at his house, a combined team of CDO/TBL and 15th AR, under the command of OC-CDO-TBL, raided the house of an individual, who was later identified as Ningthoujam Ngobi Singh, aged 45 years S/o (L) N. Chonjon Singh of Wangjing Hodamba Maning Leikai. It is stated that the said accused revealed that he is an active cadre of KYKL; working under the command of S/s Deputy Finance Secretary Ingba of KYKL. Accordingly, he was arrested at 2.55 p.m.
- 25.1 It is further averred that upon his disclosure, the following articles were discovered: (i) one (1) 9 mm pistol along with three (3) live rounds of 9 mm ammunition loaded in the magazine, (ii) one (1) Chinese hand grenade, (iii) twelve (12) nos. demand letters of KYKL signed by Deputy Finance Secretary addressed to different individuals of Thoubal district found concealed inside the arm of a sofa kept in his living room and (iv) one Samsung mobile handset with SIM Card No. 9615074418, were seized. The accused further revealed that he had been indulging in extortion of money for KYKL in association with one R.K. Mobisana Singh @ Loken, 35 years, S/o (L) R.K. Sanahal Singh of Wangjing Hodamba Maning Leikai, who is also an activist of KYKL, from the shops and business establishments located in and around Wangjing and other places of Thoubal District. The accused further disclosed that earlier also he was arrested from his house in connection with FIR No. 103(7)2010 under Section 17/20 of the 1967 Act, but was released on bail. The accused also revealed that on 21.11.2012 at about 4.00 p.m., the said person, i.e., Mobisana gave him a mobile phone and one Chinese hand grenade wrapped in carbon paper and told him that some persons will contact him to deliver the grenade. However, on 22.11.2012 at about 9.45 a.m., he was arrested along with the seized articles.
- 25.2 PW-4 has further averred that on 29.11.2012, two persons, (i) Elangbam Shyamkanhai @ Kanhai Singh, aged 38 years, S/o E. Mangjao Singh of Khangabok Lamlong and (ii) Yendrembam Rejenkumar @ Rajen, aged 39 years, S/o Y. Apabi Singh of Wangoo Mamang Sabai Leikai, were formally arrested in connection with the above referred case. During interrogation, the first person disclosed that in October, 2012, he started working as an over-ground worker of KYKL with the help of one Mr. Hari of Wangoo and as directed by him, he proceeded to Kakching Lamkhai on 22.11.2012, but was arrested at about 2.00 p.m.
- 25.3 The second person Rajen, during interrogation, disclosed that he started working for KYKL from October/November, 2012 under one S/s Udoi @ Hari of Wangoo in the form of delivering demand letters and transportation of arms and ammunition in order to earn money. On 22.11.2012, as directed by the said Mr. Udoi @ Hari, he boarded a Kakching bound Magic Van at about 11.00 a.m. to collect some money and articles for and on his behalf, but on reaching Kakching Lamkhai, he was arrested.
- 25.4 PW-4 has also deposed that all the accused fully admitted to the charges levelled against them. Thus, it is clear that they are directly or indirectly involved in carrying illegal items belonging to KYKL and even earned money for illegal activities from KYKL cadres.
- 25.5 PW-4 has further deposed that on the basis of the report/complaint dated 22.11.2012 made by S. Suresh Singh, Hav. No. 13200412 of 3rd IRB now attached to CDO-TBL, FIR No. 398(11)2012 TBL-PS (Ex. PW-4B/1) under Section 17/20 of the 1967 Act, Section 25(I-C) of the Arms Act and Section 5 of the ES Act, was registered by SI Md. Kamaruddin on the same day itself.
26. PW-4 in his last affidavit has deposed that on 08.10.2012, on receipt of specific information that some cadres of PLA/RPF including women cadres are loitering in and around Thoubal Bazar area to carry out prejudicial activities, such as, detonating IEDs, firing at security forces at an opportune moment and to intimidate general public to stay indoor by way of firing, etc. at general places, cordon and search operation was conducted. During the operation, it was found that one man and one woman were moving around in a suspicious manner towards Thoubal Bazar. They were stopped for verification by the team, which included women police officers. On searching, a green-coloured polythene bag carried by the said man, the following articles were recovered: (i) one (1) IED wrapped by newspaper and transparent cello tape weighing aprox. 5 kgs., (ii) one (1) alkaline battery pack sealed marked as Sanyo (6LP22/9V), (iii) one (1) booster properly sealed with black tape, (iv) one (1) milky white remote control marked as RS with steel antennae, and (v) two (2) nos. of electronic detonators inserted in a black-coloured metal pipe. The detainee was identified as Thokchom Sambhi @ Khamba @ Jack, aged 29 years, S/o Th. Shenjai Singh of Heirok Pt. III Thokchom Leikai. On searching lady's orange-coloured handbag by lady police officer, the following articles were recovered: (i) one (1) hand grenade, (ii) one Nokia mobile handset M. No.7230 along with battery and one Airtel SIM Card No. 8413982134, and (iii) one voter card. The lady detainee was identified as Mayengbam (N) Ningthoujam (O) Memacha Devi @ Omita @ Thoibi, aged 33 years, W/o (L) M. Dhamu Singh of Lilong Chajing Chingkhong Leikai. Both accused were arrested at the spot at 1.20 p.m. and the aforesaid recovered articles were seized.

- 26.1 PW-4 has further deposed that, on verification, they disclosed that both of them were working under the command of Mayanglambam Nanao of Singjamei Kshetri Leikai, who is an IED expert of PLA/RPF. Memacha Devi revealed that: the IED was handed over to her by the said Mayanglambam Nanao on 07.10.2012 at Lilong Bazar. Thokchom Sambhi revealed that: he is an active hardcore member of PLA/RPF; he obtained basic training at Tannal (Burma) under Army No. 1832 of 99th Batch of 2009; that he is presently working in demo/auxiliary unit; the IED explosion/attack, which took place on 14.09.2012 at 4.20 p.m. at Heirok Pt. III Tomal Makhong against the patrol party of 116 BSF Bn., was carried out by him in association with Memacha Devi. Both accused accepted the charges levelled against them.
- 26.2 The said deponent has further deposed that, during interrogation of the accused Thokchom Sambhi, it got revealed that he had joined PLA in November, 1999 with the assistance of one K. Somo Singh @ Ibochou of Yairipok Malom Mamang Leikai, the then S/s Corporal of PLA; got basic military training along with 116 new members including 16 females at Delha, Myanmar, for 45 days and was allotted Army No. 1919. He also disclosed that he was earlier arrested on 10.02.2002, but was released on bail in April, 2002. Thereafter, he came to know the said Mayanglambam Nanao and Memacha Devi through Thomba Singh @ Yaima @ Chaoba of Heirok Pt. II, who directed both of them to explode IEDs and attack security forces at an opportune moment in Thoubal area on the eve of Raising Day Ceremony of PLA to be held on 25.09.2012. For this purpose, materials used for IEDs and detonators were handed over to them and Memacha Devi was directed to transport the same from one place to another; and since on 08.10.2012 at around 7.30 a.m., the said Mayanglambam Nanao instructed him through mobile to collect explosives from Thoubal Bazar, he proceeded to the said place where he was arrested.
- 26.3 PW-4 also averred that during interrogation of the accused Memacha Devi, she disclosed that she had joined PLA in August, 2002 through the said Mayanglambam Nanao; after joining the said organization, she became acquainted with Thomba Singh, who instructed her to explode IEDs and fire at security forces on the eve of the Raising Day Ceremony of PLA to be held on 25.09.2012 along with her associates. She was also directed to transport the materials used in IEDs from one place to another. She admitted that she took part in the exploding one IED at Heirok Pt. II, mentioned above, in which one BSF personnel was injured. She further disclosed that on 08.10.2012, she collected the seized material from the said Mayanglambam Nanao and came to Thoubal Bazar to hand over the same, as directed, to Thokchom Sambhi, but she was arrested.
- 26.4 On receipt of the report/complaint (Ex. PW-4C/1) dated 08.10.2012 made by M. Dhanajit Singh, Hav. No. 05076579 of 5th MR now attached to CDO-TBL, FIR No. 364(10)2012 TBL-PS (Ex. PW-4C/2) under Section 20 of the 1967 Act and Section 5 of the ES Act, was registered by SI Md. Kamaruddin on the same day itself. The deponent has also revealed that as the Investigation Officer, he examined the complainant M. Dhanajit Singh as well as the two accused persons, and that he had re-seized the aforementioned seized articles in the presence of witnesses. It is averred that a re-seizure memo was drawn up being Ex. PW-4C/3.
27. PW-5 in his affidavit (Ex. PW5/A) has averred that on 15.05.2012, on receipt of specific information regarding presence of KCP (K.K. Nganba) cadre in the general area of Top Chingtha/Lamlai, a search operation was launched and, consequently, one person was apprehended. His search was led to recovery of the following articles: (i) one (1) 9 mm pistol, (ii) one (1) magazine and (iii) three (3) live rounds. On verification, he was identified as: Kh. Punshi Meitei, Rank - Area Finance Secretary, S/o (L) Ninthouren, R/o Chingtha/Lamlai, PO & PS Yairipok, District Imphal East.
- 27.1 The accused revealed that he had joined KCP in 2008, and that he worked under one Ranjeet Thapa (his younger brother and an important member of KCP, stationed at Nepal) for carrying out extortion activities. The deponent averred that the accused revealed that he was handed over the aforementioned seized articles in February, 2012 by an unknown KCP member, who was sent by his brother Sh. Ranjeet Meitei @ Ranjeet Thapa. Accordingly, since then, the accused has been extorting money from general public, govt. employees, govt. offices, businessmen, etc. in and around Thoubal District; the money received from extortion, according to the accused, was sent to his younger brother Ranjeet Thapa as fund for KCP, to be used in procuring arms and ammunitions for use of KCP members in waging war against the lawfully established govt. for liberating the State of Manipur. The deponent averred that the accused had indicated that he had carried out similar tasks till his arrest on 15.05.2012 at 3.45 p.m. at Top Chingtha/Lamlai.
- 27.2 It has further been deposed by PW-5 that, during further investigation, one mobile handset marked as KZG U505 with Airtel SIM Card No. 9862844424 was seized, at the instance of the accused, on 20.05.2012. PW-5 has also deposed that the accused fully admitted to the charges levelled against him.
- 27.3 Based on the report dated 15.05.2012 (Ex. PW-5/1) of Sub. Singh, J.C. No. 153468 of 15 Assam Rifle C/o 99 APO, FIR No. 76(5)12 YPK-PS (Ex. PW-5/2) was filed under Section 17/20 of the 1967 Act and Section 25 of the Arms Act by Insp. P. Ranbir Singh on the same day itself. The deponent averred that he being the Investigating Officer in the case, he examined the original complainant and the accused persons. It is further averred that he re-seized the seized items and the seizure list and thereupon drew up a re-seizure memo (Ex. PW-5/3). The deponent further averred that he also visited place of occurrence, however, no incriminating articles were available at the stop, though, a rough sketch of the place of occurrence was drawn, which was accompanied by a proper index.

28. PW-7 in his affidavit (Ex. PW-7/A) has deposed that on 13.09.2013 at 10.35 a.m., an information was received that one IED had exploded near a waiting shed at Khurai Laishram Leikai near Khurai Popular High School, as a result of which, one diesel auto bearing registration No. MN 04 4578 was partly damaged, though there was no casualty. It was suspected that the bomb was planted by valley based underground organization with an intent to kill security personnel and general public moving around in the area. With the help of experts of FSL, Pangei, some incriminating articles were recovered from the spot and subsequently seized.
- 28.1 On the basis of the said report/complaint (Ex. PW-7/1), FIR No. 270(9)013 (Ex. PW-7/2) was registered under Section 307/427/34 of the IPC, Section 3 of the ES Act and Section 16(1)(b)/20 of the 1967 Act *suo motu* by Insp. Chandrakumar Singh, Porompat PS, against suspected valley based underground organization.
- 28.2 During cordon and search operation, one suspected youth was detained, who, on verification, was identified as Anjan Thapa @ Kaiu, aged 25 years, S/o (L) Gope Thapa of Pangei Nepali Basti, PS Heingang. The search of the accused led to the recovery of the following articles: one (1) Samsung mobile model No. GT-E1282T along with one (1) Vodafone SIM Card No. EH183104U80069; and one (1) Idea SIM Card No. 8991849000028427221. These articles were seized and a seizure memo (Ex. PW-7/3) was, accordingly, drawn up.
- 28.3 It is averred by the deponent that, on interrogation, the said accused disclosed that: he had joined UNLF in 2006; was an active member of UNLF; and the bomb, which had exploded near Khurai Popular High School, was planted by him.
29. PW-8 in his affidavit (Ex. PW-8/A) has deposed that the Meitei Extremist Organizations, more particularly, RPF/PLA, UNLF, PREPAK, KYKL and KCP continue to indulge in subversive activities, which not only affect, adversely, the law and order situation in the State, but also pose a serious threat to the internal security of the country.
- 29.1. -8 has further deposed that the main objective of the Extremist Organizations, as stated in paragraph 3 of his affidavit, is to secede Manipur from the Union of India and to form an independent sovereign country. The liberation of the State of Manipur from the dominion of India is the core object of the said Extremist Organizations. While giving a brief reference to the operational activities of these Organizations, as set out in paragraph 4 of his affidavit, it has been averred by PW-8 that these Extremist Organizations do not consider themselves as part of the State of Manipur or the Union of India. Their members, at every conceivable opportunity, seek to disrupt normal civilian life and State activities by resorting to violence, terror, threat and the like, with the view to achieving their objective of establishing an independent State of Manipur. Furthermore, for the said purpose, they have acquired weapons, arms and ammunitions. It has further been deposed that these Extremist Organizations indulge in extending threat to the public at large to extort money and, in the event of non-cooperation, seek to eliminate persons on such demands being resisted. Thus, they create terror and collect money to further their unlawful activities. It has further been averred that in the event of a visit by the Prime Minister or any other top dignitary, they exhort the public to boycott the function and threaten them with dire consequences in case they attend the function. The deponent has also stated that the said Extremist Organizations received assistance from the foreign countries, particularly, the neighbouring countries.
- 29.2 PW-8 has further averred that during the period spanning from 13.11.2011 to 08.07.2013, total 846 FIRs have been registered under the 1967 Act against the Meitei Extremist Organizations, the break-up of which is as under :

S.No.	Name of the Organization	No. of FIRs registered
1.	Revolutionary Peoples' Front (RPF) / Peoples' Liberation Army (PLA)	146
2.	United National Liberation Front (UNLF)	104
3.	Peoples' Revolutionary Party of Kangleipak (PREPAK)	226
4.	Kanglei Yaol Kanba Lup (KYKL)	117
5.	Kangleipak Communist Party (KCP)	253
TOTAL		846

- 29.3 Attested copies of the aforesaid FIRs registered in various police stations in the State of Manipur against RPF/PLA, UNLF, PREPAK, KYKL and KCP as well as seizure memos, have been filed as Annexure A-1 along with the affidavit of PW-8, which have been collectively exhibited as Ex.PW-8/Vol.I-A/1, Ex.PW-8/Vol.I-B/1, Ex.PW-8/Vol.I-C/1, Ex.PW-8/Vol.I-D/1 and Ex.PW-8/Vol.I-E/1 respectively.
- 29.4 Annexure A-2 filed along with the affidavit of PW-8 contains copies of demand letters, extortion letters, extortion notes, FIRs and correspondences exchanged by the said Extremist Organizations, which were seized during the course of investigation, as well as, at the time of arrest of some of the members of these Extremist Organizations. The said documents have collectively been exhibited as Ex.PW-8/Vol. II/1.
- 29.5 Attested with the affidavit of PW-8, newspaper reports/clippings for the 13.11.2011 to 08.07.2013 reflecting the activities of these Extremist Organizations have been filed as Annexure A-3. Since what has been filed are, in fact, photocopies of newspaper clippings/reports and in view of the provisions of the Indian Evidence Act,

1872 (in short, 'the Evidence Act'), the same have not been exhibited, but collectively marked as PW-8/Vol.III/1.

- 29.6 Along with the affidavit of PW-8, Annexure A-4 has been filed containing a brief note on the aims and objectives of the CorCom, details of justification for declaring it as unlawful association, list of 43 cases registered against it during the period 13.11.2011 to 08.07.2013, brief of FIRs, documents issued by it and newspaper clippings relating to its press releases. The same have collectively been exhibited as Ex.PW-8/Vol.IV/1, except the brief note and press releases.
- 29.7 PW-8 has also deposed that a perusal of the exhibits placed record of this Tribunal would reveal unlawful anti-national activities of the Meitei Extremist Organizations of Manipur and their members.
30. PW-9 has tendered two affidavits. The first affidavit is tendered as Ex. PW-9/A, while the second affidavit, which is an additional affidavit, has been tendered as Ex. PW-9/B. In these affidavits, PW-9 has averred that militant activities are mainly carried out in the valley area of Manipur, by the aforementioned Extremist Organizations; and that in view of the prevailing security situation in Manipur, the entire State excluding Imphal Municipal Area has been declared as '*disturbed area*' under the Armed Forces (Special Powers) Act, 1958, from time to time, and is valid upto 30.11.2014.
- 30.1 PW-9 has further deposed that the main declared objective of the said Extremist Organizations is to establish a sovereign State of Manipur by secession of Manipur State from India and towards this end, they have been engaging in unlawful activities. The said Extremist Organizations have not only been actively involved in a strident campaign against non-Manipuri residents and have repeatedly been issuing directives to them, to leave the State, but are also maintaining active links with the National Socialist Council of Nagaland (Isak Muivah), the National Socialist Council of Nagaland (Khaplang) and other extremist organizations, with a view to secure their assistance for procurement of arms as also for training of their cadres, so as to achieve their secessionist objectives. They maintain camps, training centres and arsenal depots in Bangladesh and Myanmar, and also have recently established their base(s) in Nepal.
- 30.2 It is further averred by PW-9 that the law and order situation in the State of Manipur is fragile and remains a cause of concern. The details of incidents of violence propagated and committed by the said Extremist Organizations and their activities, relations and close links with other extremist organizations and foreign army officials, have been stated by the deponent in paras 10 to 17 of his affidavit dated 17.02.2014. A brief resume of aims/objectives and violent activities of the said Extremist Organizations, filed along with the said affidavit, has been marked as Mark.PW-9/1. The details of major incidents of violence committed by the Meitei underground outfits during the period 02.01.2013 to July, 2013, list of cases registered against CorCom and its constituents between the period 13.11.2011 to 08.07.2013, and the number of cases registered against five Meitei Extremist Organization, namely, RPF, PLA, UNLF, PREPAK and KCP during the period 13.11.2011 to 08.07.2013 have been filed along with the said affidavit, in the form of annexures marked as PW-9/2, PW-9/3 and PW-9/4 respectively.
- 30.3 PW-9 has stated the grounds and reasons for declaring the Extremist Organizations and their factions as '*unlawful association*' in para 20 of the said affidavit, which are more or less similar to as have been mentioned in the Gazette Notification dated 13.11.2013. The said Gazette Notification both in Hindi and English languages has been filed along with the affidavit and is appended at pages 58 to 63 of Part-II of the Tribunal's record. The Gazette Notification is exhibited as Ex.PW-9/6.
- 30.4 PW-9 in his additional affidavit (Ex. PW-9/B) has adverted the fact that apart from inputs received from the State Government of Manipur about the unlawful activities of the aforementioned Extremist Organizations, the Central Government has also received information from Intelligence Agencies and Central Forces regarding continued unlawful activities of the said Extremists Organizations and their various factions during the period in question.
- 30.5 PW-9 has clearly averred that the additional material, which was placed before the Tribunal in a sealed cover, and after examination returned to Mr. S.C. Rawat, Section Officer, Ministry of Home Affairs, New Delhi, who was present in Court on the very same date, i.e., 22.04.2014, cannot be brought on record, as the reports and inputs contained therein were privileged and confidential documents, which could not be made available to any third party except the Tribunal. It is averred by PW-9 that the Central Government is of the view that it would not serve public interest if such intelligence reports and inputs are disclosed to either the banned Extremists Organizations or any other third party. PW-9 further averred that since the unlawful activities conducted by the aforementioned Extremist Organizations were clandestine in nature, the source of Central Government's inputs and information qua their activity requires confidentiality. The deponent averred that the non-disclosure of the inputs and information, in the instant case, is in the public interest. PW-9 has, thus, stated that the Tribunal may confirm the aforesaid Notification dated 13.11.2013 thereby declaring the aforementioned Extremist Organizations as '*unlawful associations*'.

ANALYSIS

31. Having perused the record and heard the counsels for the State Government of Manipur and the Central Government, it axiomatically emerges that in order to come to the conclusion one way or the other, whether or

not the Notification dated 13.11.2013, should be sustained, one would have to ascertain the sufficiency of cause available with the Central Government to reach the conclusion, which it has, that is, the Organizations referred to therein, were unlawful associations.

- 31.1 Pertinently, the Notification dated 13.11.2013 has been brought into effect from the date of its publication in the official Gazette. Therefore, the ban on the aforementioned Extremist Organizations would continue unless this Tribunal would come to a different conclusion, as regards sufficiency of cause. It would, therefore, be relevant to briefly advert to the definition of ‘unlawful association’ and ‘unlawful activity’ as provided in the 1967 Act. Unlawful association has been defined under Section 2(p). Clause (i) of Section 2(p) provides that unlawful association is an association, which has as its object any unlawful activity or which encourages or aids persons to undertake any unlawful activity or comprises of members who undertake any such unlawful activity. Clause (ii) of Section 2(p) brings within its fold those associations, which have as their object any activity, which is punishable under Section 153A or Section 153B of IPC or which encourages or aids persons to undertake any such activity or even those organizations whose members undertake any such activities.¹
- 31.2 Section 153A of the IPC broadly treats as offences actions, which promote enmity between different groups on the ground of religion, race, place of birth, residence, language etc. whether by words either spoken or written or by signs or by visible representation or otherwise. It also treats acts, which are prejudicial to maintenance of harmony between different religious, racial, language or regional group or caste or community and which disturb or are likely to disturb public tranquillity, as offences. Organization of any exercise, movement, drill or activity intending that participants of such activity shall use criminal force or violence or knowing it to be likely that participants in such activity will use or be trained to use criminal force or violence or participates in such activity intending to use or be trained to use criminal force or violence or knowing it likely that participants in such activity will use or be trained to use criminal force of violence against religious, racial, language, regional group or caste or community and any such activity for any reason whatsoever, causes or likely to cause fear or alarm or feeling of insecurity amongst groups referred to above.
- 31.3 Similarly, Section 153B of IPC *inter alia* treats as offence actions of any person in the form of words, either spoken or written or in the form of signs or visible representation or otherwise, which result in making of or publication of any imputation that any class of persons cannot by reason of their being members of any religious, racial, language or regional group or caste or community bear true faith and allegiance to the Constitution of India as by law established or uphold the sovereignty and integrity of India.

¹ “153-A. Promoting enmity between different groups on grounds of religion, , place of birth, residence, language, etc., and doing acts prejudicial to maintenance of harmony.—

(1) Whoever—

(a) by words, either spoken or written, or by signs or by visible representations or otherwise, promotes or attempts to promote, on grounds of religion, race, place of birth, residence, language, caste or community or any other ground whatsoever, disharmony or feelings of enmity, hatred or ill-will between different religious, racial, language or regional groups or castes or communities, or

(b) commits any act which is prejudicial to the maintenance of harmony between different religious, racial, language or regional groups or castes or communities, and which disturbs or is likely to disturb the public tranquillity, [or]

(c) organizes any exercise, movement, drill or other similar activity intending that the participants in such activity shall use or be trained to use criminal force or violence or knowing it to be likely that the participants in such activity will use or be trained to use criminal force or violence, or participates in such activity intending to use or be trained to use criminal force or violence or knowing it to be likely that the participants in such activity will use or be trained to use criminal force or violence, against any religious, racial, language or regional group or caste or community and such activity, for any reason whatsoever causes or is likely to cause fear or alarm or a feeling of insecurity amongst members of such religious, racial, language or regional group or caste or community, be punished with imprisonment which may extend to three years, or with fine, or with both. Offence committed in place of worship, etc.—(2) Whoever commits an offence specified in sub-section (1) in any place of worship or in any assembly engaged in the performance of religious worship or religious ceremonies, shall be punished with imprisonment which may extend to five years and shall also be liable to fine.

153-B. Imputations, assertions prejudicial to national integration.— (1) Whoever, by words either spoken or written or by signs or by visible representations or otherwise,—

(a) makes or publishes any imputation that any class of persons cannot, by reason of their being members of any religious, racial, language or regional group or caste or community, bear true faith and allegiance to the Constitution of India as by law established or uphold the sovereignty and integrity of India, or

(b) asserts, consents, advises, propagates or publishes that any class of persons shall, by reason of their being members of any religious, racial, language or regional group or caste or community, be denied or deprived of their rights as citizens of India, or

(c) makes or publishes any assertion, counsel, plea or appeal concerning the obligation of any class of persons, by reason of their being members of any religious, racial, language or regional group or caste or community, and such assertion, counsel, plea or appeal causes or is likely to cause disharmony or feelings of enmity or hatred or ill-will between such members and other persons, shall be punished with imprisonment which may extend to three years, or with fine, or with both.

(2) Whoever commits an offence specified in sub-section (1), in any place of worship or in any assembly engaged in the performance of religious worship or religious ceremonies, shall be punished with imprisonment which may extend to five years and shall also be liable to fine.

- 31.4 Section 2(o) of the 1967 Act defines ‘*unlawful activity*’ in relation to an individual or an association as any action taken by such individual or association whether by words, either spoken or written or by signs or by visible representation or otherwise by any act which intends or supports any claim to bring about on any ground whatsoever the cession or secession of any part of territory of India from the Union. It also brings within its fold any act, which disclaims, questions, disrupts and is intended to disrupt the sovereignty and integrity of India, or an act which causes or intended to cause disaffection against India.
32. Having regard to the scope of the aforesaid provisions of both the 1967 Act and the IPC, one would have to look at the material, which has been placed before this Tribunal. Undoubtedly, while assessing the weight of the evidence, this Tribunal is not to examine the material placed before it strictly on the touch stone of the rules of evidence, which are provided under the Evidence Act. The material placed before the Tribunal need not be confined to only the legal evidence in the strict sense. The Tribunal is, thus, required to assess the credibility of the material placed before it, in the light of the said principles. In case the action of the State in banning an organization is contested, then recourse is required to be taken to principles of natural justice, which have to be tailored to suit the circumstances of the case, keeping the interest of the affected associations and its members in mind, without jeopardizing public interest. [See *Jamat-E-Islami Hind vs Union of India (1995) 1 SCC 428*].
33. The material produced before the Tribunal is in the form of testimonies of witnesses produced both by the State Government of Manipur and the Central Government. The testimonies of nine (9) witnesses cited before the Tribunal has been set out in detail in the foregoing paragraphs. A bare perusal of the testimonies of PW-1 to PW-9 would reveal that the members of the Extremists Organizations have indulged in unlawful activities, which *inter alia* border on resorting to extortion of money from members of general public and government servants, issuing demand letters in that behalf, possession of arms and ammunitions, involvement of members in planting and explosion of IEDs and hand grenades, as also, involvement of members of the aforementioned Extremist Organizations in recruitment of child soldiers. (See testimony of PW-1 and PW-3). The members of Extremist Organizations, which include women as well, have been found in possession of lethal arms and ammunitions, such as live hand grenades, PEK explosives etc. (See testimony of PW-1).
34. at spreading disaffection amongst people and exhorting at large to resort to violence, has clearly come through in the testimony of PW-2. The statement of accused Okram Arvind @ Herachanda @ Yajphaba, in FIR No. 65(2)/2012 (Ex. PW-2B/2), reveals that he was a Publicity Secretary of KPC – Tabungba, in which role, he was actively involved in inciting people to wage war against India. The said accused, through the medium of the internet, had, from time to time, sent communications to both the print and electronic media, intended to over awe civilians and politicians. In one such email dated 20.11.2010, the accused, according to PW-2, propagated the theory that “*freedom comes from the barrel of the gun*”.
- 34.1 The testimonies of other witnesses, i.e., PW-1 and 5 to 7 have also established that the said Extremist Organizations are indulging in unlawful activities. Each and every incident cited by the witnesses (which, in order to avoid repetition are not detailed out here once again), only establish this aspect.
- 34.2 PW-8 in his affidavit has adverted to the fact that members of the said Extremist Organizations regularly indulge in, attacking and ambushing security forces, carrying out bomb attacks, which intended to cause damage to life and property of security forces, the government and the general public, resort of extortion by levying illegal tax, which is collected from employees of both government and private sector enterprises or from developmental or commercial activities of individuals and commercial entities.
- 34.3 PW-8 has also adverted to the fact that some of the constituents of the Extremist Organizations have located their headquarters outside India, one such example given is that of UNLF, which has its headquarters located at Tanan in the jungles of Myanmar. UNLF has, according to PW-8, links with other underground outfits, operating in different north-eastern State of India. The nexus formed is with organizations, such as, NSCN(K), ULFA of Assam and TPDF of Tripura. PW-8 in his testimony has also emphasized the fact that various unlawful organizations, such as, KCP, KYKL, PREPAK, PREPAK (PRO), RPF, PLA and UNLF have formed a conglomerate, which goes by the name of CorCom. It has been adverted by PW-8 that CorCom has made attempts to unify all valley-based Meitei Extremist Organizations, operating in the State, so that security cover and logistical support can be provided to small hill-based organizations and other like-minded outfits.
35. PW-9 in his testimony has given a brief resume of the aims and objects and the unlawful activities carried out by the aforementioned Extremist Organizations. As per the testimony of PW-9, in 2013 alone, 225 unlawful incidents have occurred; out of which 154 are attributed to Meitei Underground Organizations. In these incidents, 24 civilians and 5 personnel of the security forces were killed.
- 35.1 PW-9 has also provided date-wise details of unlawful activities carried out by the aforementioned Extremist Organizations between the period 02.01.2013 and 25.07.2013. The details are given constituent-wise as well. PW-9 has also provided details of crime committed by CorCom. Specific reference has been given to cases registered against CorCom and its constituents. As per the testimony of PW-9, a total of 846 cases have been registered against the aforementioned Extremist Organizations.
36. Apart from the above, the Central Government has also produced intelligence reports and inputs in sealed cover, which were examined by the Tribunal, on 22.04.2014. The Central Government has claimed privilege against disclosure of this material to either the Extremist Organizations or its members or to any other third

party. After examination of the material produced before the Tribunal, the same was returned. The Central Government, in terms of proviso to sub-section (2) of Section 3 of the 1967 Act is within its right not to disclose any fact which it considers to be against public interest. A similar provision is incorporated in clause (a) of sub-rule (2) of Rule 3 and in the proviso to Rule 5 of 1968 Rules.

- 36.1 As a matter of fact, the Tribunal considered this aspect of the matter on 22.04.2014, and upon examination, returned the documents in issue, to the custodian of the Central Government as, it came to the conclusion that these documents ought not to form part of its record in view of the privilege claimed by the Central Government through PW-9, and having regard, to the negative impact that the disclosure would have on public interest.
- 36.2 However, the examination of the intelligence reports only established the fact that the Extremist Organizations, through their members, which included their political and armed wings, continue to espouse the policy of secession of Manipur from the Union of India, engage in activities which were prejudicial to the sovereignty and integrity of India, continue to use violence and terror to further their object and maintain training camps, sanctuaries and safe havens in neighbouring countries, such as, Myanmar and Bangladesh.
37. The fact that the testimonies of the witnesses produced by the Central Government and State Government have not been rebutted, would only fortify my view that there is sufficient cause for sustaining the declaration made by the Central Government in the Notification dated 13.11.2013 that the Extremist Organizations, referred to therein, should be held to be unlawful associations; no reason having emerged during the course of proceedings, for the Tribunal to disbelieve the testimony of witnesses produced before it.

CONCLUSION

38. Taking into account the entirety of the material put before me, I am of the opinion that the declaration made by the Central Government in Gazette Notification No. S.O.3440(E) dated 13.11.2013 should be confirmed. It is so held.
39. The reference is, accordingly, answered in the aforesaid terms.

JUSTICE RAJIV SHAKDHER,
Unlawful Activities (Prevention) Tribunal

12th May, 2014

[No. 11011/44/2013-NE-V]

SHAMBHU SINGH, Jt. Secy.